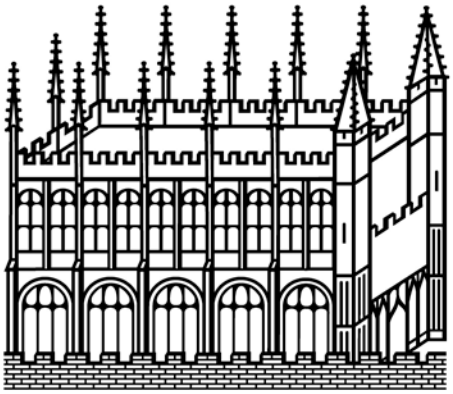

Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13. C. 78 Hindi gen. 35a

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Newul Kishore.

Vyavahāra patra-saṅgraha.

Kaithee Beubar Patter Sangrah

अनमोल पुस्तक

व्यौहार पत्र संग्रह

जिसमें अच्छी २ बातें और दफ्तरों की मसवादों की

कारवाइयां हैं

श्रीमान् बुद्धिसागर परोपकारी दीनदुःखहारी हुप्पर साहब

साहिब इन्सपेक्टर बहादुर मदारिस सरकिल पश्चिमी

अवध देश की बनाई हुई मजमूआ कागजात कारवाई का

तर्जुमा श्री पूर्दीन हितकारी विद्याभूषन कविया

सिंधु बुद्धि राशि शुभगुन समूह नाव

जान सी नेसफील्ड साहिब

बहादुर इन्सपेक्टर

मदारिस सरकिल

अवध के हुकुम

से

श्री ठाकुर चन्दीसिंघ ने हिंदी अच्छरों में किया॥

मुकाम लखनऊ

मुनशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी॥

महीना अगस्त सन् १८८२ ईसवी॥

भूमिका

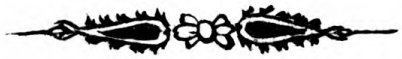

सुजन समाज सकल गुन खानी ।
करौं प्रनाम सप्रेम सुबानी ।१।

इस पुस्तक के पढ़नेवालों को विदित होगा कि देश के रात दिन की बोल चाल में इस किताब का उलथा करना कैसा कठिन है यह पुस्तक यथा नामा तथा गुना कचेहरी के कागजात का संग्रह है इन कागजात में फ़ारसी और अरबी के ऐसे ऐसे व्यवहार संबंधी शब्द हैं जैसे मुद्दआ अलेह-मुद्दई-इक़रारनामा-बैनामा-समन इत्यादि कि उनका तरजुमा देश की हिंदी भाषा में हो नहीं सकता क्योंकि उसमें ऐसे शब्द ही नहीं हैं यदि संस्कृत के शब्दों के मदद से उनका उलथा किया जावे तो उलथा करने का परिश्रम ही व्यर्थ होगा काहे कि ऐसे व्यवहारिक संसकृत शब्दों का प्रचार न होने से उनको कोई भी नहीं समझेगा भला फ़ारसी और अरबी के व्यवहार संबंधी शब्द तो सैकड़ों बरस से कचेहरी आदि में प्रचलित होने और बोल चाल में आने के कारन वह लोग समझ भी सकते हैं और वे लोग तो अच्छी तरह से समझ सकते हैं जो कचेहरी वा

कचेहरी के अमलों से विशेश मेलजोल रखा करते हैं इस हेतु से इस पुस्तक के उलथा करनेवाले ने बीवहार विशयक शब्दों को ज्यों का त्यों रहने दिया केवल उन को कैथी अक्षरों में लिख दिया है और जहां तहां अपने मति के अनुसार बोलचाल भी ठीक वैसेही रहने दिया है जैसा कचेहरी आदि में सब लोग अवश्य बोलते हैं ऐसा करने से बड़ा मतलब तो यह था कि इस देश के वे सब लोग भी जिनको बहुधा कचेहरी से सरोकार नहीं रहता इस पुस्तक के द्वारा कचेहरी के बोलचाल में जानकार होजाएं और वहां के व्यौहार संबंधीय शब्दों को तथा उनके अर्थों को भली भांति समझ लें जिस में उनको अवश्य करता के समय कचेहरी के जनों और राजाधिकारी पुरुशों से बातचीत करने अपना मनोरथ उनके सामने वर्णन करने–अथवा उनकी बातों और आज्ञाओं की आशय को अच्छी तरह समझ लेने में कुछ कठिनता न पड़े वा इस प्रयोजन के निमित्त किसी दूसरे आदमी की सहायता न ढूंढना पड़े यदि इस पुस्तक के पढ़ने और गुनने वालों को ऊपर लिखी बातों में अच्छी तरह अभ्यास होजाए और आशा है कि अवश्य होजाएगा तो उस के उलथा करनेवाले का मतलब सिद्ध होजाएगा और वह अपने उस परिश्रम और समय को जो इस ग्रंथ के लिखने में लगाया है वृथा न समझेगा एवमस्तु–

यह बात सब कोई अच्छी तरह जानता है कि जिस भाषा का इस पुस्तक में वर्णन है उस भाषा की कोई पुस्तक देशी बोल चाल में अब तक नहीं लिखी गई है इस कारन इस के उलथा करने में कितनी और किस २ प्रकार की कठिनता उलथा करनेवाले को पड़ी है बुद्धिमान और विद्यावान पुरुष आप समझ सक्ते हैं लिखने की कुछ भी आवश्यकता नहीं—

यदि इस पुस्तक का उलथा करनेवाला उसकी अल्प बुद्धि तथा अल्प विद्या के कारन ऐसे बड़े पांडित्य के कार्य्य को सिद्ध करने के योग्य कदापि न था तथापि श्रीयुत विद्यानुरागी विद्वज्जन पूजनीय श्री-पू-राय दुर्गा प्रसाद साहब बहादुर अवधे देशीय पाठशालाओं के इन्स्पेक्टर की आज्ञा पालन करना निज धर्म जान कर उन के इस आज्ञा को भी माथे धर और अपने बल बिना और विद्या भर इस कठिन कार्य्य को पूरा किया—

इस पुस्तक के उलथा करनेवाले को श्री मुन्शी अंबिका प्रसाद साहब डिप्युटी इन्स्पेक्टर मदारिस ज़िल्ले लखनऊ का अन्तःकरन से धन्यवाद करना उचित है कि इन महाशय ने जहां तक उनसे हो सका इस पुस्तक के उलथा करने में मदद दिया और बड़े श्रम से दो बार इस का पुरूफ शीट आदि से अंत तक शोधा—

अब विद्वान और साधु प्रकृति महाशयों से विनय और आशा है कि आपनी सौभाविकक्षमा और साधुता से इस पुस्तक के उल्था करनेवाले की रंकमति और गाढ मनोरथ का विचार करके इस ग्रंथ के अशुद्धता को सुधार लेवेंगे इसके दोषों को क्षमा करेंगे और इसके संपूरन छिद्रों को दुरावेंगे काहे कि श्री तुलसीदास जी ने रामायन में कहा है-

साधु चरित शुभ सरिस कपासू।
निरस विशद गुनमय फल जासू।
जो सहि दुःख पर छिद्र दुरावा।
वंदनीय जेहि जग जस पावा॥

द: ठाकुर चंदी सिंघ

अनमोल पुस्तक

विज्ञापत्र संग्रह

जिसमें अच्छी अच्छी बातें और हुक्मों की सब तरह की
कारवाई है

श्रीमान बुद्धिसागर परोपकारी दीनदयालु गरीबपरवर
साहिब इन्सपेक्टर बहादुर मदारिस सरकिल पश्चिमोत्तर
अवध देश की बनाई हुई मजमूअः कागजात कारवाई का
तरजुमा श्री प्रजादीन हितकारी विद्याभूषण कविता
सिंधु बुद्धि राशि शुभ गुन समूह जनाब
जान सी नेसफ़ील्ड साहिब
बहादुर इन्सपेक्टर
मदारिस सरकिल
अवध के हुकुम
से
श्री ठाकुर चन्दी सिंह ने हिंदी अक्षरों में किया॥

मुक़ाम लखनऊ

मुनशी नवलकिशोर के छापे ख़ाने में छपी॥
महीना जनवरी सन् १८८२ ईसवी॥

चिट्ठी पत्र संग्रह

चिट्ठियां छोटों की तरफ़ से बड़ों को

बापको

१— सर्वोपमा योग्य श्री ६ पिताजी को प्रनाम पहुंचे आगे यहां सब ख़ैर सल्लाह है आप की अच्छी मनाई हमेशः भगवान से चाहता हूं भाई गुलाम महम्मदसाहिब का ख़त सीतापुर से आया उस में लिखा है कि मैंने मामासाहिब के रोज़गार की सूरत आपही की नौकरी पर ठहराई है और साहिब मुहसे कई बार फ़रमा चुके हैं कि जल्द अपने मामासाहिब को बुलालो जो जनाब मामासाहिब का पक्का इरादा हो तो जल्द मुझको लिखिये कि मैं चार पांच दिन का वादा करलूं और नहीं तो कोई दूसरा आदमी करलिया जावेगा और यक़ीन है कि नौ रुपिया महीना मिलेगा पहले जो आदमी कि नौकर थे उनको १२) रुपिये मिलते थे अब तीन रुपिये की कमी करदी गई है मगर सात आठ महीने पीछे फिर पूरी तनख़्वाह करदी जावे-

और भाई गुलाम महम्मदसाहिब कप्तान साहेब के पास २०) रुपिये महीना खानसामा की जगह पर नौकर हैं उन्हों ने अपने भाई और मा को भी अपने पास बुला लिया है अभी तक उनके ख़त का जवाब मैं ने रवानः नहीं किया है

जैसा आप फ़रमावें वैसा उनको लिखा जावे लेकिन जो होसके तो जनाब भी उनके पास ख़त रवाना करें पता उनका यह है शहर सीतापुर मुक़ाम छावनी कप्तान साहिब के बंगला पर पहुंचकर ग़ुलाम महम्मद को मिले आगे बंदगी लिखा रमज़ान अली ने-लखनऊ से-तारीख़ २७ मुहर्रम सन् १२८१ हिजरी-

बापको

१—श्री ६ पिता जीव को सलाम आगे यहां आप की दुआ से ख़ैरियत है और आप के शुभ समाचार चाहता हूं—चिट्ठी आप की २७ तारीख़ ज़िलहिज्जा को आई बड़ी खुशी हुई खुदा आप को सदा बनाये रक्खे जो आपने लिखा है कि हैदर अली खां साहिब के मारफ़त कुछ महाजन से लेकर बहुत जल्द भेजदो सो हैदर अली खां साहिब तो कमिश्नर साहिब के साथ दौरे पर गये हैं मैंने यह समझकर कि आप का हरज न होय रुपिया बनारसीलाल साहिब के मारफ़त जो बड़े ईमानदार हैं दो रुपिया सैकड़ा सूद माहवारी पर लेकर आप के पास रवाना किये हैं रसीद जल्द भेज दीजिये और मिरज़ा अबदुल अज़ीज़ की शादी के बारे में जो आपने पूछा है उस का यह हाल है कि १७ तारीख़ रमज़ानुल मुबारक सन् १२८६ हिजरी को शादी मिरज़ा अबदुल अज़ीज़ साहिब की होगई हम लोगों को भी उन्हों ने बुलाया था सो हम सब लोग जलसा में शामिल थे और आपके हुक्म के मुवाफ़िक ५) रुपिये

इस काम में ख़र्च किये गये इत्तिला उसकी आप को
किया और आराम अली साहिब जिनकी मुद्दत से
ख़बर नहीं मिली थी कल आये और बहुत कुछ रुपिया
पैदा कर लाये हैं सो ३००) रुपिया तकआजा क़रज़ख़्वाहों
को दिये और मकान को जो कि गिरो कर गये थे छुड़ा
लिया आप की मुलाक़ात किया चाहते हैं और आप के
पास ख़त लिखने का भी वादा किया है ज़ियादा बंदगी के
सिवाय और क्या अर्ज़ करूं— लिखा आराम जान ने
लखनऊ से ३ तारीख़ मुहर्रमुलहराम सन् १८९०
हिजरी—

किसी बड़े को

३— श्री युत जनाब साहिब मेहरबान क़दरदान को सलाम
आगे यहां सब ख़ुदा की मेहरबानी से ख़ैरियत है और
आप की क्षेम कुशल चाहता रहता हूं लगभग दो महीना के
हुये आप की शुभ कुशल मालूम नहीं हुई सो बड़ी फ़िकर
है सो आप देखत चिट्ठी के तकलीफ़ करके सब हवाल
साफ़ साफ़ लिखिये कि फ़िकर दूर हो और हाल यहां
का इस तरह पर है कि बरखा बहुत है और आठ रोज़ से
सूरज नहीं दिखाई दिया है और सैकड़ों मकानात गिर
पड़े कोई पक्का और कच्चा मकान ऐसा नहीं है कि
जो टपकने से बाक़ी रहा हो बरखा क्या है मानो पर
ले है— हमारे पास पड़ोस के भी सब मकानात गिर पड़े
सो गिरधर सिंघ पटवारी और नन्हेमल सुनार और

દેવી સહાય મહાજન ઔર મુનશી રાજબલ્લભી સાહેબ
માસટર વગૈરઃ હમ સબ અપના મકાન છોડકર મૈદાનોં
મેં ખીમોં કે નીચે રહતે હૈં જિસપર ભી તહ દિલ્લી નહીં
હૈ નદી ઐસી બાઢ પર હૈ કિ હુસેનાબાદ મેં નાવ ચલતી હૈ
મેરે મકાન કી ભી સબ તરફ કી દીવારેં ગિર પડી હૈં છતેં
લડકોં કી વજહ સે કાયમ હૈં દિન કો પરદા કરતે કરતે
ઔર રાત કો પહરા દેતે દેતે જાન જાતી હૈ ન દિન કો ચૈન
હૈ ન રાત કો આરામ હૈ આપકા ગુલામ બડે સોચ મેં હૈ
ઇસ આફત મેં દીવારેં તો ઉઠ નહીં સકતી હૈં લેકિન ટટ્ટિયાં
વગૈરઃ ભી તો હવા કે બડે જોર કે સબબ સે રહ નહીં સકતી
હૈં ઇસ કી ખબર આપ કો દી ગઈ બાકી સબ ખૈરિયત હૈ
જ્યાદહ બંદગી - ઔર ક્યા અરજ કરૂં - લિખા મુહમ્મદ
અમીન ને લખનઊ સે તારીખ ૨૫ અગસ્ત સન્૧૮૪૦
ઈસવી

માલિક કો

૪— શ્રી ૫ કિરપા સાગર સકલ ગુન નાગર મુનશી
કરમહુસેન સાહિબ કો સલામ બંદગી મેં અરજી તરહ હૂં
ઔર આપકી કુશલ ખુદા સે હરદમ ચાહતા હૂં મુદ્દત
સે આપ કી શુભ કુશલ નહીં માલૂમ હુઈ ઔર ન
કિસી દોસ્ત વગૈરહ કી જબાની ક્ષેમ કુશલ મિલી
ઇસ વજહ સે મુઝ કો બડી તરદ્દુદ ઔર ફિકર હૈ સો
આપ જલદ અપના હાલ લિખેં ઔર યહાં કા હાલ
યહ હૈ કિ ઇસી મહીના કી ૨૫ તારીખ કો આપકે લડકે

शेख़ वजीहान हुसेन दुर्नदोर ख़ आगाना ज़ोर:से होतेहुवे
आये और आते ही चाहा कि आपके मकानों पर क़बज़ा
करके थोड़े दिन के पीछे उन्हें योगोंया वेच करके फिर किसी
तरफ़ चले जावें सो मैं ने मना किया और किरायादारों
से भी कह दिया कि उनको कभी एक पैसा न देवें और जो देवेंगे
तो मुजरा न दिया जावेगा यह सुनकर शेख़ साहिब ने अदालत
फ़ौजदारी में नालिश इस तरह पर की कि मैंने बाप के
मकानों पर क़बज़ा कर लिया है और मुझको हिस्सा
नहीं देते और फ़ौजदारी करने को तैयार होते हैं सो आज
मेरे नाम समसन आया है और २७ अगस्त को पेशी है
सो मैं ने यह काम आपके हुकम के मुवाफ़िक़ किया है
आपको भी शामिल होना वाजिब है इस वासते मुझे
भरोसा है कि आप २६ अगस्त तक ज़रूर आवेंगे
और जो आना न हो सके तो मुक़द्दमा में मदद के वासते
कुछ लिखकर भेज दीजिये और जो मुनासिब हो तो
मुख्तार नामा रजिसटरी करके रवाना फ़रमाइये कि
वक़्त पर काम आवे और बाक़ी सब तरह पर ख़ैरियत है
लिखा अबदुस्सत्तार ने ३१ जुलाई सन् १८९९ इसवी

किसी बड़े को

४— शनी ख़ सलाम के पीछे मतलब यह है कि मैं और
मेरे घर के लोग सब बहुत अच्छी तरह हैं और आप
की तनदुरुसती और ख़ैरियत भगवान से रात दिन चाहता
हूं चिट्ठी आपकी आई बड़ी ख़ुशी हुई भगवान आपको

हम लोगों के सिवाय हमेशः सलामत रक्खे जो कि जनाब ने लिख्खा है कि छः बरस का अरसा हुआ और दो दफ़ा बुलाये भी गये तिस पर भी तुम नहीं आये इस का क्या बाइस है जनाब मेरे मुह को बड़ी अभिलाष है कि आपसे मुलाक़ात करूं लेकिन क्या करूं मांदगी से इतनी छुट्टी नहीं मिली कि आपसे मुलाक़ात करूं जो ख़ुदावन्द चाहता है और कुछ फ़ुरसत मिली तो ज़रूर हाज़िर हूंगा॥ चाहिये कि आप अपने कुल हाल से जल्द मुझ को इत्तिला कीजिये कि फ़िकर दूर हो और इन दिनों बीमारी के बाइस से लगभग दो तीन सौ रुपिये के क़र्ज़दार भी हो गया हूं जो आप कुछ सहारा करेंगे तो मैं इस बला से छुट्टी पाऊंगा॥ और नहीं तो और ज़ियादः मांदा हो जाऊंगा॥ आगे सलाम लिख्खा सैयद अली ने -

है— श्री यू जनाब भाई करीम बख़्श साहब को सलाम आगे मीर ज़ामिन अली साहब तहसीलदार नागपूर के लखनऊ में आये हैं यक़ीन है कि यहां वाली सराय में ठहरे होंगे सो आप उनको सरायगढ़ की मैंत आशकार के घर में ले आइयेगा॥ बहुत ख़ातिरदारी और बहुत अच्छी तरह से उनकी ज़ियाफ़त कीजियेगा॥ जो एक वक़्त में दस रुपिये तक ख़र्च हो जावें तो भी कुछ मुज़ायक़ा नहीं है जो कुछ ख़र्च होगा॥ और आप लिखेंगे मैं भेज दूंगा॥ और अगर तहसीलदार साहब वहां रहने से इनकार फ़रमावें तो नख़ास वाले कमरे में ठहरा दीजियेगा॥ और

अगर ग़रज़ ख़ाली न हो तो धीसन आदिना वाले को मकान ज़रूर दिलवा दीजियेगा उनको किसी तरह की तकलीफ़ न हो नहीं तो बड़ी शिकायत होगी—
और चिरंजीव मुहम्मद हुसेन को पढ़ने लिखने में बहुत कोशिश कीजियेगा ऐसा न हो कि खेल कूद में लगा रहे और पुरानी मिहनत और मशक़्क़त कम करदे दारोगा हैदर अली खां साहिब और मुनशी इमदाद हुसेन साहिब को सलाम कह दीजियेगा और मुहम्मद हुसेन साहिब और अमीर अली साहिब की खैरसलाह ज़रूर लिखियेगा लिखा मुहम्मद अमीन— ४ शाबान सन् १२७७ हिजरी

किसी बड़े को

७— शरीफ़ सलाम के पीछे हाल यह है कि पिताजीव को काम बहुत रहता है इस वजह से उनकी चिट्ठी मेरे पास बहुत कम आती है इससे उनका पता भी मुझे ठीक ठीक मालूम नहीं है कि किस महल्ला में टिके हैं और इसी वजह से बहुत कम ख़त उनके पास भेजता हूं— लेकिन बाज़ काम ऐसे आ जाते हैं कि लिखना ज़रूर ही पड़ता है वहां सिवाय आपके और कोई दूसरा मेहरबान मेरा मौजूद नहीं है सो मैं आपके पास इस चिट्ठी के अन्दर पिताजीव की चिट्ठी बंद करके भेजता हूं कि इस चिट्ठी के देखते ही आप बंद चिट्ठी पिताजीव के पास भेज दीजियेगा कि बड़ी ज़रूरी है और इस मुक़ाम पर टिकट महसूल बहुत कम और बड़ी दिक़्क़त

से मिलते हैं बल्कि मिलते ही नहीं आजाती से चिट्ठी भी बेरंग हो रवाना की गई माफ़ कीजिये और जो शायद पिता जी मकान पर न हों तो भाई साहिब ही के पास भिजवा दीजिये। क्योंकि मतलब ख़त का एक है और वो सब ख़ैरियत है फ़ख़ुदाबख़्श २६ मई सन् १८०७ ईसवी– मुक़ाम मौज़ा वाला मऊ तहसील संडीला ज़िला हरदोई

भाई को

८— भाई साहिब भाई सैयद अहमद हुसेन साहिब डिप्टी कलेक्टर बहादुर को —— सलाम के पीछे अर्ज़ यह है अल्लाह का शुक्र है कि अब तक तन्दुरुस्ती शामिल हाल है और आपकी ख़ैरियत हरवक़्त चाहिये दो महीना होगये कि आपका कुछ हाल नहीं मिला बड़ी फ़िक्र है सिवाय इसके सुनागया था कि ख़ुदा न करे लड़की की तबीयत भी मांदी है सो इसके पीछे मैंने ख़त भी भेजा परन्तु कुछ हाल नहीं मिला सो आप इस ख़त के देखते ही जल्द सब घर के हाल से ख़ासकर लड़की के हाल से इत्तिला करें और यहां का हाल वैसा ही है सरफ़राज़ अली साहिब जो थोड़े दिन से कानपुर में रहते हैं आज कल वास्ते गवाही मुक़द्दमा अली हुसेन के आये हैं उन से ज़ामिन हुसेन की शादी में शामिल होने के बारे में कहा गया था वह इक़रार कभी नहीं करते और कहते हैं कि जो मैं आठ दस रोज़ के वास्ते घर के लोगों समेत

यहां आऊंगा तो सिवाय बीस बाईस रुपिया खर्च राह के साठ सत्तर रुपिया का नुक़सान होगा सो अगर मैं शरीक न हुआ तो क्या नुकसान होगा सो आप अच्छी तरह पूछ लीजिये कि शिकायत का फिर मौक़ा बाक़ी न रहे और यहां सब छोटे बड़े लोग और महल्ला के बहुत अच्छी तरह से हैं आगे सलाम के सिवा और क्या लिखूं लिख्खा मासूम अली ने फ़रुखाबाद से २९ शाबान सन् १२७६ हिजरी

किसी दोस्त को जो दर्जे में बड़ा हो

६— शफ़ीक़ जनाब मुन्शी साहिब सलाम के पीछे अर्ज़ यह है मेरा हाल लायक़ शुकर के है और आप की दुआ का उम्मेदवार हूं आठ दस दिन हुए मैं नौकरी की तलाश करता हुआ यहां पहुंचा लेकिन अब तक कोई शकल रोज़गार की मालूम नहीं हुई दुआ फ़रमाइये कि खुदावंद करीम मतलब पूरा करे बड़ी फ़िकर रहती है लेकिन क्या फ़ायदा जब वक़्त आवेगा बे मेहनत मिल जायगा मैं ने कई दफ़ा आपसे इरादा चिट्ठी पत्री का किया मगर आज तक फ़ुरसत न मिलने और परेशानी की वजह से इत्तिफ़ाक़ न हुआ था सो मैं पहिले ही अर्ज़ कर चुका हूं और उम्मेद करता हूं कि आप मेहरबानी करके दो बातें अपनी ख़ैरियत की लिखकर भेज दिया करिये मुझ को याद पड़ता है कि मैं ने चिट्ठी समेत हाशिम अली को वास्ते पढ़ने के आप के पास

भेजा था यक़ीन है कि आपके पास पहुंच गये होंगे और जवाब का इंतज़ार करता हूं कि कोई हाल ताज़ा सिवाय फ़िकर और बेचैनी के नहीं है अगर आप मेरे पास ख़त भेजियेगा तो इस पता से भेजियेगा अगर अल्लाह चाहेगा तो मुझे मिल जावेगा शाहाबाद नज़रबाग़ व लेन सवारों के पास शेख़ अशरफ़ अली साहिब के मकान पर पहुंच कर पास फ़लां के पहुंचे लेकिन अगर दूसरे दो चार दिन में लिखियेगा तो ख़ैर और नहीं तो फिर यह निशान काफ़ी न होगा क्योंकि दो चार दिन में कुछ ठीक नहीं है कि घबराहट के बाइस से हमीरपुर चला जाऊं जो वहां न गया तो इलाहाबाद ज़रूर जाऊंगा जो हाशिम अली साहिब पढ़ने को आते हों तो उनसे सलाम के पीछे कह दीजियेगा कि मैं एक ख़त तुम्हारे नाम रवाना कर चुका हूं तुम को मिल गया होगा और नहीं तो ख़ैर—

मीर साहिब मौलवी मीर मुहम्मद अली साहिब की ख़िदमत में सलाम और और साहिबों को यथा उचित सलाम—

आपका ग़ुलाम मुहम्मद क़ाज़िम २७ जून सन् १८७५ ईसवी

हाजी साहिब को

१०— जनाब हाजी साहिब को बंदगी—

हाल यह है कि यहां ख़ुदा के फ़ज़ल से ख़ैर व आफ़ियत और सलामती है आगे आप की ख़ैर व तन्दुरुस्ती

हरदम चाहता हूं जिस तौर से कि आप गये हैं कुछ
हाल आपका मालूम नहीं हुआ बड़ी फ़िकर है सो
आप बहुत जलद अपना हाल लिख भेजिये यहां का
यह हाल है कि शेख़ साहिब कलकत्ता से आये हैं और
वह बादशाह से एक ही महीने की छुट्टी लेकर आये हैं
और उनका इरादा यह है कि इसी महीना की १९ या
२० तारीख़ तक शादी लड़की से फ़रागत करके २७
या २८ तारीख़ तक कलकत्ता को चले जावें और
इसी वासते सामां भेजने में बहुत जलदी करते हैं और
आपके बुलाने के बारे में उनकी बड़ी ताकीद है सो ख़त
देखते ही आप व चचासाहिब और भाई रमज़ानखांसाहिब
समेत आइये और नहीं तो ५ तारीख़ को मैं और भाई मुहम्मद-
बख़शसाहिब ज़रूर आपके पास रवानः होवेंगे और मुफ़त
की ख़राबी होगी इस बारे में बहुत जलदी कीजियेगा बग़ैर
आपके यहां आये कोई काम दुरुसत न होगा सो आपको
इत्तिला के वासते लिखा गया और बाद में भाई गुलाम
मुहम्मदसाहिब से भी मुलाक़ात करके संदेसा कह दीजियेगा
और जहां तक हो सके उनको साथ लेते आइयेगा और
नहीं तो उनके लड़के को ज़रूर साथ लेते आइयेगा और
हम सब का दुआ सलाम उनसे कह दीजियेगा और ग़रीब
उल्लाह साहिब से अगर फेर बाद में मुलाक़ात हो तो कह
दीजियेगा कि तुम्हारे बाप ने बमबई से ख़त भेजा है और तुम
सब को दुआ सलाम कहा है और वह भी लड़के वालों

समेत अच्छी तरह से हैं आगे माल तक अल्लाह चाहता है
तो हम जल्दी लौट आवेंगे और मेरा हाल बदस्तूर है कुछ लिखने
की ज़रूरत नहीं है ज़ियादा बंदगी-
लिखा खुदा बख़्श ने लखनऊ से पहिली रजब सन्
१२७९ हिजरी

हाफ़िज़ साहिब को

११- जनाब हाफ़िज़ साहिब को बंदगी-मुद्दआ
यह है कि आज म आरो आई और आपका किया
बरताव ही मुबारिक हुक्म आपके लड़की की डोली
की सवारी आठ आना किराया देनी छोड़ कहारों
के साथ रुख़सत किया और मोहन वा गाज़ान को कई रोज़ से
जूड़ी ताप आती है और नहीं तो उसको भी सवारी के साथ
कर देता ज़नानी सवारी के हाल तन्दुरुस्ती मुहम्मद शफ़ी
की मां का भी मालूम हुआ दिल जमई हुई अलहम्दुलिल्लाह उनको
और आपको तन्दुरुस्त और ख़ुश रक्खे गुलामों को अपना
ताबेदार और हाज़िर व ग़ैर हाज़िर यकसां जानते रहिये
और भरोसा यह है कि हमेशः हाल ख़ैरियत अपना और
सब छोटों व बड़ों का मेहरबानी करके चिट्ठियों में
लिखते रहिये और हाल अपना क्या बयान करूं अब
तक शुक्र है अल्लाह ताला की मरज़ी से कुछ चारा नहीं
है लिखा अमीनुद्दीन ने फ़ैज़ाबाद से २९ फ़रवरी सन्
१८७२ ईसवी-

उस्ताद को

२२ — शारी दे सर्वोपरि विराजमान सलाम क़बूल हो-
ख़त आप का डाक में आया बड़ी ख़ुशी हुई अल्लाहताला
ऐसा ही करे और आप का साया हमेशः हम पर रखे आप
के देखने को मेरा जी बहुत चाहता है देखिये कबतक मुलाक़ात
हो सो तबतक चिट्ठियां भेजते रहिये इसलिये कि चिट्ठी
आधा मिलन है ऐसी बात बार बार लिखना और कहना
हिमाक़त है और यह अंदेशा है कि ख़ुदा न करे कि ऐसा हो
कि दुनियादारी और बनावट का शुबहा न होजाय और
नहीं तो मुझे आप की ज़ात से बड़ी मुहब्बत है और हर
तरह से मेरा साहे लड़कपन से आज तक जिन्दगानी की
उमर है जिसक़दर कि मुहब्बत और इनायत आप की
मुझ पर रही शुकरिया उसका अदा नहीं हो सकता मगर
अपनी बदबख़्ती तालअ से बड़ा अफ़सोस है जो मुझनालायक़
से किसी तरह की ख़िदमत का भी फ़र्ज़ अदा होता रहे तो
बड़ी क़िस्मत है जनाब नाना साहिब की तबियत का हाल
सुनकर बड़ी फ़िकर पैदा हुई अल्लाह उनको
अच्छा करे और मैं यहां बड़ी चैन व आराम से हूं
और चाचा मुनशी ख़लील अहमद साहिब बहुत मेहरबानी
बड़ों की तरह करते हैं ख़ुदा की क़सम जो हक़ीक़ी चचा
होता तो भी ऐसी ही मेहरबानियां उसमे देखने में आतीं
लेकिन इस मुक़ाम की आब हवा ऐसी कुछ नामुवाफ़िक़
है कि एक हफ़्ता भी तनदुरुसती से नहीं गुज़रता - सो

कुछ मुक़ाम अन्देशः का नहीं है ना मुसाफ़िरख़ाना पानी और हवा से मज़बूती है और बाक़ी सब तरह पर ख़ैरियत है—
ज़ियादा सलाम—

दोस्त को जो अपने से बड़ा दरजा रखता हो

१३— श्री ३ शुभोपमा योग्य बंदगी के पीछे अरज़ यह है कि ज़बानी मोहर हुसेन के दरियाफ़्त हुआ कि दुश्मनों को नसीब हो कि लड़की को जूड़ी आती है इसके सुनने से बड़ा संदेह हुआ लेकिन अज़ीज़न की रहने वाली गुलाबो पर नालिश करने की बाइस से आना मेरा और बेटा मोहर हुसेन का नहीं हुआ और न हो सकता है सो चिट्ठी आदमी को देकर ख़ैरियत लड़की की दरियाफ़्त करने के वास्ते रवाना किया है सो उसकी तबीयत के हाल से इत्तिला फ़रमाइये बड़ी मेहरबानी होगी ख़ुदा क़सम सम्मन अदालत के आने से लाचार हूं नहीं तो ज़रूर आता और सब लड़कों वालों को दुआ सलाम और बड़ों को बंदगी पहुंचे लिखा फ़ज़ल अली ने उनाम से तारीख़ १७ शाबान सन् १२८३ हिजरी

बाप को

१४— श्री ६ पिता जीव को बंदगी — अरज़ यह है कि मैं आप सब बड़ों की दया से अच्छी तरह से हूं और आप की तनदुरुस्ती रात दिन चाहता हूं और बहुत दिन हुए कि आप की तबीयत का हाल नहीं पाया सो बड़ा संदेह है इसलिये आप अपने हाल से बड़ी

जल्दी इत्तिला दीजिये और मैं यहां पर बहुत आराम से हूं और चाचा साहब की मेहरबानी मुझ पर बहुत है कि बयान नहीं कर सकता हूं ख़ुदा उन पर सदा अपना साया इसी तरह बनाये रक्खे जनाब मैंने जिन लोगों से उधार का रुपया लेना था उनसे कई दफ़ा मांगा मगर एक कौड़ी भी वसूल न हुई इस तरद्दुद के सिवाय एक नई बलाय अपने शिर यह लिया है कि एक मुक़द्दिमा अपने तअ़ल्लुक़ का लिया है देखिये क्या होता है जो जीत गये तो फ़ाइदा होगा नहीं तो सब मिहनत बरबाद जायगी आज कल हाल यहां का लिखने के क़ाबिल नहीं है हरजगह अदालत का ज़ोर शोर है ख़ुदा रहम करे जल्दी में इस वक़्त इतना ही लिखा ख़ुदा चाहेगा तो अब की बार साफ़ साफ़ सब हाल अर्ज़ करूंगा ज़ियादा सलाम—मुहम्मद शमशुद्दीन उनाम से

किसी बड़े को जो बड़े दरजे का हो

१५— शरीफ़ुस सरवग़ुन सागर सलामत—सलाम के पीछे हाथ जोड़ कर अर्ज़ करता हूं कि बहुत दिनों से आपके दरशन नहीं हुये दिनों के फेर में पड़ा हूं और इस दुनिया से कूच करने के वास्ते तैयार यहां तक कि ज़िनदा मुरदा हूं शेख़ ख़ुदा-बख़्श के नये कमरे पर से रात को पेशाब करने के वास्ते उठा था सो गिर पड़ा और चकना चूर होगया नहीं मालूम कि क्या भुगतना है कि जीता बचा उठने बैठने से लाचार और आपके पास आने से मजबूर हूं ग़ैरहाज़री को बाइस से इत्तिला दी आपकी ख़ैरियत पाने की

आशा है—लिखा हादी अली ने २७ मई सन् १८७१ ईसवी

ख़त व्यवहारवालों के नाम

दोस्त को

१— शरीफ़ मेहरबान शेख़ दिलावर अली साहिब सलाम के पीछे हाल यह है कि मैं बहुत अच्छी तरह से हूं और आप की ख़ैरियत हरवक़्त चाहता हूं दो ख़त आपके पहुंचे और जो उस में लिखा था सो मालूम हुआ यहां का हाल यह है कि मेरा मुहम्मद हुसेन कि बहुत दिन से बीमार थे अब ख़ुदा की मेहरबानी से अच्छे हैं और २९ तारीख़ ज़ीक़ाद सन् १२८८ हिजरी जुमा के दिन नहाए अभी कमज़ोरी बाक़ी है थोड़े दिन में वह भी जाती रहेगी रोग अब बिलकुल जाता रहा बिमारी के सबब से इतनी कमज़ोरी होगई थी कि उठ बैठ न सका था इस सबब से ताक़त भी महीनों में आवेगी दुआ कीजिए कि जलदी उन में ताक़त आजावे कि अपना काम काज देखे और यहां आप की मेहरबानी से सब कुछ मौजूद है ख़ुदा आप को ख़ुश रक्खे कि आप को इतनी मेरी फ़िकर है मुझ को किसी बात की तकलीफ़ और ज़रूरत नहीं है नहीं तो मैं आप से कुछ ख़रच मंगा लेता— और हाफ़िज़ अली हसन ख़ां साहिब ने कुछ अंगूठियां आप को दी थीं उस का पुलिंदा बनाके ७ तारीख़ को आप के पास रवानः कर दी हैं यक़ीन है कि पहुंच गई होंगी कुल दाम उन के १४।।=) हैं हिसाब उस का नीचे

લિખ્ખા જાતા હૈ -
હિસાબ અંગૂઠી
૨૦) છોટી લડકીકી અંગૂઠી ૫ કોડી
૨) કોડી વાલી
૧=) ઉનસે બડી લડકીકા વાલી અંગૂઠી ૮
=)। વાલી
૩।।) બડા લડકીકી એક કોડી
૨૪।।=)

કુલ અંગૂઠીયાં છ:કોડી ઓર આઠ હૈં કીમતી ૨૪।।=) કી હૈ ઓર પુલિંદા વગેરહમેં પાંચ રૂપે ।=) પુલિંદા પરસાત મુહરેં મહમ્મદ હુસેન કે નામકી હૈં ઓર વજન ઉસકા ૧૫ તોલા હૈ મહસૂલ ઉસકા આપકો દેના હોગા અગર મિલ ગયા હો તો રસીદ ઉસકી બહુત જલદ ભેજ દીજિયેગા ઓર છોટે મકાનમેં ।।) માહવારી કા કિરાયેદાર બડી દિક્કતસે ઠહરા હુઆ હૈ લેકિન તીસરા મહીના હો ચુકા હૈ કિ એક પૈસા ભી વસૂલ નહીં હુઆ મગર વહ આપકે બિરાદરી અમાન અલી કા બેટા હૈ સો ઉનપર તાકીદ જૈસી ચાહિયે નહીં કી જાતી હૈ ઓર યુસુફ કી માભી બાબત કિરાયે કે તકાજા કરતી હૈ કિરાયેદાર કો ઉઠા દેતી હૈ ફિર મકાન ખાલી હો જાયગા ઓર મહલ્લા વ પુલિસ કે લોગ હમકો દિક કરેંગે ઓર જો ભગવાન ન કરે કહીં ચોરી હો ગઈ તો ઓર લેનેકે દેને પડેંગે જાગહ જાગહ સે ટૂટ ફૂટ વ બેમરમ્મત હો ગયા હૈ અગર ખાલી રહતા તો

मुहल्ले में चार नाचार चोरी होजाने के ख़ौफ़ से किसी को मकान नहीं देकर रखना पड़ता ऐसी ऐसी बातें सोच कर उन को मकान में रक्खा है सो युसुफ़ की मा उठाये देती है वास्ते इत्तिला के लिखा गया है जैसा आप लिखिये वैसा किया जावे जो आप हुक्म दें तो किराया माहवारी युसुफ़ की मा को दे दिया जावे फिर मरम्मत का उनको इख़्तियार है हम से कुछ सरोकार नहीं है बहुजाने और मकान बाक़ी सब ख़ैरियत है सब को जो जिस लायक़ हो दुआ सलाम कह दीजियेगा - और जवाब इसका बहुत जल्द लिखियेगा लिखा करीम बख़्श ने लखनऊ से मुहल्ला चौक २९ ज़ीहिज्जा सन् १२८९ हिजरी

दोस्त को

२ – मेहरबान मेरे वाक़िफ़ अब्दुल ग़फ़्फ़ार साहिब बंदगी - आपका मिज़ाज अच्छा है मैं ख़ैरियत से हूं और आप की ख़ैर व आफ़ियत का चाहने वाला मुद्दत से आपके हाल से इत्तिला नहीं हुई और न मेरा इत्तिफ़ाक़ उधर जाने का हुआ कि आप से मुलाक़ात होती सिवा इसके आपने यह भी फ़रमाया था कि मैं अकसर मौज़ा अनसीवन में रहा करता हूं सो हाज़िर नहीं होसका और जो हुआ सो हुआ अब यह चिट्ठी भेजकर आप की मुलाक़ात का उमेदवार होकर चाहता हूं कि ख़त किताबत से ज़रूर ख़ुश किया कीजियेगा और मालूम

नहीं कि आप आजकल असीरगढ़ में हैं या कसमनडी
में - इन दोनों मक़ामों में से जिस जगह आप ज़्यादा
रहते हों वहाँ का पता साफ़ साफ़ लिखिये कि उस मक़ाम
पर ख़त भेजा जावे और यह ख़त बैरंग रवानः किया
गया है और येह यानी महसूल देकर भेजूंगा और आप
को इख़्तियार है जिस तरह चाहिये भेजिये वापस
न होगा इन दिनों हाफ़िज़ मुहम्मद अहमद साहिब
देहली में रहते हैं मेरे पास अकसर चिट्ठियां उनकी
आती हैं और हर ख़त में तुम को और शेख़ साहिब
को सलाम लिखा होता है और बाक़ी सब ख़ैरियत
है और जनाब शेख़ साहिब की ख़िदमत में अर्ज़
यह है कि अगर मेहरबान हाफ़िज़ अबदुलग़फ़्फ़ार
साहिब मकान पर नहीं तो यह ख़त उनके पास ज़रूर
भेज दीजियेगा और पता से मुझ को इत्तिला फ़रमाइयेगा
लिखा ज़हूरुद्दीन हसन ख़ां शागिर्द जनाब हाफ़िज़
मुहम्मद अहमद साहिब २९ जून सन १८७५ ई०
हुगली गंज बंगाल

दोस्त को जो रुत्बा बड़ा रखता हो

३— मेरे क़दीम मेहरबान जनाब मौलवी इनायत
हुसैन साहिब सलाम-बंदगी क़बूल हो मैं धरम आयकी
तरह से हूं और आप का मिलना अगावानसे चाहता
हूं आपने जो दोस्ती की राह पर कल १००) रुपिये
मेहरबानी करके क़र्ज़ दिये थे मैं आप का बड़ा निहायत

मानता हूं ज़बान नहीं कि शुकर उसका हो सके अल्लाह
आपको इसका बदला नेक दे इस वक़्त एक जगह
से कुछ रुपिया मेरे पास आगया सो २००) रुपिया जो
कल आपने मेहरबानी करके भेजा था वह सौ
रुपिया इसी आदमी के हाथों चिट्ठी देकर आपकी
ख़िदमत में भेजता हूं आगे सलाम - २५ फ़रवरी
सन् १८७४ ईसवी - लिख्या विलायत हुसेन ने -

बराबर वाले दोस्त को

४ - मेहरबान दोस्त मेरे शेख़ ख़ुदा बख़्श साहिब
सलामत - सलाम के पीछे मालूम हो कि यहां अब तक
ख़ैरियत है और आपकी ख़ैर सलाह हमेशः ख़ुदा से
चाहता हूं सो दोस्त मेरे आज कि २४ रबी उस्सानी की
है १५०) रुपिये के दो नोट एक तादाद में १००) रुपिया का
और दूसरा ५०) रुपिये का लिफ़ाफ़ा में बंद करके आप
के पास भेजता हूं जिस वक़्त मिलजावें रसीद वक़्त
जल्द भेज दीजियेगा और आपको याद होगा कि २०)
रुपिये पहले के आपके पास जमा हैं कुल रुपिये १७०) हुए
इन में से १०) रुपिया बेटा हाफ़िज़ अली को दे
दीजियेगा और बाक़ी १६०) रुपिये का असबाब
नीचे लिख्या हुआ बहुत जल्द ख़रीद करके रवानः
फ़रमाइयेगा इसलिये कि मैं ने एक आदमी से एक
हफ़्ता में मंगा देने का वादा किया है अगर आप ढील
करेंगे तो मुझे शरमिन्दः होना पड़ेगा इन में से अगर कोई

चीज़ मुवाफ़िक़ लिखने के न मिल सके तो आपनी मरज़ी
के मुवाफ़िक़ ले लीजियेगा लेकिन जिस क़दर जल्दी
भेजियेगा उसी क़दर ज़ियादा निहोरा मानूंगा—
१३)ऽऽ गुख्खुरू सोने के अचछेतार के एक माशा में ७ गज़
२०) गुख्खुरू सोने के कागज़ पर का अचछा जोगज़ हो—
१४)ऽऽ वादला सोने का—
२५)ऽऽ सलमा सोने का अचछा महीन २५ तोले—
२०)ऽऽ लचका सोने का ९ के अंगुल अरज़ का २० तोला
२१)ऽऽ चुटकी चांदी की २१ तोले—
६)ऽऽ सितारा सोने का—
और अगर रुपिया कुछ कमी पड़े तो आपने पास से मिला
लीजियेगा और अगर बाक़ी रहे तो आपने पास जमा
रखियेगा—
और मियां करीम बख़्श की तरफ़ से मिरज़ा इलाही
बख़्श को मालूम हो कि हमारे ख़त का जवाब आपने
अबतक नहीं रवाना किया जलद आपनी ख़ैरसल्लाह
लिखिये और मैं भी अल्लाह चाहता है तो पहिली
रजब को ज़रूर यहां से रवाना हूंगा और उसी महीने
में उनको आपने लड़के की शादी करना होगी और
बाक़ी सब ख़ैरियत है कलकत्ता मुक़ाम मटिया बुरज
३ जमादीउस्सानी सन १२९६ हिजरी लिखा महम्मद हुसेन

बरादर के दोस्त को

५— मेरे दोस्त शेख़ मुनव्वर साहिब सलामत—सलाम के

पीछे मालूम हो शुकर खुदा का है कि इस वक़्त तक
खैरियत है और आपकी खैर सल्ला ह हरदम चाहता
हूं आपकी चिट्ठी आई और उस में जो कुछ कि लिखा
हुआ था सब मालूम हुआ पहले इसके २५) रुपिया
की हुनडी जो वास्ते लेने ईंट और मरम्मत मकान
के भेजा था सो अब तक उसका जवाब नहीं आया
और न कुछ हाल मरम्मत मकान वग़ैरः का मालूम
हुआ बहुत फ़िकर मालूम होती है कि उस रुपिये की
मिती अभी पूरी नहीं हुई अगर सच सच ऐसा ही है तो
कुछ चिन्ता नहीं है और नहीं तो आप जल्द इत्तिला
करें कि और कोई तदबीर की जावे और अल्लाबख़्श
बेटा खुदाबख़्श का ख़ैरियत से यहां मौजूद है यक़ीन है
कि आठ सात दिन में वह भी साथ मिरज़ा कल्बअली
बेग के रवानः होवें —
और अभी तक यहां पानी नहीं बरसा मालूम नहीं कि
वहां बरसा या नहीं अगर न बरसा हो तो जहां तक हो
सके मरम्मत मकान में ग़फ़लत न कीजियेगा और नहीं तो
फिर बरसात के होजाने पर और बाक़ी सब छोटे बड़े ख़ैरियत
से हैं और हरजा बहरजा सलाम व दुआ पहुंचाते हैं
२१ रजबुल मुरज्जब सन् १२९६ हिजरी
लिखा करीम बख़्श —
६ — दोस्त मेरे लाला उलफ़त राय साहिब सलामत —
बंदगी — हाल यहां का बदस्तूर है और आपकी ख़ैरियत

हरदम चाहता हूं दो तीन ख़त आपके आये आपकी ख़ैर सलाह जानकर दिल जमई हुई सच मुच ख़तों के जवाब लिखने में मांदगी तबीयत और कोई कोई फ़िकरों के सबब से क़सूर हुआ है माफ़ कीजियेगा और बाक़ी हाल यहां का लाइक़ लिखने के नहीं है जी बहुत घबराता है जनाब साहिब रज़ीडेन्ट बहादुर राजपूताना दौरे पर यहां आये थे बहुत तदबीरें यहां से कोई और जगह जाने के वास्ते की गई लेकिन बसबब न ख़ाली होने जगह के राजपूताना में कोई तदबीर न चली जब तक कि यहां का दाना पानी है वह हिलने नहीं देगा आगे जो परमेश्वर की मरज़ी होगी होगा हर हाल में शुक्र उसका करता हूं और अरसा लगभग ७ दिन के हुआ होगा कि हुंडी ४५) रुपिया की आपके पास रजिस्टरी करके भेजी गई थी मगर अब तक रसीद उसकी नहीं आई इससे बहुत फ़िकर है उमेद है कि जो हुंडी पहुंच गई हो तो रसीद भेजदीजिये और बाक़ी सब तरह ख़ैरियत है लड़कों और लड़कियों को दुआ पहुंचे - लिखा करम हुसेन बड़ोंचा से
तारीख़ २४ अक्टूबर सन १८७१ ईसवी

७ — मेहरबान दोस्तों के हमेशः हो मेहरबानी तुम्हारी - सलाम के पीछे ज़ाहिर हो - भगवान की किरपा से दोनों तरफ़ ख़ैर सलाह है जिस रोज़ से बेटा रसूल बख़्श गोंडा गये हैं आज तक उनका हाल

मालूम नहीं हुआ बहुत फ़िक्र है इस वास्ते तकलीफ़ देता हूं कि जो आपको उनका हाल मालूम हो तो लिखिये और नहीं तो शकूर अहमद साहिब से पूछ लीजियेगा उनको बेटा रसूल बख़्श का पता मालूम है किसलिये कि उनके पास आगे ख़त आया था और जब से मैं यहां आया हूं बरखा के बाद इस से कुछ चीज़ नहीं बिकी इसी वजह से ख़र्च भेजने में देर हुई ख़ुदा चाहता है बाद २० व २५ दिन के ज़रूर ख़र्च रवानः करूंगा इस से पहले जो हो सके तो ३०) रुपिये हमारे घर में दे दीजियेगा और आप तकलीफ़ करके साफ़ साफ़ हाल वहां का लिखिये कि फ़िक्र दूर हो और मैं दो महीने तक यहां टिका रहूंगा किसलिये कि एक आदमी ने २३०) रुपिये का असबाब ख़रीद किया है और दो महीने के बाद रुपिया देने का वादा किया है और रहीम बख़्श कांदा बनाने वाले २५ रबी उस्सानी को यहां से रवानः हुये और आज तक अपने पहुंचने का ख़त उन्होंने यहां रवानः नहीं किया अगर वहां पहुंचे हों तो ताकीद कीजिये कि उनसे ख़त लिखवा कर रवानः कीजियेगा। उनके घर में बड़ा संदेह है और ज़्यादा क्या तकलीफ़ दूं लिखा हुसैन बख़्श ने देहली से जामा मसजिद के पास मकान सैयद अली हसन साहब मुनसिफ़

८ — मुनशी साहब मेहरबान मुहम्मद आज़म सलामत — सलाम के पीछे मालूम हो कि मेहरबानी

का ख़त आप का मेरे ख़त के जवाब में पहुंचा और
बहुत ख़ुश किया व दिलजमई हुई अल्लाह आपको
हर एक आफ़त से बचा व ख़ुश रक्खे आप ने जो
लिखा कि जुलाबों से कमज़ोरी बढ़ गई है दोस्त
मेरे बीमारी का कम होना मुक़द्दम है कमज़ोरी से
सिवाय सुस्ती के कोई नुक़सान नहीं है अब बीमारी
दूर हुई ख़ुदा चाहता है तो पुष्ट दवाइयों खाने से कम-
ज़ोरी भी जाती रहेगी व तबीयत आगे की सी हो जायगी
लेकिन आबहवा उस तरफ़ ऐसी ख़राब है कि तन्दुरुस्त
आदमी बीमार हुए जाते हैं न कि कमज़ोर - अगर
आप हकीम साहिब की सलाह से थोड़े रोज़ के वास्ते
यहां चले आवें तो बहुत मुनासिब है और नहीं तो
जैसा वह कहें वैसा करियेगा परमेश्वर हर जगह
रखवार व निगहबान है रोज़गार का मामला है और
भगवान की मरज़ी में कुछ उपाव नहीं है आप का इस
ज़िला से चले जाना ऐसी फ़सल में हुआ जिस से यह
ख़राबी ज़ाहिर हुई अल्लाह ताला आप को ख़ुश
और तन्दुरुस्त रक्खे हर एक आदमी दरजाबदरजा
आपको दुआ देता है अल्लाह किसी न किसी की
दुआ क़बूल करेगा हरवक़्त जब तक कि आप की
कमज़ोरी की कमी का हाल दरियाफ़्त नहीं होता जी
लगा रहता है उमेद कि बाद २४ दिन के ज़रूर अपना
हाल लिखिये - जयीदास राम लिखा अमजद अली

લખીમપૂર- ૩૧ જનવરી સન ૧૮૭૨ ઈસવી—

૯— જનાવ મુનશી મૂલચંદ સાહિવ- વાદ સલામ કે અરજ યહ હૈ કિ આપની વેપરવાઈ વ ચિરનજીવ શાદીલાલ કીવે વંદો વસતી સે વ સતા મકતૂવાત કા આજ પતા નહીં લગા જરૂરી જાન કર આપકે મહલ્લા મેં સવ સાહિવાં સે પૂછા લેકિન સાફ જવાવ પાયા નિરાસ હોકર આપકે મકાન પર આયા જો મુલાકાત હો જાતી તો પ્રેફ જાતા રહતા લેકિન મુલાકાત ન હોનેસે ભી ઘવરાયા- મીના વાજાર પહુંચા મગર અલ માગર સે વહાં ભી મતલવ પૂરા ન હુઆ લાચાર હોકર ઉમેદ વાર આપને કસૂર કી માફી કા હૂં જયાદા કયા અરજ કરૂં લિખ્ખા મનોહર લાલ મુહર્રિર ૨૨ જોલાઈ સન ૧૮૭૬ ઈસવી

૧૦— લાલા સાહિવ દોસતોં કે મેહરવાન લાલા મહતાવરાય સાહિવ સલામત- વાદ શોક મુલાકાત કે માલૂમ હો કિ યહાં ખેરિયત હૈ આપકી તનદુરસતી શ્રી મહાદેવ જીસે ચાહતા હૂં દોસત મેરે વિવાહ વેટી કા જેઠ વદી પંચમી કો ઠહરા હૈ સો રાજારામ ચપરાસી નિવતા લેકર આપકે પાસ પહુંચતા હૈ ઉમેદ વાર હૂં કિ જિસ તરહ હો સકે જરૂર જરૂર વિવાહ મેં આઈએ ઔર ચિરનજીવ દરવારી લાલ કો ભી જરૂર સાથ લાઈએ- લિખ્ખા ચંદી પરસાદ લખ્ખનઊ મહલ્લા પાટાનાલા સે ૨૯ અગસત સન ૧૮૭૫ ઈસવી-

११ – मुझपर मेहरबानी करनेवाले जनाब मुनशी साहिब सलामत — बंदगी आप अच्छी तरह से हैं क़सूर माफ़ – आज जानी हुई किताबें किसी सबब से नहीं लाया अल्लाह ने चाहा तो कल ज़रूर हाज़िर करूंगा ख़ातिर जमा रखिये और जो आप ख़त कल्लन ख़ां साहिब का लाये हों तो इसी आदमी को मेहरबानी फ़रमाइये किस लिये कि कल उनके पास से आदमी आया था और बहुत तक़ाज़ा करता था सो मैंने उसे बुलाया है जो आज आप मेहरबानी फ़रमायें तो दे दिया जाये और नहीं तो कल ज़रूर भेज दीजियेगा कि मुझ को ख़ां साहिब से बड़ी शरम मालूम होती है ज़्यादा सलाम–

लिखा हफ़ीज़ुल्ला ने सीतापुर से ४ मार्च सन १८७३ ईसवी–

२२ – मेहरबान मेरे ज़्यादा हो मुहब्बत तुम्हारी–सलाम के पीछे मालूम हो शुकर अल्लाह का कि दोनों तरफ़ ख़ैरियत है – एक नोट नम्बरी २४७४१ तादादी २०) रुपिया का वासते मोल लेने किताबें पढ़ने की रवाना किया गया था लेकिन उसका जवाब आपने अब तक नहीं भेजा ख़ुदा जाने पहुंचा या नहीं अगर पहुंचा हो तो देखते ही इस ख़त के जल्द लिखी हुई किताबें भेज दीजियेगा लेकिन ख़याल रहे कि सब किताबें छापा मुसतफ़ाई–या हाजी महमद हुसेन की

हों और अगर कोई किताब इन दोनों छापा खानों में
से न मिल सके तो आचार्जी दरजा छापा खाना आली
बख़्श खां से लेकर रवानः फ़रमाइयेगा निहोरा मानूंगा
और लिफ़ाफ़ा पर दूसरे आदमी के नाम लिखने की
कुछ ज़रूरत नहीं है ख़ाली मेरा नाम लिखियेगा और
करीम बख़्श की तरफ़ से सब साहिबों को दरजा बदरजा
सलाम व दुआ कह दीजियेगा ज़ियादा सलाम - लिखा
~~[illegible]~~ रकम हुआ ही कलकत्ता से २८ रजब सन् १२८४
हिजरी

१३ — दोस्त मेहरबान सलामत - बाद सलाम के
मालूम हो कि मैं ख़ैरियत से हूं और आपकी तन्दुरुस्ती
हमेशः चाहता हूं मेहरबानी का ख़त पहुंचा हाल
मालूम हुआ मैं ने तो आप को यह नहीं लिखा था कि
असबाब आप ने महंगा मोल लेकर भेजा है जनाब
मेरे आपने बहुत मेहनत से बहुत उमदः और सस्ता
असबाब रवानः किया है और आपकी मेहरबानी से
उमेद है कि इस में बहुत कुछ नफ़ा मुझ को मिलेगा
और आगे जो ३०) रुपिया बटेरें भेजने के वास्ते
रवानः किये गये थे उसकी यह सूरत है कि अगर इसी
सात आठ रोज़ में ४) रुपिया सैकड़ा तक बटेरें मिल सकें
तो भेज दीजिये और बाद इसके जो ६) रुपिया भी मिलें
तो न भेजियेगा क्योंकि इस अरसा में बहुत आदमियों
के बटेर यहां आ जावेंगे और फिर उतना नफ़ा न होगा

મુફ્ત કી પરેશાની હોગી ઔર યહાં કા યહ દસ્તૂર હૈ કિ જિસ શખ્સ કી જો ચીજ઼ જિસ તરહ કી પહલે આતી હૈ વહી બડ઼ી ક઼દર સે બિકતી હૈ ઔર જબ હર જગહ ફૈલ જાતી હૈ તો બહુત બેક઼દરી ઔર દિક઼્ક઼ત સે જુદા હોતી હૈ લેકિન ઇન જાનવરોં કી રવાનગી મેં બહુત હોશિયારી કીજિયેગા। એક તો ફટકે મેં દાના વ પાની જ઼રૂર રખિયેગા। દૂસરે ડાકગાડ઼ી મેં રવાનઃ કીજિયેગા। ઔર કોનપૂર સે બલ્કિ ઇલાહાબાદ સે રવાનઃ કીજિયેગા। ઔર તુરન્ત મુઝકો તાર બરક઼ી મેં ખ઼બર ભેજિયેગા। ઐસા ન હો કિ જાનવર રાહ મેં મર જાવેં। આગે લિખના થોડ઼ા સમઝના બહુત - જ઼િયાદા સલામ લિખા આજ઼લા રાકમ્બૂને -

ખ઼ત બડ઼ોં કી તરફ઼ સે છોટોં કો

૧— શ્રી ચિરંજીવ જાન સે પ્યારે ભાઈ મુહમ્મદ હસન ખ઼ાં - પીછે દુઆ બઢ઼તી ઉમ્ર ઔર દૌલત કે માલૂમ હો કિ યહાં સબ તરહ સે ખ઼ૈરિયત હૈ ઔર તુમ્હારી ખ઼ૈરવાફ઼િયત હર વક઼્ત કી ચાહિયે ખ઼ત તુમ્હારા બડ઼ી ઇનતિજ઼ારી મેં પહુંચા હાલ જાના જો કિ તુમને અપને ઘર કે લોગોં કી બાબત લિખા હૈ કિ કુછ દિન તક તુમ્હારે ઘર મેં રહે ઔર મેરી માં કો અકેલી ઘર મેં છોડ઼ા ઔર ઉન કી સેવા બરદાશ્ત ન કી ભાઈ મૈંને તુમ્હારે ઘર કે લોગ અશરાઃ મુહર્રમ મેં તો મેરે ઘર મેં આયે થે ઔર બાદ ફ઼ુરસત અશરાઃ કે ફિર અપને ઘર મેં ચલી ગઈ ઔર આપકી

माके पास हैं सो ऐसा हुआ- और मैंने दो चार
बार बुलाया भी मगर आज तक यहां नहीं आई
इत्तिला के वास्ते आपको लिखा और इन दिनों
यहां पानी बहुत बरसा और अकसर मकानात
शहर व बाहर के गिर पड़े सो काई दीवारें तुम्हारे मकान
की भी फट गई हैं और आपके घर में ख़र्च की बहुत
तकलीफ़ है जो हकीम साहिब ने कुछ दिया तो ख़र्च
हुआ और सिवाय इसके और किसी जगह से सूरत
खाने पीने की नहीं है आपको चाहिये कि अपने
क़र्ज़दारों में से किसी और शख़्स के नाम अपना
रुक़आ भेज कर कुछ माहवारी मुक़र्रर करा दीजिये
कि रोज़गार की दिक़्क़तों से छुट्टी मिले ऐसा दो महीना
से यहां हैज़ा का बड़ा ज़ोर है कि सैकड़ों आदमी मरचुके
हैं और मरते जाते हैं लेकिन ख़ुदा का शुक्र है कि
आपके भाई बंद सब ख़ैरियत से हैं ज़ियादा हुआ
लिखा फ़क़त अलीबख़्श बनारस से ३ शाबान
सन् १२७० हिजरी

२— शाबी चिरंजीव मियां मुहम्मद अताउल्ला
तुम्हारा दराज़ ज़ियादा हो- पीछे दुआ ज़ियादा
होने दौलत व अक़बाल के कि ख़ुलासा मतलब
दिल का है मालूम हो कि मैं ख़ैरियत से हूं और
तुम्हारी ख़ैर व आफ़ियत का हर वक़्त दरगाह ख़ुदा-
वन्द ताला से दुआ मांगता हूं पेट में २५ शौवाल

सन् १२७८ हिजरी को मैं कुमड़ा से रवानः होकर चाहता
था कि तुम्हारी तरफ़ होता हुआ जहानाबाद जाऊं.
लेकिन तबियत मांदी होगई इस वजह से संदीला में
रहना होगया अब ख़ुदा के फ़ज़्ल से आराम होकर
२८ शौवाल को लखनऊ में पहुंचा यहां आकर सुना
गया कि तुम जहानाबाद जा चुके हो ख़ैर आजकल
इरादा है कि मीर सैयद अली साहिब के साथ मौज़ा
कठवारा होता हुआ जहानाबाद में आकर तुमको
देखकर ख़ुश हूं तुम किसी तरह से न घबराना और
असबाब जो कि इस आदमी के हाथ पहुंचता है
उस में से ज़ूयाद जमा चिकन के जो कि तैयार नहीं है
उनको अपनी पसन्द के मुवाफ़िक़ मारफ़त मुहम्मद
ख़ां के तैयार करा लेना और जोड़े ज़रपाइयों के तुम
और तुम्हारे भाई अपने अपने पांव के आपस में
बांट लेना और शायद कोई जोड़ा हर एक के पांव
से छोटा या बड़ा हो तो उसको इसी आदमी के हाथों
जल्द फेर देना कि बदल कर दूसरा भेज दिया जावे
और बाक़ी चीज़ अगर काम में आवें तो अच्छा
नहीं तो ख़बरदारी से रख छोड़ना ख़राब न करना
और लिखने पढ़ने से कभी ग़ाफ़िल न होना कि आगे
को तुम्हारे काम आवेगा नहीं तो अफ़सोस करोगे
और बाक़ी सब ख़ैरियत है हमारी तरफ़ से अक़ावल
बहादुर साहिब को सलाम अर्ज़ कर देना ज़्यादा

સિવાય હુઆ કે યદા લિખું લિખા કરીમ વખ્શ
લખનઊ સે પહિલી જીકાદ સન ૧૨૭૮ હિજરી-
૩— શની ચિરનજીવ જવાહર હો દૌલત તુમ્હારી
પીછે જવાહર ઉમર ઔર ઘર ખા કે માલૂમ હો કિ
હાલ યહાં કા અચ્છા હૈ ઔર તુમ્હારી તનદુરસ્તી
ચાહિયે અરસા ૧૦ દિન કા હુઆ કિ હમ પૈમાઇશી
જિલે ઉનનામ સે છુટ્ટી લેકે સાહિબ બહાદુર કે
પાસ પહુંચે યહાં આકર માલૂમ હુઆ કિ સાહિબ
બહાદુર કી બદલી ઇસ જિલાસે નવાબગંજ બારા-
બંકી કો હો ગઈ હૈ સો પહલી દિસમ્બર સન ૧૮૬૬
ઈસવી કો અમલા સમેત વહાં જાવેંગે લેકિન સાહિબ
ને મુઝ કો યહાં અટકી કે કામ પર મુકર્રર કિયા હૈ
સો ૧૬ નવમ્બર સન ૧૮૬૬ ઈસવી સે કામ જારી
આમદ ઔર બરામદ રોજના કા સબ હમારે સિપુર્દ
હોગયા હૈ લેકિન કામ નયા હૈ ઇસ વાસ્તે સે દિલ
ઘબરાતા હૈ કિ દેખેં કિ સરાનહ ઇસ કામ કા બંદોબસ્ત
હોગા ઔર જબાની લોગોં કે માલૂમ હુઆ હૈ કિ
જો સાહિબ કિ સાહિબ કી જગહ આવેંગે વહ કિસી
કદર ખફા હૈં લેકિન ખુદા માલિક હૈ હમને તો
સાહિબ સે અરજ કિયા થા કિ હુજૂર મુઝ કો અપને
પાસ સે અલગ ન કરેં લેકિન સાહિબ બહાદુર ને
હુકમ કિયા કિ તુમ્હારે વાસ્તે યહ ઓહદા અચ્છા
હોગા તુમ ઇનકાર ન કરો ઔર નહીં તો અફસોસ

करोगे इस वजह से मैंने यह ख़िदमत क़बूल करली
कि शायद साहिब बहादुर नाराज़ होजावें आगे जो
हो सो फ़क़त तनहाई और बदमिज़ाजी अफ़सर
का ख़याल है जो जानता बूझता नहीं है और नहीं
तो कुछ डर नहीं है धीरे धीरे सब काम मालूम
होजावेगा और अभी तनख़्वाह हमारी नहीं
मिली है जिस वक़्त मिलेगी तुरत भेजी जावेगी
ख़ातिर जमा रक्खो और जनाब शाह साहिब की
ख़िदमत में सलाम अर्ज़ करदेना और बेटी को
बाद दुआ के मालूम हो कि तुम्हारा सामान जल्द
हम भेजेंगे ख़ातिर जमा रखना - लिखा ख़ुदा-
बख़्श उन नामसे २५ नवम्बर सन १८६६ ईसवी-

४ — श्री चिरनजीव आंखों के सुख देने वाले
हाफ़िज़ मुमताज़ अली ज़ियादा हो दरजा तुम्हारा
पीछे दुआ ज़ियादा उमर और बढ़ती दरजों के
मालूम हो कि यहां ख़ैरियत है और तुम्हारी ख़ैर-
व आफ़ियत ख़ुदा से चाहता हूं यद्यपि मैंने जिस वक़्त
हम चले थे तुम से इस बात की ताकीद करदी थी
कि बाद सात रोज़ के हमेशः अपने हाल से हम
को इत्तिला करते रहना लेकिन आज १५ व २०
रोज़ का हुआ कि आज तक तुम्हारा हाल मालूम
नहीं हुआ अगर इलाही बख़्श के बेटे अब-
दुल अज़ीज़ के विवाह की कोई तारीख़ मुक़र्रर

हो गई हो तो जल्द हम को इत्तिला दो कि हम छुट्टी के वास्ते अर्ज़ी दें या नहीं फिर हमारा आना ठीक वक़्त पर न होगा हम लाचार हैं और उनसे कह देना कि रजब में अगर बड़ा अब्दुल अज़ीज़ का विवाह हो जावे तो अच्छा है और नहीं तो आगे ख़ुदा जाने कैसा हो जो काम किया जा सकता है उस को कल पर न छोड़ना चाहिये पर ज़रूर ख़्याल रखियेगा क्योंकि फ़ज़ल अहमद की बीमारी बहुत बढ़ गई है अगर वह तो आप ज़मानः देखे हुए और तजरुबःकार हैं— और मंगाया हुआ असबाब तुमने आज तक रवानः नहीं किया बड़ा हरज होता है जल्द भेजो— और बीस २०) रुपया का नोट रजिसटरी करा के भेजा गया था जो पहुंचा हो तो रसीद जल्द रवानः करो या नहीं तुम आप डाकघर में जाकर मुनशी साहिब से मेरा सलाम कहना वह तुम को अच्छी तरह से पहिचानते हैं ज़रूर ही ख़त रजिसटरी किया हुआ दे देंगे बाक़ी ख़ैरियत—

लिखा मुहम्मद बख़्श २७ अपरैल सन १८७० ईसवी

५— जिगर के टुकड़े मियां इनायत हुसैन ज़ियादः करे अल्लाह उमर तुम्हारी पीछे दुआ ज़ियादः उमर और दौलत के मालूम हो कि हाल यहां का ख़ैरियत से है और तुम्हारी ख़ैर आफ़ियत का ख़ुदा से चाहने वाला रहता हूं जिस रोज़ से कि तुम यहां से रवानः हुये हो आज तक एक पर्चा भी अपनी ख़ैर आफ़ियत का तुमने

न लिख भेजा कि दिल को दिलजमई और तबीयत को ख़ुशी होती और ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि इस असनः में तुम आये तो भी हम से मुलाक़ात न हुई क्योंकि आगे तुमने एक ख़त में लिखा था कि हमने ७ दिन की छुट्टी ली है और कल रवानः मकान हूंगा आप भी आइये सो तुम्हारे लिखने के मुवाफ़िक़ मैं बहुत हरज करके अकेले तुम्हारी ही मुलाक़ात के वास्ते मकान गया बल्कि साहिब से मैंने इस तरह से कि कल लौट आऊंगा इत्तिला भी नहीं की वहां जाकर मालूम हुआ कि तुम तुरंत आने के साथ ही वास्ते कोशिश तरक़्क़ी अपनी के इलाहाबाद सवार होगए हो और मैं साहिब से छिपकर आने के सबब से रह न सका क्या कहूं क्या रंज हुआ कि मकान पर दोनों जने के आने से भी मुलाक़ात नसीब न हुई ख़ैर ख़ुदा ने चाहा और ज़िन्दगी बाक़ी है तो फिर मुलाक़ात होजावेगी लेकिन अब जताना कि तुम्हारा पक्का इरादा दो चार रोज़ रहने का मकान पर न हो तो हम को कासी न बुलाना कि हमारा हरज होता है और जवाब इसका बहुत जल्द रवानः करना और मैं अब फ़ैज़ाबाद में मुनशी कामता परसाद साहिब के मकान पर जो कि पास मोहल्ला सरवाली के है टिका हूं इसी पता से ख़त रवानः करना ज़ियादा सिवाय ज़्यादती उमर व दौलत के क्या लिखूं लिखा महम्मद बख़्श २८ मई सन् १८७० ईसवी

है — शरी चिरंजीव मेरे प्यारे भाई ज़ियादा हो दरजा
तुम्हारा पीछे दुआ ज़ियादती उमर और दरजा के
मालूम हो कि यहां ख़ैर वाफ़ियत है तुम्हारी ख़ैरियत
हरदम चाहता हूं ख़ुशी का भरा हुआ ख़त तुम्हारा
२० अक्तूबर सन् १८७१ ईसवी को पहुंचा बहुत
ख़ुशी हुई ख़ुदाताला तुमको ख़ुश रक्खे कि उससे
हमारे दिल की तसल्ली है रोज़गार के बारे में
जो कि तुमने लिखा था कि २०) रुपिया में गुज़ारा नहीं
होता है यदापि मेरे सच है गुज़ारा होने की कौन सूरत है
कि घर के लोग बहुत हैं और आमदनी थोड़ी मगर
ख़ुदा पर रक्खो और घबराव मत हम तुम्हारी
तरफ़ से कभी ग़ाफ़िल न रहेंगे लेकिन यहां की यह
सूरत है कि अरसा चार महीने से साहिब बहादुर
आबहवा की नामुवाफ़िक़त के सबब से पहाड़ पर
गये हैं जिस वक़्त आवेंगे और काम भी जारी होगा
ज़रूर तुम्हारे वास्ते कोई सूरत रोज़गार की निकाल
कर सिफ़ारिश की जावेगी ख़ातिर जमा रक्खो किसी
बात का अन्देशः न करना हम जो यहां हैं तो तुम ही
लोगों की ख़ातिर से हैं जहां तक हो सकेगा पैरवी से
ग़ाफ़िल न रहेंगे आगे मर्ज़ी है चिरंजीव करम-
हुसेन को हमारे पास भेज दो कि यहां उसका लिखना
पढ़ना अच्छी तरह से होगा किताबें यहां सब तरह
की हैं कुछ साथ लाने की ज़रूरत नहीं है और आगे

हो सके तो उसके छोटे भाई को भी जो यहां रहसके तो
भेजदो कि दोनों भाई आपस में यहां खुश रहें बाक़ी
क्या लिखूं जहां रहो खुश रहो—लिख्खा रफ़ीउद्दीन
२९ अक्तूबर सन १८७७ ईसवी

७- मेरे प्यारे भाई मिर्ज़ा महम्मद अब्दुल्ल अज़ीज़
उमर व दौलत तुम्हारी ज़्यादा हो पीछे दुआ बहुती
दरजा और दूसरी बात के मालूम हो कि मैं अब तक
अच्छी तरह से हूं और तुम्हारी तन्दुरुस्ती रात
दिन ख़ुदा से चाहता हूं प्यारे मेरे अरसा लगभग एक
साल के होता है कि छुट्टी के मिल जाने पर भी उस
मकान नहीं गये और कोई ख़त तुम्हारा नहीं आया
कि जिससे हाल तुम्हारे न जाने का मालूम होता घबड़ा
कर मैं चाहता था कि बिना छुट्टी लिये तुम्हारे पास
चला आऊं लेकिन ज़बानी मोतमिदों के जो कि
कल उसी जगह से आये हैं तुम्हारी खैर सलाहत
से मालूम हुई सो तहदिल शुकर और छुट्टी ४ दिन
की मांगी है लेकिन मंज़ूरी अभी तक नहीं आई है
जिस वक़्त मंज़ूरी आजावेगी तुरंत तुम्हारे पास
चलूंगा और कुछ रुपिया का मनी आर्डर पहुंचता
है वसूल करके जल्द रसीद भेजना और आगे की
तरह से आपस में बांट लेना तुम को चाहिये कि
जवाब इसका बहुत जल्द रवानः करो कि फ़िकर
दूर हो और जो इरादा आने का हो तो जल्द इत्तिला

देना कि मैं भी रवानः मकान को हूं बाक़ी सब तरह
से ख़ैरियत है - लिखा अब्दुल सत्तार ३० नवम्बर
सन् १८७१ ईसवी -

८ - शानी चिरनजीव आंखों की रोशनी मुहम्मद
नजीब हमेशः ख़ुश रहो - दुआ के पीछे मालूम हो
ख़ुदा का शुक्र है कि यहां ख़ैरियत है लेकिन तुम्हारी
ख़ैर सलाह हर वक़्त चाहता हूं तुम्हारा ख़त लिखा
१९ रजब उल मुरज्जब सन् १२८९ हिजरी को पहुंचा
बहुत ख़ुशी हुई लेकिन तुम्हारी मांदगी का हाल सुन
कर बड़ा रंज हुआ ख़ुदा जल्द तुमको आराम करे
और जवाब के लिखने में इतनी देर न होती लेकिन
मैं दारोग़ा साहिब के ख़त का रास्ता देखता रहा कि
शायद उसमें तुम्हारा कुछ हाल हो तो दोनों का जवाब
एक ही साथ लिखूं और इसके पहले दारोग़ा साहिब
की जुदाई लगी हुई थी इस बाइस से जवाब नहीं
लिखा ज़बानी दारोग़ा साहिब के कुल हाल हमारा
तुमको मालूम होगा और दारोग़ा साहिब के लिखने
से मालूम हुआ कि तबीयत तुम्हारी अगाड़ी की
क़ियास से अच्छी है इसके सुनने से बड़ा आनंद
हुआ अल्हम्दुलिल्लाह ताला तुमको तन्दुरुस्त रक्खे
कि हमारी ख़ुशी इसी से है और भाई रहमान हुसैन
का भी हाल दारोग़ा साहिब के लिखने से मालूम हुआ
ख़ुदा ने चाहा तो थोड़े दिन में ख़र्च की बन्दिश हो

जावेंगी तो उनको रवाना करूंगा और तुम को भी
जल्द ख़र्च रवाना करते हैं ख़ातिरजमा रखना
और आशिक़ हुसेन को बहुत बहुत दुआ कह
देना लिखा अली हुसेन परतापगढ़ से १ अप्रैल
सन् १८९४ ईसवी

३९ — श्री चिरनजीव नेक बख़्त बेटा जीव को —
पीछे दुआ और ज़ियादा उमर दौलत व इक़बाल के
मालूम हो कि मैं ख़ैर व आफ़ियत से हूं और तुम्हारी
तन्दुरुस्ती रात दिन की चाहिये ख़ुशी का ख़त तुम्हारा
पहुंचा हाल मालूम हुआ ख़ुदा तुम को ख़ुश रक्खे
जो तुमने चिरनजीव अब्दुल अज़ीज़ के विवाह
में मुझे बुलाया है सो पयाने मैंने मैं ज़रूर १७ तारीख़
इसी महीने को रवाना हूंगा तुम को चाहिये कि पंद्रह
तारीख़ से सब सामान दुरुस्त कर रखना कि तारीख़
१८ या १९ तक मैं वहां आकर विवाह में शरीक
होकर दूसरे रोज़ लौट आऊं कि चार रोज़ रहने में
मेरा बड़ा हरज व नुक़सान होगा और मैं १७ तारीख़
को ख़ुदा चाहेगा तो ज़रूर यहां से रवाना हूंगा तुम
ख़ातिरजमा रखना और मीर मुहम्मद हुसेन साहिब
ने एक सौ सत्तर १७०) रुपिया जो वास्ते मोल लेने
असबाब के तुम्हारे पास रवाना किये थे आज तक
तुमने न असबाब भेजा और न जवाब लिखा लेकिन
आज कल जो लगन व विवाह के दिन हैं और तुम

કો માલૂમ હૈ કિ અસબાબ ઉનહોંને બેચને કે વાસ્તે
માંગા હૈ સો જિસ વક઼્ત લગાન વિસાહ હો જાવૈંગે તો
વહ માલ દિક઼્ક઼ત સે બિકેગા ઇસ વાસ્તે તુમ કો
લિખતા હૂં કિ બહુત જલ્દ અસબાબ ઉનકા રવાનઃ
કરો ઔર સબ છોટે બડોં કો હમારી તરફ સે સલામ
વ દુઆ કહ દેના જ્યાદા દુઆ લિખા કરીમબખ્શ
મુથાલ સે ૨ શૌવાલ સન ૧૨૭૨ હિજરી

૨૦ — શરીફ ચિરનજીવ મિયાં મુહમ્મદ શરીફ બીર
કો — પીછે દુઆ કે માલૂમ હો કિ ઇસ વક઼્ત તક
બહુત અચ્છી તરહ હૂં તુમ્હારી તનદુરસ્તી હરદમ
ચાહતા હૂં ખુશી કા ખત મએ ફ઼ેહરિસ્ત બિલટી
માલ તુમ્હારા ભેજા હુઆ પહુંચા લેકિન બુલ્તિહા
અસબાબ કી અભી તક નહીં વસૂલ હુઆ યક઼ીન
હૈ કિ કલ તક આ જાવેગા તુમ્હારે લિખને સે
માલૂમ હુઆ કિ અસબાબ તુમને બહુત અચ્છા
ભેજા હૈ લેકિન મેરે પાસ બહુત મહંગા મોલ લિયા
ગયા હૈ ઐસા માલ યહાં કે લોગ કમ લેતે હૈં દુઆ
કરો કિ જલ્દ નિકલ જાવે ઔર અબ કભી ઐસા
મહંગા માલ યહાં ન ભેજના —

ઔર ૨૫૦) રુપિયા જો તુમને માંગે હૈં ઉસ કા યહ
હાલ હૈ કિ મેરા હાલ તુમ અચ્છી તરહ સે જાનતે
હો ઔર જાહિર હૈ કિ જો કુછ રુપિયા મેરે પાસ
હોતા હૈ યા કર્ઝ મિલતા હૈ ઉસ સબ કા મૈં અસબાબ

ख़रीद लेता हूं और आराम कल बिना बंदोबस्त के किसी तरह से मेरा नहीं सकता हूं ख़ुदा ने चाहा तो एक महीना पीछे रवानः करूंगा प्रार्थना रक्खो और जो बहुत ज़रूरत हो तो किसी से क़र्ज़ ले लो जिस वक़्त मैं रुपिया भेजूंगा देना और यह भी लिखने पढ़ने में ग़फ़लत न करना ज़ियादा सिवाय इस्के क्या लिखा जावे लिखा दयानत उल्लाह ३० जुलाई सन् १८७१ ईसवी

२१ — श्री चिरञ्जीव मेरे प्यारे भाई सल्लामत— पीछे दुआ के मालूम हो कि यहां ख़ुदा की मेहरबानी से ख़ैरियत है और तुम्हारी ख़ैरियत हरदम की चाहिये ख़त तुम्हारा लिखा हुआ २४ मार्च सन् १८७२ ईसवी का उसी महीने की २९ तारीख़ को पहुंचा बहुत ख़ुशी हुई ख़ुदा तुम्हें ख़ुश रक्खे १७ जून को पंद्रह दिन की छुट्टी लेकर मैं मकान आया था— लेकिन चलने और खाना पानी ठीक वक़्त पर न मिलने के सबब से बीमार हो गया और दो महीना तक बीमार रहा अब ख़ुदा की मेहरबानी से आराम हुआ २८ अगस्त को यहां फ़ीरोज़ाबाद पहुंचा और साहिब बहादुर से मुलाक़ात की साहिब बहादुर आदर से मिले और कहा कि अभी आप क्यों आये जब बख़ूबी ताक़त आ जाती उस वक़्त चिन्ता न थी मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर के इक़बाल से बीमारी दूर हो गई है ताक़त भी धीरे धीरे आ जावेगी और काम भी

થોડા થોડા કરતા હૂં કહા કિ અચ્છા હૈ લેકિન બહુત મેહનત ન કરના સો મૈં અપની જગહ પર ફિર હોગયી તુમ્હારે ચચા સાહિબ કા હાલ બહુત રોજ઼ સે માલૂમ નહીં હુઆ જો તુમ્હારે પાસ કોઈ ખ઼ત આયા હો તો ઇત્તિલા કરો ઔર જો ઉનકે પાસ જાઓ તો હમારા સલામ કહ દો જ઼િયાદા સિવાય બઢતી ઉમર વ દૌલત કે ક્યા લિખૂં —

લિખ્યા હૈદરખાં ને મુક઼ામ છાવની મઊ સે

૧૨— શરી ચિરંજીવ મેરે પ્યારે બેટે જ઼િયાદા હો ઉમર તુમ્હારી પીછે શૌક઼ દેખને તુમ્હારે કે માલૂમ હો કિ હાલ મેરા લાયક઼ શુક્ર કે હૈ ઔર તુમ્હારી હરદમ કી ખ઼ૈર વ આફ઼િયત ચાહતા હૂં —

ખ઼ુશી કા ખ઼ત તુમ્હારા પહુંચા હાલ માલૂમ હુઆ પ્યારે મેરે માલ જાનકી નિછાવર હૈ જો અસબાબ જાતા રહે ઔર જાન બચ જાવે તો ક્યા ચિન્તા હૈ ખ઼ુદા ઉસસે ભી જ઼િયાદ: માલ વ અસબાબ તુમ કો દેગા ખ઼ુદા પર ભરોસા રક્ખો ઔર ઉસ સે અપની બઢતી માંગતે રહો આજ સાઢે ૨૦ રોજ઼ કા હુઆ કિ એક ખ઼ત મકાન સે આયા થા ઉસમેં તુમ્હારા ગિલા ઇસ બાત કા લિખ્યા થા કિ દો મહીના સે તુમ્હારા કુછ હાલ માલૂમ નહીં હુઆ ઐસી બેપરવાઈ કભી ન કિયા કરો ઔર હર સાતવેં રોજ઼ મકાન કો ઔર હર મહીના યહાં કો ખ઼ત લિખ્યા કરો કિ ફ઼િકર દૂર હુઆ કરે ઔર ખ઼ૂબ રૂપિયા કમાના આજ

પહુંચતા હે ઇસમેંસે ૩૦) રૂપિયા કા જરૂરી અસબાબ ખરીદ
લેના ઔર જો બાકી બચે ખરચ મેં લાના ૨૫ યા ૨૦ દિન મેં
ઔર કુછ ખરચ ભેજા જાવેગા ખાતિરજમા રખના જો તુમહારા
જી વહાં નહીં લગતા હૈ તો ઇસ તારીખ દિકર યહાં ચલે આઓ
૨૫) ૩૦) તીસ રૂપિયા કી સૂરત રોજગાર કી યહાં હો
જાવેગી લેકિન બિના મંજૂરી ઇસ તરફ કે કભી ન ચલના
તાકીદ જાનો ઔર મુનશી રઘુવરલાલ સાહિબકો બહુત
બહુત સલામ કહ દેના— લિખ્યા દુલારી બખશ
૨૯ જુન સન ૧૮૫૮ ઈસવી

૧૩— શરી ચિરનજીવ સેની ખુશી ઔર બિનહમારી
કે પૂંજી વ બુઢાપે વ કમજોરી કે મદદગાર જિયાદા કરે
અલલાહ દરજા તુમહારા— પીછે દુઆ જિયાદ: ઉમર
વ દરજો કે માલૂમ હો કિ યહાં ખુદા કી મેહરબાની સે
ખૈરિયત હે ઔર તુમહારી તનદુરુસતી હર સાઇત ચાહતા
હૂં તારીખ ૨૦ નવમબર દિન બ્રિહસપતિકો મૈં ફૈઝાબાદ
સે મકાન કો પહુંચા લેકિન હમારી તુમહારી મુલાકાત
બહુત દિનોં સે નહીં હુઈ હે ઇસ વાસતે તુમ કો લિખ્યા જાતા
હૈ કિ દેખતે હી ઇસ ખત કે સાત રોજ કી છુટ્ટી લેકર
યહાં રવાન: હો કયોંકિ મૈં બહુત દિનોં સે તુમહારે દેખને
કી અભિલાખ રખતા હૂં ઔર તુમ ભી બહુત અપની
શૌક જાહિર કર ચુકે હો ઔર મૈંને છુટ્ટી દિલાઈતી
એક મહીના કી લી હે સો ૨૦ દિસમબર કો મૈં રવાન:
હૂંગા ઔર ઇસકે પહલે જો અસબાબ તુમને યહાં ભેજા થા

વહ પૈગામ અલી કે હાથ પહુંચા ઔર ઇનાયત અલી
રાહમેં બીમાર હો ગયા થા ઇસ વજહ સે અસબાબ કે
પહુંચનેમેં દેર હુઈ ઔર મીર ફ઼ઝ઼લ હુસેન સાહિબ કલ
૧૧ બજે દિન કો કલકત્તા સે ફ઼ેરોઝ઼ાબાદ હોતે હુએ મકાન
પર આએ તુમ્હારે વાસ્તે ૪ અદદ ચાકૂ વિલાયતી ઔર
એક કતરની ઔર એક બહુત અચ્છી કિતાબ લુગ઼ાત
કી સાથ લાએ હૈં સો વહ તુમ્હારે પાસ પુલિનદા કરકે
રવાન: કરતે થે લેકિન જબ તુમ્હારે બુલાને કા હાલ
સુના તબ કુલ ચીજ઼ેં મેરે પાસ ભેજ દીં ઔર તાકીદ કર
દી હૈ કિ જિસ વક઼્ત ચિરનજીવ બેટા આવેં સબ સે પહલે
યહ ચીજ઼ેં દેદેના વાસ્તે ઇત્તિલા કે તુમ કો લિખ્ખા ગયા
હૈ જવાબ ઇસ કે પહુંચતે હી જલ્દ રવાન: કરના ઔર
સબ કો દરજબદરજે દુઆ સલામ કહ દેના— લિખ્ખા
મુહમ્મદ ઇબ્રાહીમ લખનઉ સે ૨૭ જૂન સન્ ૧૮૫૨
ઈસવી

૨૪ — રાની ચિરનજીવ રોશની આંખોં કે સલામત
પીછે દુઆ બહુતી દૌલત વ ઇક઼બાલ કે માલૂમ હો
અરસે સે તુમ્હારા હાલ હમ કો માલૂમ નહીં હુઆ ઔર
દો બાર ખ઼ત ભી લિખ્ખા સો એક કા ભી જવાબ તુમને ન
લિખ્ખા તુમ્હારી નેક બખ઼્તી સે યહ બાત બહુત દૂર હૈ જો
એસી હી ગ઼ફ઼લત કરોગે તો યક઼ીન હૈ કિ બહુત જલ્દ
હમારી જ઼િંદગી સે હાથ ધોઓગે તુમ કો ચાહિયે કિ
પહલે હી ઇસ ખ઼ત કે બહુત જલ્દ અપની ખ઼ૈરઆફ઼િયત

से घर के लोगों समेत तसल्ली करो कि फ़िक्र जाती रहे और यह भी लिखना कि तिलक चढ़ गया या नहीं हम को रात दिन यही फ़िक्र रहती है कि ख़ुदा न करे हम वहां मौजूद नहीं हैं ऐसा न हो कि लड़कों की ग़फ़लत से बड़ों के सामने हम को लजाना पड़े बेटे मेरे जो काम करना होशियारी व मुस्तैदी व दिलजमई से करना और दूसरी तरफ़ के लोगों को हमेशः राज़ी व ख़ुश रखना ऐसा न हो कि तुम्हारे सिर बदनामी आवे और उसके बाइस से हम को सिर झुकाना पड़े बहुतेरा मैं चाहता हूं कि बिना मेरे तुम कोई सामान कमी न करोगे लेकिन जो ज़रूर न हो तो चिंता नहीं हर एक काम ख़बरदारी से करना चाहिये और सात रोज़ तक मैं तुम्हारे ख़त की राह देखता रहूंगा जो जवाब न आवेगा तो तुरत तुम्हारे पास चला आऊंगा क्योंकि फ़िकरें बहुत हैं और रुपिया ख़र्च ज़रूरी के वास्ते पहुंचाते हैं किफ़ायत हमेशः करते रहना ख़र्च बेफ़ायदा कभी न करना आगे तुम आप बुद्धिमान हो लिखने की कुछ ज़रूरत नहीं है लिखा अबदुलग़नी-

२४— श्री चिरंजीव नेकबख़्ती के मेरे हरिमार्गि-मान सलामत — पीछे शौक़ छाती से लगाने के मालूम हो कि मैं तुम को छोड़कर ३० जूलाई सन् १८७४ ईसवी को ख़ैर सलाह से बनारस पहुंचा और राह में कोई मुश्किल नहीं पड़ी और ख़त भेजने में इस वजह से

दे1 हुई कि कमेटी सा ल्लान: के थोड़े दिन थे उसमें 1पो 1ट
साल तमाम पेश कोनना थी सो कमेटी होगई ल्लोर वहुत
से मुदर्रिसों को जो कि लायक़ ल्लोर मेहनती व काम
ल्लच्छा करते थे उनको इनाम दिया गया हम को भी
दो थान तनज़ेव के ल्लोर ५) रूपिया नक़द ल्लोर ३) रूपिया
की पढ़ने की कितावें सरकार से मिली हैं ल्लोर उसी रात
को जल्सा ल्लातशवाज़ी वग़ैरः का भी ल्लच्छाई के
साथ हुल्ला जो तुम यहां होते तो वहुत ख़ुश होते ल्लफ़-
सोस है कि तुमने भी इस ल्लरसः में ल्लपनी ग़ैरहाज़िरी
से ख़ुश न किया ख़ैर जो कुछ हुल्ला सो हुल्ला ल्लागेको
ऐसा न करना ल्लोर मकान की मरम्मत से ग़ाफ़िल
न रहना ल्लगर कुल रूपिया जो तुम्हारे पास मौजूद है
ख़र्च होजावें तो लाला हज़ारी लाल साहिव महाजन
से ३०) रूपिया ले लेना ल्लोर हमारे नाम लिखवा देना ल्लोर
भाई करम ल्लली साहिवका कोई ख़त हमारे पास न हीं
ल्लाया जो तुम को कुछ हाल उनका मालूम हुल्ला हो
तो हमको लिखना ल्लोर किरायादारों से हमेशः महीना
महीना किराया वसूल करते रहो ल्लगर दो या तीन
महीने चढ़ जावेंगे तो मुशकिल से वसूल होगा ल्लोर
जो शख़्स किराया देने में देर करे उस से तुरत मकान
ख़ाली कराके दूसरे को वसा देना ल्लोर सव छोटे वड़ों
को सलाम दुल्ला कह देना -ज़ियादा दुल्ला लिखा
फ़तेहल्ली ने वनारस से

२६ — श्री चिरंजीव आंख की पुतली नेक बख़्तियों
के सरे हुए सलामत— पीछे दुआ के मालूम हो कि
हाल यहां का अच्छा है और तुम्हारी तन्दुरुस्ती
हर दम चाहता हूं नोट आया नम्बरी २८४५७ सौ
२००) रुपिये का पहुंचा है जिस वक़्त रसीद आजावेगी
आया दूसरा नोट रवानः किया जावेगा जब से कि मैं
तुम्हारे पास से यहां आया हूं जूड़ी ताप ऐसी आती
है कि बग़ैर मदद दूसरे के बैठ उठ नहीं सकता तुमको
चाहिये कि देखते ही इस ख़त के बहुत जल्द हमारा
बक्स जिस में बहुत सी दवाईं वग़ैरः बंद हैं किसी
मोतबर आदमी के साथ रवानः करो कि ज़रूर है
और जो शेख़ हाफ़िज़ अली साहिब ख़ैराबाद से आ-
ये हों तो उनको २५) रुपिये और एक जिल्द दीवान
हाफ़िज़ दे देना और रसीद लेकर हमारे पास भेज
देना और लिखने पढ़ने में कोई ग़फ़लत व सुस्ती न
करना और जो मौलवी साहिब को तनख़्वाह न दी
हो तो कुल तनख़्वाह उनको देकर हमको इत्तिला
करना और उनकी ख़िदमत को अपनी नेक बख़्ती
जानना और जहां तक हो सके हर रोज़ हेडमास्टर
साहिब ज़िला स्कूल से हिसाब वग़ैरः पढ़ लिया
करो और जो वक़्त मदरसः का ८ बजे से १० बजे दिन
का हो तो स्कूल ही में जाकर ख़ूब समझ लिया करो
और हमारी तरफ़ से हर एक भाई बंद को सलाम व

हुआ कहदेना — लिख्खा आमीरचंद २७ अगस्त सन् १८५८ ईसवी —

२७ — श्री चिरंजीव गौरजी आंख के तारे प्यारे ती-लाल जीव ज़ियादा हो धन दौलत तुम्हारी —

पीछे दुआ ज़ियादती उमर और दरजा के मालूम हो कि यहां खैरियत है और तुम्हारी तन्दुरुस्ती हरदम की चाहिये मेरे प्यारे मैं तुम से जुदा होकर खैरियत से जहानाबाद में पहुंचा और लाला अशरफ़ी लाल साहिब से मुलाक़ात की वह बहुत आदर से मिले और तीन दिन तक बराबर ज़ियाफ़त की और अपने दफ़तर में नौकरी का भी उमैदवार किया है खुदा ने चाहा तो ७ या ८ रोज़ में ज़रूर रोज़गार की सूरत हो जावेगी और लाला अशरफ़ी लाल भी यक़ीन है बड़े दिन की तातील में घर आवेंगे मैं भी जहां तक हो सकेगा उन के साथ आऊंगा और मालूम नहीं कि पहलवान जोकि बम्बई जाने वाले थे गये या नहीं अगर न गये हों तो २७) रुपिया उनको देकर बहुत जल्द रवाना करना और कहना कि इन्दौर में जाकर ज़रूर चच्चा साहिब से हमारी खैरआफ़ियत अर्ज़ करें और इन २७) रुपियों में से २०) रुपिया उनके लड़कों को देदें और बाक़ी अपने खरच में लावें और जवाहिर लाल और गया परसाद को हमारा सलाम कहदेना और हमारी खैरआफ़ियत

सबब को दूतरीला करार देना ज़रीदा सिवाय हुक्का उमरा व
दौलत के कहीं लिया जावे लिखा मोहन लाल भूपाल से
२७ शौवाल सन् १२८१ हिजरी · जवाब जिसका भेजना
ज़रूरी है –

सनद

मुख्तार नामा आम

मैं कि आमना बेगम · जोरू नवाब समादुद्दौला
रहमत अली खां बहादुर रहनेवाली इस्माईल गंज
महल्ला · शहर लखनऊ की हूं जोकि मेरे बहुत मुकद्दमे
अवध देश और ज़िले गोरखपुर की कचहरियों में हुआ करते
हैं और मुहब्बो भी मुकद्दमा करना मंज़ूर होता है और
मैं आप परदा में रहने के सबब से किसी कचहरी में पहुंच
नहीं सकती इस वास्ते हाजी महम्मद नासिरुद्दीन को
जोकि हमारा पुराना कारिंदा और जिसका हमको विसवास है
अपनी तरफ़ से मुख्तार आम मुकर्रर करके इकरार
करती हूं और लिखे देती हूं कि मुख्तार नासिरुद्दीन हमारे
सब मुकद्दमों में कचहरी गौरनमेंट बहादुर व चीफ़
कमिश्नर साहिब बहादुर व साहिब कमिश्नर बहादुर व
फ़ैनांशियल कमिश्नर बहादुर व जुडीशल कमिश्नर व
सिविल जज बहादुर व कचहरी तहसील व थाना व
पुलिस व असिस्टंट कमिश्नर बहादुर व डिपटी कमिश्नर
व एक्सटरा आसिस्टंट बहादुर व अदालत फ़ौजदारी
और अदालत दीवानी व फ़ौजदारी बंदोबस्त व रजिस्टरी और

व ख़र्चात व कुल कचहरीयां अवध देश म दीवानी व ये
के ज़िलों के व मुल्क अवध न व रोबकार में जो कुछ पैरवी
व जवाब या कोई अरज़ी नालिश की है या आप मुद्दई
होकर दूसरे शख़्स से मुक़ाबिला करे या कोई सनद देवे
या फेर लेवे या ज़रूरत के वक़्त कोई सनद किसी से
मांगे या किसी अरज़ी पर दस्तख़त करे या कोई
ज़मीन या बाग़ा हमारी तरफ़ से बेचे या गिरो करे या
कोई वकील या मुख़्तार किसी मुक़द्दमा में अपनी
तरफ़ से मुक़र्रर करे या किसी क़दर रूपिया हम को
मिलने वाला ख़ज़ाना से वसूल करे या किसी और
कचहरी से रूपिया डिकरी व रोबकार का लेवे या कोई रसीद
हमारी तरफ़ से लिख देवे और मुख़्तार वास्ते मुद्दई
का किया हुआ हम को अपने किये हुए की तरह क़बूल
व मंज़ूर है और सब काम किया हुआ मुख़्तार का ठीक
होगा इस वास्ते यह मुख़्तारनामा आम लिख दिया
कि आगे को सनद हो और ज़रूरत के वक़्त काम आवे
लिखा तारीख़ १४ मार्च सन १८६७ ईसवी तथा ७
ज़िलक़ाद सन १२८३ हिजरी दिन शुक्रवार दस्तख़त
गवाही व रोबकार का बारे पर दा हाकिम की तरफ़ होना चाहिये
६० मुहर आमना बेगम गवाही ज़ुल्फ़िक़ार अली
गवाह हज़रत अली ख़ां रहने वाले इस मकान के
लेदुसमाईल ख़ां आमना बेगम आमना बेगम साहिबा
बेगम साहिबा

रजिसटरी जो सनद और बैनामा वगैरः की पीठ पर होती है

नम्बर ४८४ व सफ़ा २७६ किताब मुख्तार नामःजात सन १८६७ ईसवी में तारीख २५ मार्च सन १८६७ ईसवी को १० व ११ बजे के भीतर आमना बेगम के अकरबा से व फ़तेह अली खां व ज़ुलफ़िक़ार अली खां कनारे पर लिखे हुए गवाहों की जान पहिचान से और इनही के सामने यह कागज़ रजिसटरी हुआ

मोहर सरिश्तः दसतख़त रजिसटरार शहर

बैनामः गांव का

मैं कि मथुरापरसाद बेटा ललतापरसाद क़ौम कायसथ सकसेना रहने वाला शहर लखनऊ महल्ला पुल मोती लाल का हूं - मैं ने अपनी ज़मींदारी तादादी ।) चार आना मालगुज़ारी मौज़ा निज़ामपुर तहसील व ज़िला लखनऊ मय पुरवा असली व दाख़िली उस के जिस पर मेरा क़बज़ा व दख़ल है अबतक उस में और किसी का हिस्सा नहीं है - जिस के बेचने वग़ैरः का मुझ को इख़तियार है मैं सब हक़ मुनाफ़ा दाख़िली व ख़ारिजी मय कुआं व दरख़त फलवाले व बेफलवाले व आपसे जमे हुए व बाग़ और ताला व और आबादी व सीर वग़ैरः हर तरह की ज़मीन को अपनी तनदुरुसती व ठीक अक़ल बिना किसी की ज़बरदसती बलकि अपनी ख़ुशी से २५००) रुपिया सिक्का चेहरे शाही पर कि

आये उसके ७५०) रुपिया होते हैं मुनशी देवी परसाद साहिब बेटा लाला लालता परसाद साहिब बैकुंठ बाशी के हाथ जो मैंने सगे आई हैं और साही ज़मीदारी माल गुज़ारी मौज़ा निज़ाम पुर के हैं बेचा व बै किया और सब रुपिया ख़रीदार से वसूल पाकर बेची हुई ज़मीदारी पर ख़रीदार का क़बज़ा व दख़ल करा दिया पीछे लिखने इस बैनामः के मुंह को और मेरे वारिसों को उस बेची हुई ज़मीन से किसी तरह का हक़ व दावा नहीं है और न रहा और जिस वक़्त कोई शख़्स दावा करे जवाब देना उसका मेरे ज़िम्मे होगा इन सब बातों का इक़रार करके यह बैनामा लिख दिया कि सनद रहे बसीला रुपिया पाने का बाबत बैनामा के-

बाबत अगले गिरों के	अब नक़द लिये
मुजरा दिया	५००) रुपिया
१०००) रुपिया	

लिखा तारीख़ २६ महीना अपरैल सन १८७४ ईसवी तथा समवत १९३१

रजिसटरी जो सनद की पीठ पर होती है

यह सनद लखनऊ के सब रजिसटरार के दफ़्तर में तारीख़ २७ अपरैल सन १८७४ ईसवी दिन सोमवार को ४ बजे के वक़्त पेश की गई—

दसतख़त साहिब सब रजिसटरार

दसतख्त मथुरा प्रसाद वकील मुख्तार

हुकम ऊपर लिखने इस सनद का और वसूल पाने रुपिया इस के का मथुरा प्रसाद बेटा ललता प्रसाद क़ौम कायस्थ पेशा मुख्तारी व पटवारगीरी रहने वाला लखनऊ महल्ला पुल लाला मोती लाल ने हमारे सामने किया और मथुरा प्रसाद पटवारी शनासा मेरा से मैं खूब वाक़िफ़ हूं —

२७ अप्रैल सन १८७४ ईसवी—

दसतख्त सब रजिसट्रार साहिब

दसतख्त मथुरा प्रसाद वकील मुख्तार

इस सनद की रजिसटरी नम्बर ४३४ स.फ़ा २०६ रजिसटर नम्बर १ के जिल्द २३ में की गई—

२७ अप्रैल सन १८७४ ईसवी

दसतखत सब रजिसट्रार

मोहर सररिश्ता:

सब रजिसट्रार

तसदीक़ का यह नी कालेकटरी—

१० मथुरा प्रसाद बेचनेवाला | गवाही रामानलाल बेटा
वकील मुख्तार | हरप्रसाद रहनेवाला
महल्ला पुल मोतीलाल

गवाही रगधामल

गवाही मनसुख मुक़द्दम सूबा | गवाही फ़तेचंद साकिन पुल
गवाही मूलचंद कायस्थ | मोतीलाल

महकमः कलक्टरी कौनसदीके

जो कि इस बैनामा से अलल अक़्द रखता है —

रकम अगासरा सन् १८७४ ईसवी के मुताबिक मवाफ़िक़
नाम बेचनेवाले का ख़ारिज किया गया और नाम
लेनेवाले का दाख़िल पटवारी और दफ़्तर क़ानूनगो
में लिखा गया और यह सनद नक़ल लिखने के पीछे
ख़रीदनेवाले को दी गई— २० अप्रैल सन् १८७५ ई०

दस्तख़त हाकिम

दस्तख़त सरिश्तेदार

इति

बैनामः हवेली का

हम कि धनपतराय बेटा मूलचंद और बसंतराय बेटा
नानकदास बेटा होतीलाल बेटा मूलचंद— ऊपर लिखे
हुए क़ौम कायस्थ सकनः रहनेवाले खानउ महल्ला
चौक के हैं—

हमने अपनी तनदुरुस्ती में और ठीक अक़्ल से
बिना किसी के कहे सुने और अपनी ख़ुशी से १ क
मकान जोकि उत्तर तरफ़ के कोने में है मय दो कोठरी
दालानी दोनों तरफ़ और आगे उसके दालान उत्तर त-
रफ़ा से किवाड़ दरवाज़ा उसके उत्तर तरफ़ से बंद होगा
मकानात लिखे गये के दक्खिन तरफ़ होंगे वाला ख़ाना
समेत उत्तर तरफ़ का बिना छत का मय कोठरी दालानी
पश्चिम तरफ़ सब पक्की और पानी नाली उसके

लगाव में है और दीवारें चारों तरफ़ की जो महल्ला
में हैं जिनकी हदें नीचे लिखी हैं मेरे क़बज़ा और मिल-
कियत में हैं उसमें से एक पक्की हवेली ख़ास कि जो
हमारे वारिसों की दी हुई है और अब तक उस हवेली
पर बिना किसी के साझे हमारा क़बज़ा चला आता है
सब हद्दों और हक़ों के समेत ३००) रुपिया सिक्का
चेहरेशाही कि आधे उसके १५०) रुपये होते हैं हाथ
मुन्शी सीताराम साहिब बेटा आनन्दराम क़ौम
खत्री उसी महल्ला के रहनेवाले के हाथ बेचा
और बै किया और सब रुपिया ख़रीदार से मारफ़त
मंसाराम साहिब भाई सगे ख़रीदार के वसूल पाकर
बेची हुई चीज़ पर ख़रीदार का क़बज़ा व दख़ल करा
दिया इस बैनामा के पीछे हमको और हमारे वारिसों
को उस बेची हुई चीज़ पर किसी तरह का हक़ व
दावा नहीं है और न रहा और जो कोई इस
बेची हुई चीज़ पर दावा करे तो जवाबदिही उसकी
हम बेचनेवालों के ज़िम्मे होगी इन सब बातों का
इक़रार करके यह बैनामा लिख दिया कि सनद रहे-
बेचे हुए मकानों की चारों हद्दें यह हैं

पूरबीय हद्द	पश्चिमीय हद्द
ज़मीन हरसहाय बेकुंठ	आंगन दीवानख़ाना
वासी के मकान की बेचने	ख़रीदार की और थोड़ी
वाले की दीवार को छोड़कर	ज़मीन बेनपतराय की

દકખિનીય હદદ — ઉતતરીય હદદ

મકાન ખરીદાર કા — ખાસ કર ઝમીન વસંતરાય વ્રજરાય નદાસ વેચનેવાલોં કી વેચી હુઈ દીવાર કો ફકત છોડ કર

વાલા ખાના વેચા ચનપતરાયને — મકાન વેચા વસંતરાય વ્ર નારાયનદાસને

(૩૫) રૂપિયા કા — (૩૫) રૂપિયા કા

લિખ્યા તારીખ ૨૫ મહીના જનવરી સન ૧૮૭૪ ઈસવી તથા સંવત ૧૯૩૦

રજિસ્ટરી ની જો વે નામ: કી પીઠ પર હોતી હૈ
યહ સનદ સબરજિસ્ટરાર શહર લખનઊ કે દફતર મેં તારીખ ૨૬ જનવરી સન ૧૮૭૪ ઈ૦ રોજ સોમવાર કો ૪ બજે કે વક્ત પેશ કી ગઈ—

દસ્તખત સબરજિસ્ટરાર સાહિબ

દસ્તખત ચનપતરાય — દસ્તખત વસંતરાય — દસ્તખત નરાયનદાસ

ઇસ સનદ કે લિખને કા ઔર વસૂલ પાને રૂપિયા ઉસકે કા ચનપતરાય બેટા મૂલચંદ ઔર વસંતરાય વ નરાયનદાસ બેટે હોની લાલ કૌમ કાયસ્થ પેશ: નૌકરી રહને વાલે શહર લખનઊ મહલ્લા ચૌકને હમારે સામને ઇકરાર કિયા ઔર બહાદુરમલ બેટા ગંગારામ કૌમ બનિયાં પેશ: લેન દેન રહને વાલા ઉસી

म हल्ला के ओर मोहनलाल वे दाफुलासराय
क़ौम काय स्थ पटवारी रहने वाला मोज़ा दतियापुर ग्रा
विणओर ज़िला लश्नक सनद के करारे पर लिख्ये
हुये गवाहों ने उनके पहिचान की गवाही दी और
पटवारी मोहन लाल को हम खुद जानते हैं २६ जनवरी
सन् १८७६ ईसवी बक़लम मेहदीअब्बास मुहर्रिर

दसख़त सवरजिसटरार

साहिब

दसख़त दसख़त दसख़त

धनपतराय वसंतराय नारायनदास

द० वहादुरलाल द० मोहनलाल पटवारी

गवाही वहादुरमल वक़लम खुद

गवाही नथेमल वनिया गवाही लछिमन सहाय क़लम

गवाही मोहनलाल वक़लम खुद खुद

द० सवरजिसटरार

इस सनद की रजिसटरी नम्बर १०० सफ़ा २८५

रजिसटर जिल्द २२ में कीगई

द० सवरजिसटरार

लिख्या २६ जनवरी सन् १८७६ ईसवी

मोहनसर्विशनः

वैनामा

मैं कि महम्मद इसमाईल वेटा महम्मद इवराहीम वेटा
महम्मद हयात रहने वाला शहर लखनऊ महल्ला
गोला गंज थानः वजीर गंज का हूं —
जो कि एक ज़मीन जिसका नाम हाता मकान शमशुद्दीन

का दी हुई मरकार मे घोड़सार कचची व बंगला
फूस का ६ बिगहा समेत व दीवारें कचची मय सव
हको हाथिल्ली व पारखी जो महलला सन्नादत
गंज में हैं कि ल्नाण तके त्रिना साहा दूसरे शख्स
के मेरे कवजा व दख्अल में मोजूद हैं जिसकी चौगी
हद्दें यह है—

पूरवीय हद्द — पशचमीय हद्द
चलनू रासता — महमम्मद वख्शखानसामां
का मकान व सीता राम
कुमहार व चलनू रासता

दकखिनीय हद्द — उतरीय हद्द
सड़क व चलनू रासता — वाग महमम्मद रजा खां
उसको अपनी रजहुरसती और ठीक अकलके
वक्त में विना किसी के कहे सुने व विना जवरदस्ती
किये ३०) रुपिया सिकका चेहरः शाही परकि आधे
उसके १५०) रुपिया होते हैं हाथ मुनशी देवीसहाय
साहिब बेटे मुनशी राम सहाय साहिब डिपटी कलेक्
टर वहादुर रहनेवाले महलला यहिया गंज के
बेचा और बेकिया और रुपिया बेची हुई चीज
का खरीदार से एकठहा वसूल पाकर अपने खरच
में लाया और कवजा अपना उस बेची हुई जमीन
से उठाकर कवजा खरीदार का कराहिया अव मुझ
को दावा इस बेची हुई जमीन में बाक़ी नहीं रहा जो

અગર કોઈ મેં યા મેરે વારિસ દાવા કરેં તો ઝૂઠ હો ઇસ વાસ્તે યહ બેનામા લિખ દિયા કિ સનદ રહે ઔર જરૂરત કે વક્ત કામ આવે લિખ્યા ૨૫ અકતૂબર સન ૧૮૭૨ ઈસવી—

દસ્તખત મહમમદ	ગવાહી દેવી દયાલ બેટા
ઇસમાઈલ વકીલ મજકુર	દીનદયાલ વકીલ મજકુર
ગવાહી રહમત અલી	ગવાહી મહમમદ બાકર બેટા
બેટા હશમત અલી	જાફર અલી વકીલમ દેવી
રહનેવાલા મહલ્લા	દયાલ ઉમર ૫૩ બરસ
સઆદત ગંજ	નિશાની હાથ કી ૨
ગવાહી ઉમેદરાય બેટા	ગવાહી સાદિક અલી
ચનપતરાય રહનેવાલે	વકીલ ઉમેદરાય
મહલ્લા ચોક ઉમર	નિશાની હાથ કી
૬૩ બરસ	

રજિસ્ટરી

યહ સનદ કચેહરી સાહિબ બહાદુર રજિસ્ટરાર શહર લખનઊ મેં રોજ મંગલ તારીખ ૨૫ અકતૂબર સન ૧૮૭૨ ઈસવી ૩ વ ૪ બજે કે ભીતર રજિસ્ટરી કે વાસ્તે પેશ હુઈ—

દ૦ સાહિબ રજિસ્ટરાર	દ૦ મહમમદ ઇસમાઈલ વકીલ મજકુર

મુહમમદ ઇસમાઈલ પેશા જમીંદારી બેટા મહમમદ ઇબ્રાહીમ કૌમ શરીફ રહનેવાલે ગોલાગંજ મહલ્લા શહર લખનઊ

और लिखनेवाला उमर ६० बरस गोरा रंग आंखें छोटी
न बड़ी डाढ़ी और मोछ सफ़ेद व सियाह हुवा बदन
मथथा चौड़ा और ऊंचा है और कुल तहरीर इस सनद
के पाने का अक़बाल किया और लिखनेवाले को हम
ख़ुद पहिचानते हैं लिखा १५ अकटूबर सन १८७२
ईसवी इस सनद की रजिस्टरी नम्बर १००० सफ़ा ५५
रजिस्टर नम्बरी एक की जिल्द २२ में की गई लिखा
१५ अकटूबर सन १८७२ ईसवी द० रजिस्टरार

द० मुहम्मद इस्माईल   द० रजिस्टरार
वकील मख़ुद   मोहर सररिश्तः साहिब
रजिस्टरार शहर लखनऊ

बैनामा

मैं कि कन्हैया लाल बेटा छोटे लाल कौम खत्री
रहनेवाला लखनऊ महल्ला साद: कतरान का हूं
मैंने अपनी तन्दुरस्ती व ठीक अक़ल में बिना किसी
के सिखाये व बिना ज़बरदस्ती अपनी ख़ुशी से एक
हवेली पक्की पूरब व पश्चिम तरफ़ मय तमामी
मकानात व उत्तर पूरब तरफ़ के सेहदरे व दो कोठरी
वाली व दक्खिन पूरबी कुआं पक्का व दो दरवाज़ा
एक तरफ़ पूरब के दूसरा पश्चिम तरफ़ को व ज़मीन
उसकी तादादी २७० गज़ लम्बाई व चौड़ाई पूरब व
पश्चिम व दक्खिन की जोकि महल्ला पुल मोती-
लाल में है और हदें उनकी नीचे लिखी हैं जिस पर

मेरा क़ब्ज़ा चला आता है और उसको बेच सकता हूं
हद्दें मअ हक़ूक़ों समेत मुनाफ़ा दाख़िली व ख़ारजी
५५०) रुपिया सिक्का चेहरः शाही परकि आधे
उसके २७५ रुपिया होते हैं हाथ मुनशी सदासुखलाल
साहिब बेटे मुनशी चंदनलाल साहिब क़ौम कायस्थ
रहने वाले शहर लखनऊ महल्ला चौक के बेंची और
बेकी और कुल रुपिया ख़रीदार से वसूल पाकर हवेली
को बेचा है ख़रीदार का क़ब्ज़ा बेदख़ल करा दिया इस
बैनामा के लिखने के पीछे मुझको और मेरे वारिसों
को उस बेची हुई हवेली में किसी तरह का हक़ और दावा
नहीं है और अगर हम और कोई दावा करे तो जवाबदिही
उसकी मुझ बेचनेवाले के ज़िम्मे होगी इन सब बातों
का एक़रार करके बैनामः लिखि दिया कि सनद रहे
बेची हुई हवेली की चारों हद्दें शिवाला को छोड़कर

पूरबी हद्द	पश्चिमी हद्द मकानों के
चलतू रास्ता	ख़ानेका रास्ता
दक्खिनी हद्द	उत्तरी हद्द हवेली
चलतू रास्ता	सैयद अहमद हसन की

लिखा २२ दिसम्बर सन् १८७० ईसवी तथा सम्वत्
१९२७

रजिस्टरी कनहैयालाल

यह सनद सब रजिस्टरार शहर लखनऊ के दफ़्तर
में तारीख़ २२ दिसम्बर सन् १८७० ईसवी दिन

બિરહસપતિ કો ૨૨ વળે કે વ઼ક઼્ત પેશ કી ગઈ—
દ૦ સરરિશ્તદાર સાહિબ દ૦ કન્હૈયાલાલ
લિખને ઇસ સનદ ઔર વ઼સૂલ પાને રૂપિયા બેચી કા
કન્હૈયાલાલ બેટા છોટેલાલ ક઼ૌમ ક્ષત્રિની પેશઃ-
નૌકરી રહનેવાલા શહર લખ્નઊ મહલ્લા સાદઃ
કારાન ક્ષણાનચી નિશાનત ઝિલઃ રાયબરેલી ને
હમારે સામને ઇક઼રાર કિયા ઔર બેચને વાલે કો હમ
આપ જાનતે હૈં—
આખ઼િર સતર ઇસ સનદ મેં લફ઼્ઝ઼ આકૂબર કા કટા
હુઆ હૈ ઔર લફ઼્ઝ઼ દિસમ્બર પીછે કો લિખાગયા
હૈ ઔર ઉસકે નીચે દસ્તખ઼ત મેરે મૌજૂદ હૈ- લિખા
૨૨ દિસમ્બર સન્ ૧૮૭૦ ઈસવી-
દ૦ કન્હૈયાલાલ દ૦ સરરિશ્તદાર સાહિબ
ઇસ સનદ કી રજિસ્ટરી નમ્બર ૧૦૮૩ સફ઼્હ ૩૬૪
રજિસ્ટર નમ્બર ૨ક કી જિલ્દ ૧૨ મેં કીગઈ લિખા
૨૨ દિસમ્બર સન્ ૧૮૭૦ ઈસવી-
દ૦ સરરિશ્તદાર સાહિબ
મોહર સરરિશ્તઃ સરરિશ્તદાર
બૈનામા
હમકિ મિરજ઼ા મહમ્મદ હુસેન વ મિરજ઼ા જ઼ાકિર
હુસેન વ નવવાસીયાનમ્ ઔલાદ આગા મહમ્મદ
બાક઼ર મિસાલદાર રહનેવાલે મહલ્લા નિવાજ઼ગંજ
કે હૈં—

जोकि एक हाता मकान का था मय खपरैल व कुल्ल सत वल मय खपरैल और एक दूसरा खपरैल और दिवारें नीचे लिखे हुए जोकि महल्ला गोला गंज थानः वजीर गंज में है सरकार का दिल्ला हुआ माता की तरफ से जो कि पहली जोरू मेरे बाप की ने माता मेरी को देदिये थे और आज तक वे साहेब दूसरे शख्स के कब्जः मेरे से चले आते हैं जिसकी चारों हद्दें ये हैं—

पूरबी हद्द	पश्चिमी हद्द
चलतू रास्ता	वे चलतू रास्ता व थोड़ी दीवार जिमीनाम सुनार
दक्खिनी हद्द	उत्तरी हद्द
चलतू रास्ता	बागानबाब अमीर मिरजा साहिब बिहिश्तवासी

सो हाता व मकान व अस्तबल व दिवारें गैरः को अपनी तन्दुरुस्ती व ठीक अकलके व बिना किसी कीजबरदस्ती अपनी खुशी से चार सौ ४००) रुपिया पर कि आधे उसके २००) रुपिया होते हैं मुनशी हजारी लाल साहिब बेटा मुनशी राम परसाद साहिब डिपटी कलेक्टर बहादुर रहनेवाले महल्ला चौक के हाथ बेचा व बेकिया और रुपिये बेंच का सब दुकट्ठा खरीदार से व सूरत पाकर बेची हुई चीज पर खरीदार का कब्जः करादिया और अब हम को और हमारे वारिसों को किसी तरह का दावा बेची हुई चीज या बेच के रुपिया

को खरीदार से नहीं है जो आगे को मैं या मेरे वारिस
या वारिस बेची हुई चीज़ के या बेच के रुपिये के दावा करें
तो दावा उनका हाकिम अदालत के सामने रद्द हो और
अलावह इसी हम बेचनेवालों के ज़िम्मे है खरीदार
से कुछ वास्ता नहीं है इस वास्ते यह पुरा बैनामा
इसटैम्प के कागज पर लिख कर रजिस्टरी की गवाही के
मुवाफ़िक़ करार दी कि आगे को सनद हो और ज़रूरत
के वक़्त काम आवे बेचा बेचे हुये बिरवन का—

बिरवा नीम के ३ बिरवा लसोड़ा के २
बिरवा बेर का १ बिरवा अमरूद का छोटा १

लिखा २६ अक्तूबर सन् १८७२ ईसवी

रजिस्टरी

यह सनद कचेहरी सब रजिस्टरार बहादुर शहर लखनऊ
में रोज़ मंगल तारीख २६ अक्तूबर सन १८७२ ईसवी
१ व २ बजे के भीतर रजिस्टरी के वास्ते पेश हुई—

द० सब रजिस्टरार द० मिरज़ा महम्मद हुसेन

मिरज़ा महम्मद हुसेन पेशः नौकरी बेटा आगा महम्मद
बाक़र क़ौम शानीफ़र रहनेवाले मुहल्ला नेवाज़गंज
और लिखनेवाला इस सनद का उमर २५ बरस
गोरा रंग आंखें बड़ी दाढ़ी और मोछ सियाह
क़द ५ फ़ुट ५ इंच है और मिरज़ा इनायत हुसेन
पेशः नौकरी बेटा महम्मद हुसेन क़ौम शानीफ़र
लिखनेवाला इस सनद का उमर १८ साल गोरा

ंगा ल्ओंपैं वड़ी नडाढ़ी न मोछ डील धूकुद १ इंच है ल्औन ल्अवदवासी ख़ानम पेशः ऊपन लिख्याकुल्ला वेटी ल्आग़ा मुहम्मद वाक़न क़ौम शरीफ़ नहने वाली नेवाळगंळ ल्औन इस सनद को लिख्यने वाली उमन २३ वनस पनदानशीन है तीनों लिख्यने वालों इस सनद ने इस सनद के लिख्यने से हनफ़ वहनफ़ सुन के एक़ वाल किया ल्औन ४००)नूपिया नक़द हमान सामने वसूल पाया ल्औन मुहम्मद ल्अली ख़ां पेशः ळमीदानी वेटा हसन ख़ां का क़ौम पठान नहने वाला महल्ला महमूद नगन शहन लख्यनऊ का ल्औन अमिया डोमिन वेटी नाम दीन क़ौम डोम नहनेवालीहाता फ़क़ीन मह ममद ख़ां महल्ला शहन लख्यनऊ ने तीनों सनद लिख्यने वालों की पहिचान की ल्औन लिख्ये हुए ग़वाहों की पहिचान ल्आग़ा मुहम्मद वाक़न पेशः ळमीदानी वेटा ल्आग़ा मुहम्मद ळामिन क़ौम शनीफ़ नहने वाले नेवाळगंळ महल्ला शहन लख्यनऊ ने की ल्औन इस सनद के लिख्यने वाले को हम ल्आप ळानते हैं-लिख्या गई ल्आ कतूवन सन १८७२ ईसवी

द० मिनळा मुहम्मद हुसेन | द० मिनळा इनायत हुसेन
बक़लम ख़ुद

द० ल्अवदवासीख़ानम | द० अमिया डोमिन के दान-

ડોમિન નિશાની હાથ કી
વકીલ મહમ્મદ ઓલીયા

૬૦ આગા મહમ્મદ
વાકીર વકીલ મધુદ

દુસ સનદ કી રજિસ્ટરી નમ્બર ૨૦૫૨ સફા ૩૭૧
રજિસ્ટર નમ્બર ૧ કી જિલ્દ ૨૨ મેં કી ગઈ—
લિખા ૨૮ અકતૂબર સન ૧૮૭૨ ઈસવી
૬૦ સબ રજિસ્ટરાર મોહર સબ નિશાન
સાહિબ સબ રજિસ્ટરાર સાહિબ

બૈનામા મકાન કા

મૈં કિ હુલાસી બેટી નનહેમલ ઝોહ કાલકા—
પરસાદ બેટા કામતા પરસાદ કૌમ બિરહમની
ગૌડ રહને વાલી શાહજહાંપૂર મહલ્લા ચોક કી હૂં
મૈં ને તનદુરસ્તી ઔર ઠીક અકલ કે વક્ત મેં
બિના કિસી કી જબર દસ્તી બલ્કિ અપની ખુશી
સે એક હિસ્સા જમીન તાદાદી ૨૬૮ ગજ અંગ્રેજી
ગજ સે જો ઉસી મહલ્લા મેં હૈ જિસ કી હદ્દેં નીચે
લિખી હૈં ઔર મેરા કબજા ચલા આતા હૈ જો કિ
મેરે મરદ ઔર બેટે કા હિસ્સા હૈ બિના સાઝે કિસી
દૂસરે કે ઔર ઉસકે બેચને કા મુઝ કો ઇખ્તિયાર હૈ
મય સબ હકોં સુનાયશ દાખિલી ઔર
ખારજી કે ૨૫૦) રૂપિયા કલદાર ચેહરે શાહી પર
કિ આધે ઉસકે ૧૨૫) રૂપિયા હોતે હૈં લછિમન પરસાદ

व मंगली परसाद व मोहन लाल बेटे लाला हर-
परसाद कौम कायस्थ सकसेना रहनेवाले उसी
महल्ला के हाथ बेचा और बै किया और सब
तुफिया खरीदार से वसूल पाकर चीज़ बेची हुई पर
खरीदार का कबज़ा करा दिया इस बैनामा के लिखने
के पीछे मुझ को और मेरे वारिसों को इस बेची हुई
चीज़ में और तुफिया बेच के पाने में किसी तरह का
दावा और मांगा जांच नहीं है और न रहा और
जब कोई हिस्सादार दावा करै तो जवाबदिही मेरे
ज़िम्मे होगी इन सब बातों पर इकरार करके यह
बैनामा लिख दिया कि सनद रहै और वक़्त पर
काम आवै—

विवरा— हिस्सा ज़मीन का

१७८ गज़ ८ गिरह अंगरेज़ी गज़ से-
१० गज़ ८ गिरह मिनहाई उत्तर के कोने की तरफ़
अरज़ १ गज़ १२ गिरह लम्बाई पूरब व पश्चिम
तरफ़ ६ गज़ जिस पर कबज़ा चंद्रिका परसाद नाई
का है १६८ गज़ ज़मीन बेची हुई अंगरेज़ी गज़ से
सिवाय विवरा नीचे के जो बैनामा से अलग है हिस्सा
पश्चिमीय खरीदार की हवेली के पास ८७ गज़-

अरज़ पूरब पश्चिम	तूल उत्तर दक्खिन
६ गज़	१४ गज़ ८ गिरह

(२) हिस्सा नीचे हवेली बैजनाथ बुधसेन बनिया

दखू गज़ दखिनह

अरज़ ६ गज़ लम्बाई ६ गज़ दखिनह

पूरब ८ गज़ पश्चिम १० गज़

(३) हिस्सा दक्खिनीय नीव के बिरवा के नीचे कि बेचने वाली इस हरवान को काट लेवेगी - ६ गज़

अरज़ पूरब पश्चिम २ गज़ लम्बाई ३ गज़

पूरबीय हद्द	पश्चमीय हद्द
दीवान बकाकी हवेली बेणनाथ व बुधसेन बनियों की	नाथ धन खत्री दान की हवेली का
दक्खिनीय हद्द	उत्तरीय हद्द
गोकुल चंद बिरहमन की हवेली के आने जाने की ज़मीन	चंदिका परसाद नाई के मकान की दीवार

लिखा तारीख २४ महीना जुलाई सन् १८६४ ई०

तथा समवत १९२१-

६० हुलासी बेचनेवाली के	गवाही गुलज़ारी लाल
गवाही दूनापित खां	गवाही मीर मेहर अली
गवाही फरचंद अली	गवाही भवानी वेदा मोहन
वकलम खुद	कोम वानी
गवाही पुरानलाल	गवाही +
गवाही कल्लू मल वानी	

इस बैनामा की रजिस्टरी

आज सोमवार के दिन १ अगस्त सन १८९४ ईसवी
को २ बजे फुलासो बेचनेवाली ने आप इस कचहरी
रजिस्टरी शाहजहांपुर में हाज़िर होकर इस बैनामा
को जिसके किनारे पर है गवाही - गुलजारीलाल व
इनायत ख़ां व मीर मेहर अली व फ़तेचंद अली व
पुरतन लाल व भवानी व कल्लूमल बारी की लिखी
है मय नक़ल इस बैनामा की वास्ते करने दस्तख़त
रजिस्टरी के पेश किया और जोकि इस बैनामा में
लिख्या हुआ है ज़बानी कहा कि ठीक है बेचनेवाली से
पूछा गया कि बिनामे में तो तीन हिस्सा लिख्ये हैं और
इस बैनामा के ऊपर एक हिस्सा लिख्या है इसका क्या
सबब है जवाब दिया कि हिस्सा बेची हुई ज़मीन का
एक है लेकिन तीन जगह नाप कर तीन हिस्सा बैनामा
में लिख्ये गये हैं और मीर मेहर अली बेटा मीर अन-
वर अली बेटा सैयद हशमत अली क़ौम से सैयद
साठ बरस की उमर पेशा नौकरी पड़ोसी बेचनेवाली
के और कल्लूमल बेटा बीबामल बेटा फ़तेचंद
क़ौम बारी उमर ३४ बरस पेशा मशाल्लाल दियाने का
रहनेवाला शाहजहांपुर महल्ला चौक दो गवाह
किनारे पर लिख्ये हुये ने फुलासो बेचनेवाली की
सूरत पहिचानने पर और बेच की असलियत पर
हलफ़ से रेकद ५ सन १८९४ ईसवी के गवाही दी इस

वासते नक़ल इस बैनामा की किताब बैनामा की नक़लें जिसमें होती हैं जिल्द ५ में सफ़ा ३२४ सन १८६४ ई० के नम्बर १२३५ पर लिख्या के तीन वर्क़ इस बैनामा की रजिस्टरी के दस्तख़त करके तैयार किये और हुकम हुआ कि रसीद लिख्या के हुलासो बेचनेवाली को हवाले कर दिया जावे—

और मालूम हो कि इस बैनामा में एक गवाह शाहदी है

मोहर सरिश्ता   द० रजिस्टरार साहिब

रसीद बैनामा

मैं कि अबदुल रहिमान रहनेवाला महल्ला फ़िरंगी महल्ले शहर लखनऊ का हूं — जो कि मैं ने सब ज़मीन जिसका कि मैं मालिक था और मेरे क़बज़ा में थी— और सरकार की दी हुई जिसकी चारों हद्दें यह हैं—

उत्तरीय हद्द वज़ीर मिरज़ा साहिब के दरवाज़े का छोटा बाग़	पूर्वीय हद्द चलतू रासता
पश्चमीय हद्द मकान ख़ान सामां व कुम्हार व पीछे असतबल	दक्षिनीय हद्द चलतू रासता

उन पेड़ों समेत जो कि उस में मौजूद हैं और रुपया घोड़सार व रुपया बंगला ३००) रुपिया को कि आये उस के २५०) रुपिया होते हैं लाला मथुरा—

परसाद साहिब बेटा मुन्शी रामदयाल साहिब सरिश्तेदार कचेहरी कलेक्टरी के हाथ बेचा और बेचिया और पुरा रुपिया वधाला की तारहसेलाल मथुरापरसाद साहिब से वसूल पाकर अपने कबुजा में लाया इस वास्ते यह रसीद लिख दी कि आगे को सनद होतानी पर रहे अपरैल सन् १८७२ ईसवी-

द० अबदुल रहमान गवाही इनायत हुसेन

बक़लमखुद

गवाही पुनतूलाल गवाही लछिमीनरायन

रसीद

मैं कि अबदुल अज़ीज़ बेटा मिरज़ा इलाहीबख़्श साहिब क़ौम मुग़ल रहने वाला लखनऊ हाता मीर मुहम्मद साहिब का हूं -

जोंकि ८८॥) कि आधे उसके ४४।=) होते हैं बाबत एक तलवार की क़ीमत के जनाब बाबू रघुबर दयाल साहिब सरिश्तेदार महकमा वाकिमासदनी से मारफ़त चंद ख़ां का निन्दा बाबू रघुबरदयाल साहिब को वसूल पाये अब कोई हक़ वा मेरा बाबत क़ीमत उस तलवार के ज़िम्मे बाबू साहिब के बाक़ी नहीं रहा इस वास्ते यह रसीद लिख दी है कि सनद रहे और काम आवे - गवाही फ़तेहअली

द० अबदुल अज़ीज़ गवाही ख़ुदाबख़्श तारीख़ २६

बक़लमखुद - टिकट -) अपरैल सन् १८७२ ईसवी -

रिहननामा मकान

मैं कि मंगने ख़ां बेटा नथ्थू ख़ां रहने वाला मुहल्ला यहियागंज शहर लखनऊ का हूं— जो कि एक मकान कच्चा व पक्का उसी महल्ला में जिसका कि मैं मालिक हूं और मेरे क़ब्ज़ा में है उसमें किसी का साझा नहीं है उसकी चारों हद्दें यह हैं—

पूरबी हद्द	पश्चिमी हद्द
दीवार मसजिद	दीवार मकान मुनशी फ़क़ीर बख़्श साहिब
दक्खिनी हद्द	उत्तरी हद्द
उसी मकान की दीवार मुनशी फ़क़ीर बख़्श के मकान से मिली हुई	उसी मकान की दीवार रास्ते से मिली हुई व

अब उसको अपनी ख़ुशी से ४०) रुपिया सिक्का चेहरेदार पर कि आधे उसके २०) रुपिया होते हैं लछिमिनियां जोरू सीतल परसाद बेगमगंज की रहने वाली के पास दो साल के वादे पर गिरो किया और जिस वक़्त कि रुपिया गिरो का वसूल पाऊं उसी वक़्त उस मकान पर गिरो रखने वाली का क़ब्ज़ा करा दिया और किराया उसका गिरवी के रुपियों के मुनाफ़ा पर गिरो रखने वाली को छोड़ दिया और इस मकान के गिरो पड़े की मरम्मत मेरे ज़िम्मे है इक़रार यह है कि वादे पर छुड़ा लूंगा और उस वादे के गुज़रने छुड़ाने

का इख्तियार सिवाय इसके नहीं है कि नालिश वाकी
रा दा तक का ल्नदा करूं इस वासते यह गिरवीनामा
लिख्य दिया कि सनद रहे ओर वक्त ज़रूरत के काम
आवे—

६० मंगने थ्यां	गवाही पीर अली वेटा
	नूरमहममद ताजा टिकैत-
	राय की बाजार का रहने वाला
गवाही लछिमन सिंघ·	गवाही विलायत अली वेटा
वेटा मंगली सिंघ·	करामत अली पाटे नाले का
कालिकाजी का रहने	रहने वाला निशानी उसकी
वाला निशानी हाथ की (	(

तारीख़ ३ नवमबर सन १८६५ ईसवी—

रिहननामा मकान

मैं कि जहूर हसन वेटा मुहममद हसन कोम शेख्य
पेशा दलाली रहनेवाला महल्ला पाटा नाला
का हूं
ज्योंकि एक मकान पक्का व कच्चा महल्ला पाटा
नाला में है ओर उसकी चारों हद्दें यह हैं—

पूरवीय हद्द	पश्चिमीय हद्द
करीम शाह की पुरानी	वेचलतूरासता-
नकिया की दीवार	
दकष्यिनीय हद्द	उत्तरीय हद्द
पंडित मनोहरलाल की·	उसी मकान की दीवार-
दीवार	

મિલી હુઈ ચલનૂ રાસ્તા વ દરવાજા

જિસ કા કિ મૈં માલિક હૂં ઔર ઉસ પર
કબજા મેરા હૈ અપને જી સે બિના કિસી
કી જબર દસ્તી જરૂરત સે ૩૫૦) રૂપિયા
સિક્કા ચેહરેદાર પર કિ આધે ઉસકે ૧૭૫)
રૂપિયા હોતે હૈં મુનશી રજબ અલી વલદ શેખ
રહમત અલી મૈંને રહન કે વાસ્તે ગિરો રખ્ખા
ઔર સબ ગિરવી કા રૂપિયા મુનશી સાહિબ
સે વસૂલ પાકર કબજા કરા દિયા ઇકરાર
યહ હૈ કિ એક સાલ પીછે છુડા લૂંગા ઔર
જો વાદા કે અન્દર છુડાઊં તો ૩) રૂપિયા
મહીના કે હિસાબ સે સાલ ભર કા કિરાયા
ગિરવી કે રૂપિયે મેં મિલાકર એકહી સાથ
અદા કરૂં ઔર જો વાદા હો જાવે તો મુનશી
સાહિબ કો ઇખ્તિયાર હૈ કિ અપના રૂપિયા
ઉસી મકાન સે નાલિશ કરકે વસૂલ કરેં
ઔર મરમ્મત જરૂરી મકાન કી મેરે જિમ્મે
હૈ અગર ગિરો રખ્ખને વાલા અપને પાસ સે
મરમ્મત કા ખરચ દે તો ભી મરમ્મત કા
રૂપિયા ઔર ગિરો કા રૂપિયા જોડ કર અદા
કરૂંગા ઔર મકાન કા કિરાયા ગિરવી કે
રૂપિયા કે મુનાફા પર ગિરો રખ્ખને વાલે કો

माफ़ कर दिया और जो मकान में मैं आप रहूंगा तो किराया भी
माहवारी के हिसाब से देता रहूंगा कुछ उज्र न करूंगा सो
ये चिह्न नामा लिख दिया कि सनद रहे और वक़्त
ज़रूरत के काम आवे—

लिखा २६ सफ़र उल् मुज़फ़्फ़र सन् १२७७ हिजरी

इक़रारनामा

मैं कि अली बख़्श बेटा सालार बख़्श रहने वाला महल्ला चौधरानी का हूं—

जो कि मेरा विवाह ख़ैरातन बेटी करीमुद्दीन ख़ां के साथ हुआ है सो दिल जमई करीमुद्दीन ख़ां साहिब के वास्ते इक़रार करता हूं और लिखे देता हूं कि ख़ैरातन को रोटी कपड़ा देने में और भाई बिरादरी में आने जाने से किसी तरह कोई भांति की कमी न करूंगा और बुरा न करै जो ख़िलाफ़ इस इक़रार के करूं तो अदालत और पंचों का गुनहगार हूंगा और मेरे भाई बिरादरी जिन की मुहरें नीचे लिखी हैं ख़ैरातन के रोटी कपड़े के ज़िम्मेदार होंगे सो यह बातें इक़रार नामा की तरह लिख दिया कि सनद रहे और वक़्त पर काम आवै—

तारीख़ २२ रबी उल् अव्वल सन् १२६२ हिजरी दिन बिरहसपति—

हम सब लोग भी ख़ैरातन के
रोटी कपड़ा के ज़िम्मेदार हैं—

द० फ़िदा अली	द० सैयद अली	द० हुसैन अली
वकलम खुद	वकलम खुद	वकलम खुद
द० महबूब बख्श	द० अल्ला बख्श	
वकलम फ़िदा अली	वकलम खुद	द० अली बख्श २२७१
गवाही रहीम बख्श	गवाही मुहम्मद बख्श १२७०	गवाही रसूल बख्श २२६७

रिहन नामा

मैं कि शेख करीम उल्ला बेटा शेख रहीम उल्ला उमर लगभग ५० बरस रहनेवाला महल्ला चौधरी शहर लखनऊ का हूं —

एक मकान पक्का व कच्चा जोकि महल्ला चौधरी में है बिना किसी के साझे व झगड़े के अब तक मेरे कब्ज़ा में है और उसकी चारों हद्दें ये हैं सो अब उसको अपने जीतेजी बतन हुसती और आकल ठीक के ज़बर बिना किसी के सिखाये बहकाये इसतौर के ५०) रुपिया सिक्का चेहरेशाही यानि आधे जिसके २५) रुपिया होते हैं शेख खुदा बख्श बेटा शेख साहुल्ला मैंने हुज़ूर के हाथ [illegible] के वादे पर गिरो रक्खा और जो गिरो रखनेवाले से सब गिरवी का रुपिया वसूल पाकर उसका कब्ज़ा गिरवी का ऐसा करा दिया [illegible] है कि जिस वक्त ब्याज [illegible] हो जायगा उसी वक्त छुड़ा लूंगा और जो बादा के बीच में गिरो रखनेवाले को अपने रुपिया की ज़रूरत होगी तो

કિયા કિસી ઝગડે યા બહાના કે ઉસી મકાન કો દૂસરે
આદમી કે પાસ ગિરો કરકે સબ રૂપિયા એક હી દફા મેં
દે દૂંગા લેકિન ઐસા કરને મેં આ આ પડરા જુસ્લેપર
મહિસરની ગૈર ઃકા ગિરો કરનેવાલે કે ઝિમ્મે હોગા
ઔર ટૂટે ફૂટે કી મરમ્મત મૈં આપ કરતા રહૂંગા ઔર
સૂદ કી જગાહ પર ગિરવી રખનેવાલા મકાન કા કિરાયા
લિયા કરે ઔર જો કરાર કે મુવાફ઼િક઼ન કરૂં તો ગિરો
કરનેવાલે કો ઇખ્તિયાર હૈ કિ સરકાર મેં નાલિશ કરકે
ઉસી મકાન સે રૂપિયા અપના વસૂલ કરલે મુઝ કો ઔર
મેરે વારિસોં કો કુછ હીલા વ ઉજ઼્ર કરાર ન હોગા ઇસ વાસ્તે
યહ ગિરો નામા લિખ દિયા કિ સનદ રહે ઔર જ઼રૂરત કે
વક્ત કામ આવે —

૧૦ અલામત નિશાની	ગવાહી મીર અમીર અલી
શેખ કરીમુલ્લા	કટરા તૂતુરાવજાં કે રહનેવાલે
ગવાહી ચુન્ની મુહલ્લા-	મૈં ગિરો રખનેવાલે કો જાનતા હૂં
દાર રહનેવાલા કૂચા	મારફત મીર ચપરાસી વકીલ
હુજ્જામ ઉમર ૪૪ વરસ	ખુદ
ગવાહી ઝુજ્જૂ ઉમર	હમ ને સામને લિખનેવાલે ને
લગભગ ૪૫ વરસ	નિશાની અપને હાથ સે બનાઈ હૈ

ચારોં હદ્દેં

પૂરબ હદ્દ	મીર અમીર અલી વકીલ
દીવાન મકાન વ ચબૂતરા	ખુદ
રાસ્તા	

पश्चिमी हद्द — चुन्नी महल्लेदार लखनामती
चलतू रास्ता — निशानी खुद ८
दक्खिनी हद्द — उत्तरी हद्द
पडे हुए खंडहर की — चलतू रास्ता व दीवार मकान
ज़मीन से मिला हुआ — व दरवाज़ा
लिखा २४ तारीख नवम्बर सन् १८७० ईसवी दिन
बिरहसपति—

रजिस्टरी

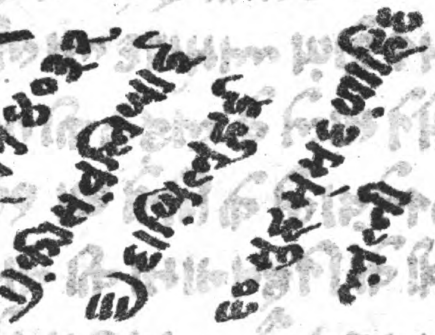

आज २४ नवम्बर सन् १८७० ईसवी को ३ व ४ बजे
दिन को शेख करीमुल्ला मौजूद थे व मीर अमीरअली
व हुसेनी महल्लादार गिरी करनेवाले को पहिचानते
हैं यह रजिस्टरी नम्बर १६८१ व सफ़हा २६ किताब
१ जिल्द नामों वाली सन् १८७० ई० में लिखी गई—
ह० डिपटी रजिस्टरार साहिब

मोहर सरिश्ता:
साहिब रजिस्टरार

आज २४ नवम्बर सन् १८७० ईसवी को फ़ीस ॥) लेकर
नक़ल रजिस्टरी नामा लिखने वाले को दी गई—
ह० डिपटी रजिस्टरार साहिब

रिहननामा

मैं कि ताज मुहम्मद ख़ाँ बेटा कमर ख़ाँ रहने वाला मुहल्ला चौधरानी सदर मंडी से मिलाहुआ शहर लखनऊ का हूं—

जो कि एक मकान पक्का व कच्चा जो मुहल्ला चौधरानी में है और उसकी हद्दें नीचे लिखी हैं जो ३५) रुपिया पर शेख़ अमजद अली बेटा शेख़ वाजिद अली मेरे साले के लड़के की तरफ़ से पार-साली गिरवी करनेवाले के गिरो था ९ई जनवरी सन् १८६८ ईसवी के रिहननामा की बाबत से उसपर क़बज़ा हमारा अब तक है अब उसको मैं ने २८) रुपिया सिक्का चेहरेदार पर कि आधे उसके ६) रुपिया होते हैं पास मीर मेहर अली साहिब रहने-वाले कटरा हैदर बेग ख़ाँ के गिरो रखकर सब गिरो का रुपिया गिरो रखनेवाले से वसूल पाकर क़बज़ा गिरो करनेवाले का अपना ऐसा करा दिया इक़रार यह है कि जिस वक़्त रुपिया गिरवी का अदा होजावे उसी वक़्त छुड़ा लूंगा उस वक़्त गिरो रखनेवाले को कुछ मकान के छोड़ देने में हीला व बहाना न होगा सो यह रिहननामा [illegible] लिख दिया कि सनद रहे और वक़्त पर काम आवे—

तारीख़ ३० दिसम्बर सन् १८७४ ईसवी—

पूरबी हद्द	पच्छिमी हद्द
दीवार मकान	उसी मकान की दीवार
फ़ज़लअली	दीवारश्री मोहनी बचनदू बासना—
दक्खिनी हद्द	उत्तरी हद्द
उसी मकान की दीवार	मिरज़ा बेग की दीवार से
फ़ज़लअली के मकान में मिली हुई	मिला हुआ

द० १२२३ गवाही गवाही

ताजमुहम्मद ख़ाँ ख़ुदाबख़्श शेख़ छज्जू

गवाही करीमबख़्श गवाही मुहम्मद ख़ाँ रहनेवाला महल्ला मुग़लख़ाना

तारीख़ ३० दिसम्बर सन् १८७४ ईसवी—

પટ્ટા વાવત સન ૧૨૮૨

નામ મોજા	નામ ખિસ કો પટ્ટા દિયા ગયા	નામ ખિસ કી તરફ સે પટ્ટા દિયા ગયા	તાદાદ રકબા પટ્ટા — નમ્બર ખેત	તાદાદ રકબા પટ્ટા — રકબા	તાદાદ સાલાના — નકદી
કસબા નિરતિની તહસીલ મોહાન	દિલદાર ખાતી	મિરજા મુરતજા બેગ	ચ૧૧	૩૬	૧૭
			વરિરાર્દ	૩૬	૫
			ત૧હીર૨	૩૬	૪
			ત૧હાર૪	૬	૨૭
			વનરાર્ષ્ટ	૨૭	૬૩
			ળવ૧ાર્દ	૪૫	૭૭
			થરા ૬	૨૭	૨૭
		દ૦ મિરજા મુરતજા બેગ જમીદાર			
લિખા ૨ જમાદિ સન ૧૨૮૨ ફ૦			૭ કિતા	૬૬	૨૨૬

फ़सली-	
लगान बढ़ाई	कैफ़ियत
	यह ज़मीन तुम को जोतने बोने के वास्ते एक साल सन् १२ फ़सली के दी जाती है तुम को चाहिये कि इस ज़मीन को अच्छी तरह से जोतो बोओ और लगान का रुपया बिना किसी हीला व उज़्र फ़ुतूर ज़मीनी व आसमानी के क़िस्त क़िस्त अदा करते रहो व मनी व भूसा व गाव व रास व पयाल व ऊख वग़ैरः बाबत हक़ ज़मींदारी व भेंट व ख़र्च वग़ैरः जो दिया जाता है लिया जायेगा और जब फ़सल ख़ाली होगी तो तुम को बिना फ़ैसला जमा और लेने दूसरे पट्टा के इख़्तियार जोतने बोने ज़मीन का न होगा नम्बरदार को बढ़ती व कमी जमा और बेदख़ली ज़मीन का इख़्तियार है॥

	ક઼બૂલિયત વાવત સન ૧૨૮૨					
નામ મોજા઼ વ પરગના	નામખિશ નેક઼બૂલિયત લિખી	[illegible]	[illegible]	તાદાદ ર઼કવા ક઼બૂલિયત		તાદાદ સાલાના
				નમુવર ખેત	ર઼કવા	નક઼દી
ક઼સવા નિવ઼તિની તહસીલ મોહાન	દિલદાર અલી	મિરજા઼ મુરતજા઼ વેગ		થારર્ ...	૨ડ	૨૦)
				વર્ગાર્દ	૩ડ	૪)
				ન૧હાર૨	૩ડ	૩)
				નરહારથ	૬ડ	૩)
				વનમા૨૬	૨ડ	૬)
				ખવા૨૬	૪)	૭)
				થા ૬	૧ડ	૨)
	દ૦ દિલદાર અલી					
		દ૦ મિરજા઼ મુરતજા઼ વેગ ખાસીદાર				
લિખા રહમાન સાહ	સન ૧૨૮૨ ફ઼સ૦			૭ કિતા	૬૬	૨૬)

लगान	फ़सली—
बढ़ाई	कैफ़ियत
	यह ज़मीन जोतने बोने एक साल सन् १२ फ़सली के वास्ते नम्बरदार से लेकर इक़रार करता हूं कि अच्छी तरह से जोत बोके पैदा लगान का बिना किसी हीला व आफ़त ज़मीनी व आसमानी के क़िस्त क़िस्त अदा करूं और ज़मींदारी का हक़ देने में मिसल सुमार गांव ग्रअप वग़ैरः उज्रहनी की तरह बहाना न होगा और जब ख़ाली फ़सल होजाविगी तब महीना जेठ में बिना दूसरे पट्टा के लेने व फ़ैसला जमा के ज़मीन को न जोतूंगा और कमी व बेशी जमा और बेदख़ली ज़मीन शरतैं ऊपर लिखी हुई को छोड़ादा बिना हुकम व बिना फ़ैसला जोतूं बोऊं तो इख़्तियार है कि लगान कुल साविध के मुवाफ़िक़ सूद से वसूल करलें कुछ उज़र न होगा॥

पट्टा बाबत सन् १२८४ फ़सली-

नाम मौज़ा व परगना	नाम पट्टेदार मय वल्दियत व सकूनत	नाम ज़मींदार मय वल्दियत व सकूनत	तादाद रक़बा पट्टा		तादाद लगान सालाना		कैफ़ियत
			नम्बर खेत	रक़बा	शरह नक़दी	शरह बटाई	
मल्ल-होर त-हसील व ज़िला लखनऊ	फ़त्ते-ख़ानी	नबी-बख़श	घड़ला २ मथुल्ला ६ सहानी ७ बमुरा २१	२७ ६७ २४७ ३६७		आधा तिहाई चौथाई ¼	हिरणी के खेतों के सन् १२ फ़सली के जैसा कि पट्टों में लि-खा है
		द० नबी बख़्श ज़मींदार					

लिखा हुआ असाढ़ सन् १२८४ फ़सली-

क़बूलियत बाबत सन १२८४ फ़सली

नांव मोजा व रयतांचा	[illegible]	[illegible]	नादाहत हुकूमप्रमाणे कबूलियत — नमवार ऐन	रकबा	नादाहत सालाना — आकार नक़्दी	आकार बटाई	कैफियत
मल्लहो- बाहशील वणिल्ला लष्करचा	फ़ते- लली	नवी- वयश्रा	पहिला २ मजून ... महानी ७ मजुवा २२	२७ ६ २५ २६ — ८३		नाचा तिहाई चौथाई है	दिहकीन गुमको स १२ फ़सली केवासते एकसाल (रेफान)
			हप्ते लली खाते कान				

लिख्या १२ जमादि सन १२८४ फ़सली—

सरखत किरायानामा

मैं कि दिलावर हुसेन खां बेटा हकीम लताफ़त अली खां क़ौम कम्बोह रहने वाला महल्ला मुफ़्ती गंज शहर लखनऊ का हूं—

जो मैं ने एक मकान पक्का जिसको खड़सार कहते हैं जो महल्ला मुफ़्ती गंज शहर लखनऊ में है लाला लछिमन परसाद व हजारी का परसाद व कालिका परसाद गिरवी रखने वालों से ५ महीने के वास्ते १) रुपिया महीना किराया पर खड़सार करने के वास्ते लिया इक़रार यह है कि लाला साहिबों को किराया मकान का महीना महीना देता रहूंगा और ५ महीना पीछे मकान खाली कर दूंगा कोई हीला व हवाला बीच में न लाऊंगा इस वास्ते यह किराया नामा लिख दिया कि सनद रहे—

लिखा २९ तारीख महीना दिसम्बर सन् १८९० ईसवी

द० दिलावर हुसेन खां   गवाही छब्बूलाल

गवाही करीम खां   गवाही सुखदेव परसाद

बक़लम खुद

फ़ैसला पंचायत

फ़ैसला पंचायत सामने लछमी नरायन पंच जिन को दोनों तरफ़ों ने क़बूल किया

लछमी नरायन पंच

२४ अपरैल सन् १८९९ ईसवी

जो कि लाला दुवारका परसाद और कालिका परसाद और मनोहर लाल ने मुझको पंच वास्ते फ़ैसला करने झगड़ा मकानात मौरूसी व साझे के जो कि शहर लखनऊ महल्ला सआदतगंज में हैं मुक़र्रर किया सो फ़रीक़ैन में उनकी क़ीमत देखकर जो कि कूती हुई है नीचे लिखी है और मकानात मौरूसी की क़ीमत २७०३) रुपिये की है — और हिस्सा हर एक साझी का तादाद में ९०१) रुपिया के हुआ —

नम्बर	नाम मकानात	क़ीमत	हिस्सा (१) दुवारका परसाद	(२) कालिका परसाद	(३) मनोहर लाल
(१)	दीवानख़ाना	११२५) ज़मीन, अमला ५२५) ६००)	३७५)	३७५)	३७५)
(२)	बावरचीख़ाना पक्का मिला हुआ दीवानख़ाने से	१७७) ५५) १२२)	५९)	५९)	५९)
(३)	हवेली मौरूसी	२२४॥) ९७८॥) १२०३)	४०१)	४०१)	४०१)
(४)	कच्चा गारख़ाना	९९)	३३)	३३)	३३)

(५) कच्चा बैठका मौरूसी
हवेली से मिला हुआ ९९) ३३) ३३) ३३)
९०) ९०) ९०)

और एक हिस्सा ज़मीन जो दीवान ख़ाना के पूरब तरफ़ है उसको कालकाप्रसाद और मनोहरलाल ने २५०) रुपिया को मोल लिया है और लाला दुवार-काप्रसाद ने एक हवेली और दुकानें जो दीवान-ख़ाना के दक्खिन तरफ़ हैं ५०८) रुपिया को हरप्र-साद और जवाहिर लाल बनिया से मोल लिया है और मौरूसी मकान में कालकाप्रसाद ने अपने पास से एक मकान २५०) रुपिया का बनवाया है अब सब साहिबों की मरज़ी से और उनके ज़बानी इक़रार से कि जो उन्हों ने मेरे सामने किया यह बात क़रार पाई कि जिसमें किसी का हरज न हो कि हाल की मोल ली हुई हवेली भी मौरूसी जायदाद में मिलाकर आपस में बांट हो जावे सो उन मकानों की भी क़ीमत मौरूसी मकानों की क़ीमत से मिलाकर एक एक शख़्स को जो रुपिया मिला वह नीचे लिखा है -

दुवारकाप्रसाद	कालकाप्रसाद	मनोहरलाल
१४०८)	१२२६)	८७६)

मौरूसी मकानों का हिस्सा	हाल में हवेली मोल ली हुई की क़ीमत
९००)	५०८)

कालकापरसाद		मनोहरलाल	
मौरूसीमकानोंका	हालमेंमोल ली	मौरूसी	हालमेंमोल
हिस्सा ६००)	कुईज़मीनकीक़ी-मत ७५)	मकानोंका हिस्सा ६००)	लीकुईज़मीन कील्लायीक़ीमत ७५)

कुल मौरूसीमकानोंकी लागतका

२५०)

बांद हवेलियोंका लवाह काम बाक़ी रहा जो इस तरह पर बांटी गई—

(१) दुर्गाकापरसाद		(२) कालकापरसाद	
१२७५)		७३४॥)	
दीवानखाना ११२५)	कालकापरसाद व मनोहरलाल सेजो हालमेंज़मीन लीगई १५०)	हवेली व दुकानेंजो दुर्गाका परसादसे लीगई ५०७)	गारखाना पक्के दीवान खानासेमिला कुल्ला १७७)

(३) मनोहरलाल		लाया कच्चा	
१६००॥)		गारखाना	
मौरूसी हवेली १२०३)	कच्चा बैठका ६६)	४६॥)	
गारखाना कच्चा लाया ४६॥)	लागत मौरूसीमकान की बाबत जो कालका-परसादनेपाया २५०)		

इस ऊपर के हिसाब लिये हुए के मुवाफ़िक़ मनोहरलाल के ज़िम्मे ६२४॥) रुपिया इस तरह से चाहिये-

जो दुर्गा का परसाद को पाने हैं २३४)	और जो कालका परसाद को पाने हैं ४८९॥)

सो दुर्गा का परसाद ने तो २३४) जो कि उनको मनोहर-लाल से मिलने थे छोड़ दिये २४६॥) में से जो कि मनोहर लाल से कालका परसाद को मिलने थे उस में से दुर्गा का परसाद ने ७५) रुपिया कालका परसाद को अपने पास से देने क़बूल किये और दुर्गा का परसाद १००) और बदले मनोहर लाल के कालका परसाद को अपने पास से देवे और मनोहरलाल यह २००) रुपिया बिना सूद चार बरस पीछे दुर्गा का परसाद को देवें अब बाक़ी रहे २१६॥) जो कालका परसाद को मनोहर लाल से मिलना चाहिये सो मनोहरलाल २१६॥) नक़द कालका परसाद को देवे और बाक़ी ३००) रुपिया २००) सालाना के हिसाब से बिना सूद कालका परसाद को देवें और कालका परसाद एक बरस में हवेली मौरूसी ख़ाली कर देवें—

और मालूम हो कि बांटे हुए मौरूसी मकानों को छोड़ कर एक मकान पक्का मौरूसी हवेली से मिला हुआ कि जिस में हिस्सादारों की बहिन रहती है वह बदस्तूर अमीसाहे में रहे और इस मकान के ऊपर का बाला ख़ाना जब तक कि मां ज़िंदा है मनोहरलाल के क़बज़ा में रहे और मालूम हो कि बांटी हुई मौरूसी हवेली की हद्द पश्चिमी छुण

के नीचे तक है उससे आगे हद्द मकान साहेब की है कि जिसका बांट नहीं हुआ है लेकिन मनोहर लाल के हिस्सा में दीवार उत्तर तरफ़ ज़ीना तक आ गई है और मनोहर लाल को इख़्तियार है कि बालाख़ाने को हस्ब ख़ाहिश करके पाट लें—

सो हुक्म हुआ कि

एक एक नक़ल इस फ़ैसला की हर शख़्स को दी जावे कि मुवाफ़िक़ उसके करते रहें—

लछिमी नरायन

दः हुसैन का प्रसाद	दः काली का प्रसाद	दः मनोहर लाल
कायस्थ रहनेवाला	कायस्थ रहनेवाला	कायस्थ रहनेवाला
लखनऊ बाज़ार	मीना बाज़ार शहर	शहर लखनऊ
नाला टिकैतराय	लखनऊ	पुत्र मोतीलाल
गवाही गनेश नरायन बेटा	गवाही कन्हई लाल	गवाही तणीलाल
मुन्नालाल कायस्थ	बेटा बख़्शी राम कायस्थ	बेटा मेगा नाथ
रहनेवाला मुहल्ला	रहनेवाला महल्ला	क़ौम कायस्थ
रकाबगंज लखनऊ	रकाबगंज लखनऊ	रहनेवाला मौ-
		ज़ा पाना तहसील
		रणिलाल लखनऊ
गवाही हरप्रसाद	गवाही सिद्धनाथ	गवाही नूर मुहम्मद ख़ाँ
रहनेवाला महल्ला	रहनेवाला महल्ला	बेटा फ़िदा ख़ाँ रहने
मुफ़्तीगंज	कश्मीरी टोला	वाला महल्ला नखासि-
		पी वक़ील मसूद—

तमस्सुक

मैं कि पितम्बरनाथ क़ौम खत्री रहनेवाला महल्ला दरियागंज शहर लखनऊ का हूं—

जोकि मैंने २००) कि आधे उसके १००) रुपिया होते हैं जनाब हाफ़िज़ अब्दुल वाहिद ख़ां साहिब से बिना सूद क़र्ज़ लिये और अपने ख़र्च में लाया इक़रार यह है कि यह रुपिया सात महीना पीछे बलकि वादा के अंदर ही ज़रूर अदा करूंगा कुछ हीला व बहाना न करूंगा जो सात महीने पीछे अदा न करूं तो आठवें महीने हाफ़िज़ साहिब को इख़्तियार है कि मेरी जायदाद मनक़ूला व ग़ैरमनक़ूला से नालिश करके वसूल करलें सूद को और मेरे वारिसों और जो कोई मेरी जगह पर होगा उनको कुछ हीला व बहाना न होगा सो यह तमस्सुक लिख दिया कि सनद रहे और वक़्त पर काम आवे—तारीख़ २ महीना जून सन् १८९६ ई०

द० पितम्बरनाथ	गवाह शुद रामसहाय	गवाह शुद सरजू
दरियागंज का रहने	बेटा हरसहाय	परसाद
वाला बक़लम ख़ुद		

रजिस्टरी

नम्बर १९८९ बसफ़ा ५२७ किताब तमस्सुकों सन् १८९६ ई० में तारीख़ २ जून सन् १८९६ ई० ४ बजे दिनके बीच में दिन को आगे रामसहाय और सरजू परसाद किनारे पर लिखे हुए गवाहों की पहिचान से यह काग़ज़ रजिस्टरी हुआ—

मुहर सरिश्ता
साहिब रजिस्ट्रार

द० रजिस्ट्रार साहिब

तमस्सुक

मैं कि हरसहाय बेटा चंडी सहाय क़ौम बिरहमन रहने-
वाला महल्ला रकाबगंज शहर लखनऊ का हूं—
जो कि ५०) सिक्का चेहरेदार कि आधे उसके २५)
रुपिया होते हैं लाला रामनारायन दास साहिब क़ौम बक़्क़ाल
अगरवाल रहनेवाला महल्ला खत्रिनी टोला से
१।) माहवारी सूद के हिसाब से क़र्ज़ लेकर अपने
ख़र्च में लाया हूं इक़रार करता हूं व लिखे देता हूं कि
यह क़िस्तबंदी की तरह ५) रुपिया महीना देता रहूंगा
और सूद ५) महीना में से सूद महीना का मुजरा देकर
बाक़ी मूल में वज़ा करता जाऊंगा कुछ हीला हवाला
बीच में न लाऊंगा और अगर किसी महीने में इत्तिफ़ाक़
से न अदा करूं तो दूसरे महीने में १०) दस रुपिया भर
दूंगा और जो दो महीने पीछे दो महीने का न अदा करूं तो
तीसरे महीने में लाला साहिब को इख़्तियार होगा कि
मेरी जायदाद मनक़ूला व ग़ैर मनक़ूला से नालिश करके
वसूल करलें सूद को और मेरे वारिसों व जो मेरी जायदाद
पावें उनको कुछ हीला हवाला न होगा इस वास्ते यह
तमस्सुक लिखदिया कि सनद रहे और ज़रूरत के वक़्त
काम आवे— लिखा २७ मई सन् १८६६ ई० ईसवी—

द० हरसहाय बिरहमन   गवाह शुद मुक़ीम ख़ां
रकाबगंज का रहनेवाला
गवाह शुद समसेर ख़ां   गवाह शुद दौलतराम

तमस्सुक

मैं कि बैजनाथ बेटा मोतीलाल क़ौम बनियां अगरवाल रहनेवाला मुहल्ला मोलवी गंज का हूं—

जो कि मैंने एक हवेली पक्की जिसे दीवानख़ाना कहते हैं मकानों समेत व बिरवा व कारख़ाना और जो ज़मीन कि उसमें है वाक़ा टिकैत गंज में जिस पर मेरा क़बज़ा व दख़ल है २५०) रुपिया सिक्का कलदार पर कि आधे उसके १२५) होते हैं मुनशी राधाकिशन साहिब व महराज बहादुर साहिब व सरजू परसाद साहिब बेटा लाला उमराव लाल बैकुंठ बासी क़ौम कायस्थ उसी मुहल्ला के रहनेवाले के हाथ गिरों करके सनद गिरवीनामा पर २१ तारीख़ नवम्बर सन् १८५० ईसवी को रजिस्टरी कराई है—

यह उसकी सनद बैनामा जायदाद की १२५) रुपिया सिक्का कलदार के उस पर लिखे हुए गिरवीदारों को लिखवा कर २५०) सिक्का कलदार सिवाय उस ऊपर गिरवी के रुपिया के पहिले के ऊपर लिखे हुए गिरो रखनेवाले और अब के ख़रीदारों से क़ीमत के रुपियों में से वसूल पाकर अपने ख़र्च में लाया हूं इक़रार यह है कि जब यह सनद इस बैनामा की पूरी हो जायेगी तो जो रुपिया कि अब मैंने एक रुपिया सैकड़ा के हिसाब से लिया है सूद समेत और जो कि गिरवी का रुपिया ऊपर लिखा है वह सब लाला

साहिबों आगे गिरवी रखने वालों व लेके रसी-
दों को मुजरा व हिसाब कर दूंगा और जो खुदा न करे
कि सनद बैनामा में कुछ हीला होवे तो कुल रुपिया सूद
समेत जो कि इस सनद में लिखा है गिरवी का रुपिया
भी मिलाकर ज़रूर बिना हीला व बहाना गिरो रखने
वालों को अदा करूंगा कुछ झगड़ा व हीला कभी
बीच में न लाऊंगा और बिना सनद में लिखे हुवे
रुपिया अदा करने के इस गिरो रक्खी हुई चीज़
को न छुड़ाऊंगा और जो इस सनद पर लिखे हुवे
रुपियों को थोड़े थोड़े दूंगा तो इस सनद की पीठ पर
लिखवा लूंगा बिना सनद की पीठ पर लिखा हुआ
रुपिया न तो ज़बानी कहने से व रसीद व फारगखती
के एक पैसा भी मुजरा न पाऊंगा सो यह सनद तमस-
सुक की लिख दी है कि सनद रहै और वक्त ज़रूरत
के काम आवे -

गवाही हरनारायन गवाही रामअधीन

लिखा २५ जनवरी सन् १८९१ ईसवी - तथा
सम्वत १९४७

वकालतनामा टिकट कीमती ।।)

ठाकुर बलदेव सिंह बेटा माधोसिंह रहनेवाला मौज़ा
जैपार परगना मनवा तहसील बाड़ी ज़िला सीतापूर
मुद्दई-

વનામ

સીતાલા વેરા વાનિસા મહાવીર સિંઘ રહનેવાલી મોણા લાલ-
પુર પરગના મિદવાર ગાહસીલ મલિહાવાદ જિલ્લા લખ્નઊ-
મુદઈ લ્લાલ્લ લૈહા-
ઘવા દિલાયાને ૧૨ રિતે ચેતવ ૧૨૩ા) મુદ-

મૈં કિ સિતાલા વેટી ગિરવર સિંઘ કોમ ઠાકુર જોરૂ મહાવીર સિંઘ વેકુંઠ વાશી રહનેવાલી મોણા લાલપુર પરગના મિદવા-ગાહસીલ મલિહાવાદ જિલા લખ્નઊ કી હૂં-

જોકિ સિરનામા પર લિખે હુવે મુકદ્દમા મેં વિનાકિ પરસાદ સાહિવ વકીલ લ્લધાલ્લત કો આપને તરફ સે વકીલ મુકરર કરકે દુકાર કરતી હૂં ઔર લિખે દેતી હૂં કિ વકીલ સાહિવ જો કુછ દુસ મુકદ્દમે મેં દોડ વ મેહનત વ જવાવદિહી વ લિખકર કરેં વહ સવ કાર રવાઈ વકીલ સાહિવ કી મુહ દુકાર કરને-વાલી કો આપને આપ કિયે હુવે કી તરહ કાવૂલ વ મંજૂર હૈ ઔર હોગી દુસ વાસ્તે યહ વકાલતનામા લિખ દિયા કિ સનદ રહે ઔર કામ આવે-

તારીખ ૨૯ ફરવરી સન ૧૮૭૫ ઈસવી-

૯૦ નિશાની સિતાલા
દુકાર કરનેવાલી કી

ગવાહી વેનીલાલ મોહરિર
વકીલ સાહિવ રહનેવાલા
લ્લશરફાવાદ વકાલમ
મુદ

ગવાહી વહાદુર સિંઘ

वकालतनामा मुद्दई की तरफ़ से

खुदा बख्श मुद्दई मुराफ़िआ दफ़ा ३२४ ताज़ीरात हिंद

बनाम

लालताप्रसाद व भगवंत सिंघ व देवी बख्श व हनूमान मुद्दआ अलेहुम—

टिकट ।।) का

मैं कि खुदा बख्श बेटा हुसेन बख्श रहनेवाला महल्ला अशरफ़ाबाद शहर लखनऊ का हूं—

इस मुक़द्दमा में अपनी तरफ़ से पंडित प्राननाथ साहिब को वकील करके इक़रार करता हूं कि जो कुछ वकील साहिब मेरी तरफ़ से पैरवी व कार्रवाई व जवाबदिही करैं वह सब मुझ को खास अपने किये हुए की तरह से क़बूल व मंज़ूर है सो यह वकालतनामा लिख दिया कि सनद रहे और ज़रूरत के वक़्त काम आवै—

तारीख़ २३ सितम्बर सन् १८७९ ई० दूसरी—

द० खुदा बख्श | गवाही करीम-बख्श बक़लम खुद | गवाही हसन अली रहने वाला वज़ीर-गंज

मुद्दआ अलैहुम की तरफ़ से वकालत नामा

टिकट ।।) का

टिकट ।।) का चिपका है

मौलवी खुदा बख्श | मुद्दई

बनाम

लालता परसाद व मगवंत सिंह व देवी बख्श व हनूमान परसाद

जुर्म मारपीट मुद्दआलैहुम

मैं कि लालता परसाद कौम कायस्थ नम्बरदार मौजा रामदासपूर व मगवन्त सिंह ठाकुर व देवी बख्श व हनूमान बेटे शिव बख्श रहनेवाले निगोहां के हैं- जो कि हम लोगों ने ऊपर के लिखे हुए मुक़द्दमा की पैरवी व जवाबदिही के वास्ते लाला मैकोपरसाद साहिब को वकील मुकर्रर किया जो कुछ वकील साहिब जवाबदिही करें - चाहें काग़ज़ पेश करें या फेरलें खास हम लोगों के किये हुए की तरह होगा हम को मंजूर है सो यह सनद वकालतनामा की तरह लिख दिया कि सनद रहे और वक़्त पर काम आवे-

द० लालता परसाद बक़लम ख़ुद   द० चिन्ह मगवंत सिंह S

द० देवी बख्श बक़लम ख़ुद   द० हनूमान बक़लम ख़ुद

गवाही रामलोतार   गवाही रहीमुद्दीन

लिखा तारीख २३ दिसम्बर सन् १८७५ ईसवी-

ज़मानत नामा

मैं कि शुजाअती बेटा लाल मुहम्मद क़ौम नाऊ रहने वाला महल्ला मक्का की बाग़ शहर लखनऊ का हूं—

जो कि अली हसन बेटा घैरू रहने वाला मौज़ा मासी तहसील व ज़िला नवाबगंज पास मुहम्मद हफ़ीमुद्दीन साहिब हेडमास्टर चौक के नौकर हैं और मुह से मौलवी साहिब २५) रुपिया कि जायें उसके ७५) रुपिया होते हैं ज़मानत मांगते हैं सो मैं अपनी खुशी व राज़ी व ठीक अक़्ल व तनदुरुस्ती के वक़्त में इक़रार करता हूं और लिखे देता हूं कि जो मुह से नौकरी के वक़्त में कहा जावेगा वही करता रहूंगा और कोई चीज़ ज़बरदस्ती व बिना मर्ज़ी के कभी न लूंगा जो बदडियानती या बेईमानी से कुछ ले लूं तो ज़मानत का उतना ही रुपिया जितना कि ऊपर लिखा है मेरी जायदाद मनकूला और गैर मनकूला या मेरे वारिसों से वसूल किया जावे मुझको या मेरे वारिसों और जो मेरी जगह पर होंगे उनको कुछ हीला व बहाना न होगा इसवास्ते यह सनद ज़मानत की लिख दी और रजिस्टरी क़ायदा के मुवाफ़िक़ करा दिया कि सनद रहे और वक़्त पर काम आवे—

द० चौनह शुजाअती गवाही हाफ़िज़ ईद

गवाही सैयद अब्बास अली
बेटा सैयद असग़र अली
रहने वाला रुस्तम नगर
बक़लम ख़ुद

गवाही अहमद अली
बेटा शुजाअत अली ज़मानत
लिखने वाले का

गवाही सैयद अमजद हुसैन
रहने वाला तहसीन अली खां की
मसजिद के पिछवाड़े जो चौक
से मिली हुई है

लिखा तारीख़ २३ जनवरी सन् १८७६ ईसवी—

ज़मानत नामा

मैं कि हैदर बख़्श बेटा क़ादिर बख़्श क़ौम शेख़ रहने वाला महल्ला मुफ़्ती गंज शहर लखनऊ का हूं— जो कि गुलज़ार अली बेटा हिमायत अली रहने वाला महल्ला मुसाहिब गंज का अपनी जोरू गुमानी बेगम बेटी सैयद मुहम्मद तक़ी के मारने पीटने के बाइस से अदालत साहिब सिटी मजिस्ट्रेट बहादुर शहर लखनऊ में क़ैद हुआ है और मुझसे उसी अदालत में ज़ामिनी मांगी जाती है सो मैं गुलज़ार अली के काम का ज़ामिन होकर इक़रार करता हूं कि आगे को गुलज़ार अली कभी गुमानी बेगम को नहीं मारे पीटेगा और जो मारेगा तो मैं उसकी जवाबदिही करूंगा—

द० हैदर बख़्श बक़लम ख़ुद
गवाही गोपीनाथ

गवाही फ़क़ीर अहमद खां
गवाही मम्मन खां

लिखा तारीख़ २५ नवम्बर सन् १८७३ ईसवी—

महज़रनामा

सवाल करता है और गवाही अपने हक़ में चाहता है करीमुद्दीन बेटा रहीमुद्दीन शाहजहांपूर का रहनेवाला महल्ला चौक बड़े क़ाज़ियों व मुफ़्तियों और सब महल्ला के रहनेवालों से इस मुक़द्दमा में कि मौज़ा महमूदपूर परगना फ़रीदपूर ज़िला बरेली बाप दादे से मुझ इक़रार करनेवाले की जागीर में मुवाफ़िक़ फ़रमानों और परवाने नाज़िमों मुल्क के ठहरा- और इस तरह के हाकिमों के ज़मा को छोड़ सिवाय माल सरकार माफ़ छोड़ा हुआ है सो अब तक मेरा क़ब्ज़ा और इत्तिफ़ाक़न उस गांव में है इन दिनों खुदा की मरज़ी से रबीउस्सानी को लगभग १२ बजे रातके मेरे मकान में चोरी होगई और चोरी के माल के साथ काग़ज़ सनद माफ़ी उस मौज़ा का भी जोकि उसमें रक्खा था चला गया और चोरी हो गया सो जो साहिब इस हाल जानते हों इस काग़ज़ पर अपनी गवाही और मोहर करदें और जो साहिब लिखना जानते हों वह अपनी तरफ़ से गवाही करादें कि खुदा उनको बदला नेकदे और सब लोगों के नज़दीक भला हो-

लिखा तारीख़ २४ रमज़ानुल मुबारक सन् १२६४ हिजरी-

गवाही मोहर क़ाज़ी	गवाही मोहर मुफ़्ती	गवाही करीम हुसेन	गवाही नजाबतअली मुल-
		१२४२	साख्ता १२३१

गवाही गवाही गवाही

गवाही — गवाही — गवाही

अलीबख़्श — सादुल्लाख़ाँ — इनायतुल्लाख़ाँ

बक़लम ख़ुद — रिसालदार

गवाही

असग़र अली

बेटा अकबर अली

नसबनामा

बड़े ख़ानदानों ... अच्छे हालों के लोगों को मालूम हो कि शेख़ मुहम्मद अकबर बेटे शेख़ गुलाम मुर्तज़ा बेटा शेख़ ग़ुलाम शेख़ रहिमी शेख़ सिद्दी की हैं बाप और माकी तरफ़ से नसलमें ठीक है और बहुत दिनों से मौज़ा लोहंगी तहसील व ज़िला सुलतानपूर में रहते हैं इन दिनों शेख़ मुहम्मद अकबर सरकार अंगरेज़ी की तरफ़ से तहसील क़सबा परांपी ज़िला शाहजहांपूर में पेशकार हैं जिस जगा चाहें दरियाफ़्त करलें इस वास्ते यह सनद नसबनामाकी लिख दी कि सनद हो -

लिखा २८ रजब सन १२८२ हिजरी

रेहन

ख़ुदा की तारीफ़ के पीछे अच्छी नसल वाले साहिबों पर ज़ाहिर न रहे कि मैं शेख़ इनायत हुसेन बेटा शेख़ हैदर-हुसेन बेटा शेख़ इफ़्तिख़ार हुसेन बिहिशत वासी रहने वाले पुराना महल्ला इसमाईलगंज शहर-

लख्खनऊ ल्लाळ काल्ल उस महल्ल्ला के ख्युद ळाने के वाइस से महल्लल्ला १कावगंळ शाह्र१ लख्खनऊ में ठह्११ हूं मेने वाप दादे हमेशा शाही ळमाने में वडी वडी नोकरी पाते १हे हैं सो वाप मेने ल्लमळाद्दल्ली शाह विहिशत वाशी के वक़्त में ओहदावके दा१ोग़ा थे ल्लो१ मेने नाना १हीम वख्श वेटा ऴाहूर वख्श विहिशत वाशी ल्लावतक वाळिद ल्लली शाहवादशाह ळो ल्लागे ल्लवधे में थे उनके ळेवख्यास के दा१ोग़ा हैं ल्लो१ में इन दिनों ल्लंग्रेळी ल्लसवावकी सौदागरी का पेशा क१ता हूं ल्लो१ एक दुकान मे१ी चीनी वाळा१ लख्खनऊ में है ल्लो१ एक कानपू१ में मुक़ाम मछली वाळा१ में है यहां का वंदोवसत मैं ल्लापही क१ता हूं ल्लो१ वहां का वंदोवसत गुमाशता ळहां चाहें पूछ ळांच लें ल्लो१ सल्लाम—

निकाह नामा या महृ१नामा

ख़ुदा की ता१ीफ़ के पीछे ठीक ल्लक़ल्ल व तनदुरुसती के वक़्त मैं ल्लवदुल्ल ल्लळीऴ वेटा इलाही वख्श १हनेवाला महल्लल्ला चोवदारी का दुकान१का१ताहूं कि मुवाफ़िक़ हुक्म ख़ुदा ल्लो१ १सूल ख़ुदा के कहने से वळीरुन निसां वेटी ल्लली हसनख़ांको ळनाव सैयद मुहम्मद ळान साहिव वेटा मैयद मुशताक़ ल्लली साहिव विहिशत वाशी की वकालत से ल्लो१ ख़ुदा वख्श साहिव वेटा क़ादि१ वख्श विहिशत

वाशी रहनेवाला उसी महल्ला के व रमजानखां साहिब बेटा रज्जबखां साहिब रहनेवाला महल्ला नयापिया को गवाही से कि दोनो साहिब वड़े इनसाफ़ करने वाले और परहेजगार हैं १०००) रुपिया सिक्का जिनका कि इसवक्त रवाज है महर के वदले अपने निकाह में कबूल व मंजूर किया इसवास्ते यह निकाहनामा लिखदिया कि मुवाफ़िक़ लिखका रजिस्टरी करादिया कि सनद रहै और वक्त ज़रूरत के काम आवै –

लिखा २७ शव्वालुल मुअज्ज़म सन् १२९२ हिजरी

६० अव्दुल अज़ीज़ गवाही करीम खां

बक़लम खुद

गवाही रज्जबअली गवाही आग़ाजान

वसीयतनामा

यह दुनिया मिरात लोक है एकन एक दिन सब को छोड़ना पड़ेगा इसी वाइस से मैं अपने सब हक़ जो मेरे वाजिब व लाज़िम थे अदा करदिये और अब मेरे जिम्मे कोई किस्म का करज़ा या हिसाब महर वग़ैरा का बाक़ी नहीं रहा है सो मैं चाहता हूं कि मेरे पीछे मेरे हसनपुर व सफदरगंज व मेंहदीगंज व मुहीउद्दीनपुर जो गोंडा में है छोड़कर व सब मेरा माल व असबाब व वगैरा व मकानात व नकद रुपिया व नोट और दूसरी जायदाद मनकूला व गैरमनकूला व गांव पट्टेदारी व बाड़ा और माली व खानगी व वाक़रगंज जो ज़िला रायबरेली में है और

दूसरी जायदाद व हिस्से देहली बैंक व लोहे की सड़क व
कोठी नील जो जिला मुरादाबाद में है और कारखाना
गुदाम जो कलकत्ता व मठटीपरी दोनों बेटों हामिद अली
खां व महमूद अली खां को बराबर हिस्सा दिया जावै और
मौजे हसनपुर व सफदरगंज वगैरः की आमदनी से मदई
की सालाना आमदनी मालगुजारी का सरकार को
रुपिया देकर और परवरिशों की तनख्वाह व खर्चा
दीहात व नौकरों की तनख्वाह जो कि तहसील वसूल व
देखा भाली व बंदोबस्त गांव के ५००००) रुपिया हैं इनमें से
३६०००) रुपिया सालाना मेरे मकबरे में खरच किया जावेगा
जिसकी बाबत पहले एक वसीयत नामा तारीख २७ जून
सन् १८६६ ईसवी को लिख चुका हूं उसके मुवाफिक काम
करना होगा बाकी १४०००) रुपिया सालाना में एक मदरसा
मेरे नाम से जारी किया जावेगा और उनमें अकसर मुहताजों
और वे वारिस लड़कों की पढ़ाई उस वक्त के हाकिमों की
मरजी से हुआ करेगी सो यह सनद वसीयतनामा की लिख
दी कि सनद रहे और काम आवे —
लिखा २९ तारीख अगस्त सन् १८७६ ईसवी

द० जामिन अली खां बकलम खुद

गवाही बाकर अली खां गवाही अहमद हुसेन खां
गवाही असगर अली खां गवाही फरजंद अली
गवाही रहमत अली र० गवाही करीमबख्श १२८२
गवाही बहादुर अली खां बकलम खुद गवाही रफीउद्दीन

हिबानामा बइवज़ बदले में बख़्शदेने की सनद

मैं कि करामत अली खां बेटा रहमत अली खां क़ौम पठान रहनेवाला शहर लखनऊ महल्ला अमीनाबाद का हूं—

जो कि मौज़े सलेमपुर व कल्यानी व रामनगर व फ़तहगंज व कठवारा जो तहसील ज़िला बरेली में हमारे ज़ाती मोल लिये हुये हैं और अब तक हमारे क़बज़ा व दख़ल में बिना किसी के साझे के हैं और कहीं गिरो या बै या किसी तरह की ज़िमादारी ज़मानत वग़ैरः में फंसे और अटके नहीं हैं हमने अपनी ख़ुशी और तनदुरुस्ती और ठीक अक़ल के वक़्त बिना किसी की ज़बरदस्ती बल्कि अपनी ख़ुशी से अपने मानजे शेख़ आज़म अली बेटा शेख़ जाफ़र अली को एक अंगूठी हीरे के बदले में बख़्श दिया — और उसी वक़्त शेख़ आज़म अली का क़बज़ा और दख़ल मालिक का ऐसा बख़्शे हुये गांवों पर करा दिया इस वास्ते अब हमको और हमारे वारिसों और जो हमारी जगह पर होंगे बख़्शी हुई जायदाद पर हक़ नहीं रहा जो हम या और कोई आदमी दावा करे तो इस सनद की रूह से बिलकुल झूठा और नाजायज़ हो इस लिये यह सनद हिबानामा बिल एवज़ की लिख दी कि सनद हो और वक़्त ज़रूरत

के काम आवे - लिखा तारीख २५ जुलाई सन १८७६ ईसवी

६० कनामत अलीखां गवाही खुदा बखश

वकलम खुद

गवाही फैजखां गवाही शुजाअत अलीखां

बेटा कनामत अली खां -

हिबानामा बिलाइवज

मैं कि बैजनाथ बेटा हेमनाथ बेटा सिद्धिनाथ कौम ब्राह्मिनी रहनेवाला शहर बनारस महल्ला तिर-कनहा का हूं -

जो कि एक पक्की हवेली कीमती लगभग १५७०) रुपिया जो महल्ला तिरकनहा में मेरे कब्जा और दखल में है बिना किसी के साझे के मेरी है और अलावा मेरे कब्जा और दखल में है उसकी चारों हदें ये हैं -

पूरबीय हद बुद्धू दरजी के मकान की दीवार	पश्चिमीय मुनशी रामनाथ साहिब की दीवार और दीवार खाना
दक्खिनीय हद गासता	उत्तरीय हद उसी मकान की दीवार और दरवाजा

अब उसको तनहा सती और ठीक अकल के वक्त अपनी खुशी से बिना किसी के सिखाये बताये दसती के चारों हदों समेत और सब हक्क दाखिली और खारजी के लाला रामदास बेटा कालीदास बेटा नरायन दास

क़ौम कायस्थ इसी महल्ला के रहनेवाले जो कि मेरे बड़े भाई हैं बख़्श दिया और हिबा किया और उस मकान पर लाला रामदास का क़ब्ज़ा मालिकाना ऐसा करा दिया अब मुझको और मेरे वारिसों और जो कि मेरी जगह पर होंगे इस मकान पर कुछ दावा और सरोकार नहीं है और जो कोई वक़्त में और मेरे वारिस या जो मेरी जगह पर हों दावा करैं तो उस वक़्त के हाकिम के सामने झूठा और क़ाबिल सुनने के नहीं होगा इसलिये यह सनद हिबानामा की लिख दिया कि सनद रहे और वक़्त पर काम आवे—

द० बैजनाथ १२४७ — गवाही मोहनलाल बेटा बैजनाथ

गवाही रहीमखां रहनेवाला महल्ला तिरकनदा — गवाही कालीपरसाद वकील मसूद

गवाही चौधरी फ़क़ीर महल्ला—

दार बक़लम कालीपरसाद

लिखा तारीख़ २४ फ़रवरी सन् १८७१ ईसवी—

फ़ारगख़ती

मैं कि महबूब अली बेटा मासूम अली रहने वाला शहर लखनऊ महल्ला मुफ़्तीगंज का हूं—

जो कि मैं ३ फ़रवरी सन् १८७४ से ३१ अगस्त सन् १८७४ ईसवी तक कुल ८ महीने शेख़ अब्दुल करीम साहिब के पास नौकर रहा और कुल अपनी तनख़्वाह शेख़ साहिब

से वसूल पाई अब कोई पैसा कौड़ी बाक़ी नहीं रही।
इसलिये यह फ़ारग़ख़ती की सनद लिख दी कि सनद
रहे और ज़रूरत के वक़्त काम आवे -

द० महबूब अली   गवाही सुखदेव परसाद
गवाही रहीम बख़्श
तारीख़ ३ सितम्बर सन् १८७४ ईसवी-

मैं कि फ़लां बेटा   क़ौम
रहनेवाला   परगना   ज़िला
का हूं
मैं ने ठीक अक़ल और तनदुरुस्ती के वक़्त बिना किसी की ज़बरदस्ती और सिखाये हुए अपनी ख़ुशी से मौज़ा फ़लां परगना फ़लां मय असली और दाख़िली खेतों और माल सिवाय समेत और ज़मींदारी की रक़में दसंजय चौकीदारी और रसूम पटवारी सिवाय रोगाड़ी भूसा व रचरी वग़ैरः दोनों फ़सलों की और एक गाड़ी कंडे और ३) सैकड़े और ख़ूराक ज़िमींदार और नंबरदार की रोटी के वक़्त और १॥) इनाम दसहरा के दिन हर साल नम्बरदार के सिपाहियों को और ४) भेंट नम्बरदार की और १) सैकड़ा हिसाब कराई मुतसद्दियों को बदले   रुपिया सिक्का चेहरेदार पर कि आधे जिस के   रुपिये होते हैं सन् १२   फ़सली से लेकर सन् १२   फ़सली तक पांच साल के वास्ते बिना किसी

हीला और अफ़रात ज़मीनी व आसमानी के जैसे सूखों
का आदा हुआ और बरफ़ पाला व पत्थर पड़े और
जो अनाज सस्ता हो जावै और पामाली व घटाना
व बढ़ाना लगान हुकमी हाकिम का ठीक किया हुआ
और कम काश्त व कम तरद्दुद व बहाली वगैरः के ज़मींदार
नम्बरदार इसी मौज़ा से कटकना लेकर अपने ज़िम्मे
क़बूल किया इक़रार यह है कि कटकने का रुपिया साल
साल फ़सल फ़सल और क़िसत क़िसत मुवाफ़िक़
सरकार की क़िसतों के अदा करता रहूंगा जिस वक़्त रुपि
या दाखिल करूंगा उसी वक़्त दाखिला लेलिया करूंगा
बिना दाखिला के जो ज़बानी वसूल बतलाऊं हेच हो
और जो कभी कोई क़िसत ठीक वक़्त पर अदा न कर
सकूं तो सूद उसका ३) रुपिया सैकड़ा महीना के हिसाब
से दूंगा और ज़मींदार नम्बरदार को इख़तियार
है कि जायदाद के बचाव और बाक़ी का रुपिया पहुंचाने
और अगली क़िसत के पहुंचाने के वासते सज़ावल
तहसील और शहना मुक़र्रर करें तनख़ाह और
उनकी ख़ूराक मेरे ज़िम्मे होगी और तहसील में इनकार न
करूंगा और जो रुपिया मारफ़त सज़ावल तहसील और
शहना व मुक़द्दम और पटवारी उस गांव के असामी
से वसूल होवे उसमें से पहले नौकरों का महीना और
सूद और पिछली क़िसतों का रुपिया निकाल कर के
बाक़ी रुपिया हमारे चुकौता के रुपिये में जमा करें और

ऱ्ला सामिदीं को ऱ्लपनी नेकी से खुश ऱ्लोर राज़ी रख्कासाल
साल खेतों के जोतने वोने में वड़ी मेहनत करता रहूंगा ऱ्लोर
सरकारी क़ानून के खिलाफ़ जोकि ऱ्लाज कल जारी
है ऱ्लोर ऱ्लागे को जारी होवैं कोई काम न करूंगा —
ऱ्लोर काठंवार ऱ्लोर चौकीदार ऱ्लोर किसान वगैरः की
मेहनत का हक़ पुराने क़ादिसे दार हाकिम के हुकम के मुवाफ़िक़
देता रहूंगा ऱ्लोर जो कोई ऱ्लादमी वदमाशी करेगा या कोई
वदमाश गांव में वसेगा ऱ्लोर हमडेलू हवाड़ा फ़साद करे या
माल चोरी का या मेड़ तोड़ना या हल चलाना सीरदारसता के
होगी इत्तिला उसकी थाना या तहसील या हाकिम
परगना या जिस जगह मुनासिव होगा करके उन वातों
का झगड़ा मिटाहिदी करूंगा ऱ्लोर जनाव दिही उस की
मेरे ज़िम्मे है गांव के नम्वरदार से कुछ सरोकार न
होगा ऱ्लोर कुल हुक्कुम कचेहरी कलेक्टरी ऱ्लोर
फ़ौजदारी ऱ्लोर दीवानी ऱ्लोर ऱ्लावपाशी वगैरःकारी
करना मेरे ज़िम्मे है ऱ्लोर लगानी ज़मीन को वेलगानी
व वेलगानी को लगानी न करूंगा ऱ्लोर गांव की निगहवानी व
हद्दें व थूहर व पेड़ व फ़सल नम्वरदार का वागों के ऱ्लोर
ऱ्लापसे ऱ्लाप जमे हुवे पेड़ ऱ्लोर रफ़ा वंजर व ऱ्लावादी
व खेत ऱ्लोर मेंड़ व रास्ता की करूंगा नम्वरदार की
विना मरज़ी एक डाल भी किसी तरह के पेड़ की न
कटने दूंगा ऱ्लोर मैं भी न काटूंगा ऱ्लोर जो कोई ऱ्लादमी
विना मरज़ी काटेगा उसका जैसा चाहिये वंदोवस्त करके

उसकी इत्तिला गाँव के ज़मींदार को करूँगा और
हरजा अदा करूँगा और जिस वक़्त कि इस गाँव
की ज़मीन सड़क और पड़ाव वग़ैरः में आवेगी और
कंकर खुदेगा तो उसके बदले का ज़मींदार मालिक है
व क़दर रूपिया लगान सिवाय कटकिना तक हक़ मुझ
इक़रार करने वाले का हिस्सादार होगा और जो साल
तमाम में कटकिने का रूपिया बाक़ी रहे तो नम्बरदार
को इख़्तियार है कि कटकिना रद करके अपना बाक़ी
रूपिया जायदाद मनक़ूला और ग़ैर मनक़ूला मेरे से
वसूल करलेवें मुझ को कुछ हीला सिवाय कटकिने का
न होगा और जिस वक़्त कि इस गाँव की ज़मीन सींची
जावेगी रवाज के मुवाफ़िक़ सिंचाई का रूपिया किसानों
से वसूल करके नम्बरदार के पास दाख़िल करूँगा—
और कटकिने की मियाद के पीछे मुझ को दावा सीर की
ज़मीन का या कोई नई बात जो अपने कटकिने के वक़्त
में करूँगा न होगा और कटकिने के वक़्त में जो ज़मीन
किसानों से जो मेरे और भाग जाने वालों की होगी
किसी दूसरे आसामी को जोतने बोने को दूँगा फिर
पीछे ज़मींदार और नम्बरदार को इख़्तियार है जिस
को चाहें देवें और ज़मीन जो कि जमई है उसको बटाई
और बटाई को जमई न करूँगा उसको उसी तरह रक्खूँगा
और जहाँ तक होसकेगा आसामियों से मिलकर
सेज़ियादा जमा न बढ़ाऊँगा जो बढ़ाऊँगा तो पटवारी के

काग़ज़ में लिखा हुआ सब बातों पर जोकि ऊपर लिखी
हैं इक़रार लाकर ये क़बूलियत लिखदी कि सनद
रहे और ज़रूरत के वक़्त काम आवे-
तारीख़ २१ नवम्बर सन् १८७६ ईसवी-

पटैदार फ़लां के नाम बेटा
क़ौम रहनेवाला-

जोकि तुमने अपनी ख़ुशी से दरख़्वास्त कटकाना
मौज़ा परगना गांव के
समेत फ़सली और दाख़िली माल सहित सिवायकूमात
ज़मींदारी-दसौंध-चौकीदारी- और रसूम पटवारी सिवाय
दो गाड़ी भूसा और चरी दोनों फ़सल-एक गाड़ी कंडा
और होरा के रक़म नमबरदार और ज़मींदार की ख़ुराक
व भेंट के बदले ३) रुपिया और २॥) दसहरा के दिन
हरसाल नमबरदार के सिपाहियों को इनाम और ४)
रुपिया भेंट नमबरदार व ।) आना सैकड़ा हिसाबाना
मुतसद्दियान बदले रुपिया सिक्का चेहरे
दार कि आये उसके रुपिया हुवे पांच साल के
वासते सन् १२ फ़सली से लेकर सन् १२ फ़सली
तक बिना हीला ज़मीनी और आसमानी आफ़तों के
जैसे सूखों का आना और पाला व तथनों का पड़ना
व नाज का सस्ता हो जाना व बरबादी व घटाना और बढ़ाना
आन हुकमी हाकिम मुक़र्रर करने वाले का और

कम खेती व कम तरद्दुद व बुढ़ा आने वग़ैरः के पास हम
ज़मींदार नम्बरदार हम सोचा के धीरह कबूल और
मंज़ूर हुई तुमको चाहिये कि दिलजमई सहित अपना
क़बज़ा और दख़ल करके कटके ने के रुपिये साल साल
फ़सल फ़सल क़िस्त क़िस्त सरकारी क़िस्तों की तरह
अदा करते रहो जमा से ज़ियादः कभी न देना होगा और
जो रुपिया दाख़िल किया करो उसका दाख़िला ले लिया
करो जो बिना दाख़िला के ज़बानी वसूल बतलाओगे
तो नहीं सुना जायगा और जो कोई क़िस्त ठीक वक़्त पर
न अदा कर सकोगे तो उसका २) रुपिया महीना सैकड़ा
बियाज देना होगा और हम ज़मींदार व नम्बरदार को
इख़्तियार है कि जायदाद बचाने और बाक़ी का रुपिया
वसूल करने और दाख़िल करने के वास्ते आगे की क़िस्त के
सज़ावल तहसील और शहना मुक़र्रर करें तनख़्वाह
और ख़ूराक तुम्हारे ज़िम्मे होगी ख़ास तहसील से उज़्र
न कर सकोगे जो रुपिया मा रफ़्त सज़ावल तहसील
और शहना व मुक़द्दम गांव पटवारी के किसानों
से वसूल होगा उसमें से पहिले नौकरों की तनख़्वाह
और पिछली क़िस्त का सूद निकाल करके बाक़ी रुपिया
तुम्हारी जमा में जमा किया जावैगा और रिआया को
अपनी भली भांति से ख़ुश रखकर साल साल खेती की
बढ़ती अच्छी तरह से बीज वग़ैरः की बुवाई में बड़ी
मेहनत करते रहो और सरकार के क़ानून के ख़िलाफ़ जो

आज कल जारी है या आगे को जारी होवें कोई कामन
करो और कारदार व चौकीदार और दूसरे गाँव के
किसानों की मेहनत का हक़ पुराने क़ाइदा के मुवाफ़िक़
या जैसा हाकिम हुकम दे देना हो और जो बदमाश कोई
गाँव में आबाद होगा या कोई बदमाशी करेगा या
फ़साद करने वाले व झगड़ा करनेवाले आपुस में लड़े
व माल चोरी व मेड़ गिरा देना व हल चलाना सीर व
रासता के होगा उसकी इत्तिला थाना या तहसील या
हाकिम परगना या जिस जगह मुनासिब हो करके उस
झगड़े को रफ़ा करा देना होगा और उसकी जवाबदिही
तुम्हारे ज़िम्मे होगी हम ज़मीदारों से कुछ वासता
न होगा और कुल हुकम कचेहरी कलेक्टरी और
फ़ौजदारी और दीवानी और आबपाशी वग़ैरः का
मी करना तुम्हारे ज़िम्मे होगा और लगानी ज़मीन
को बेलगानी और बेलगानी को लगानी न करो और
गाँव की ख़बरदारी व डीही व हद्दें और सिरवा व
फ़ल व फलदार बाग़ों व बिरवाओं आपही आप
हुये हों दरख़्त बंजर व आबादी और खेत व मेड़
वग़ैरः की करते रहो बिना हम नम्बरदार के हुकम
एक डाल किसी तरह की न काटने दो और न आप
काटो और जो कोई आदमी बिना हुकम काटेगा
उसका बंदोबस्त जैसा चाहिये करके इत्तिला उस
की हम गाँव के ज़मींदार को करोगे और हरजा अदा

કનોગે વ઼ જિસ વ઼ક્ત જ઼મીન ઇસ ગાંવ કી પહાડ઼ી પા સડ઼ક વગૈ઼નઃ મેં આવિંગી પા કંકાન ખુદેગા ઉસકે વદલ્ને કે માલિક હમ જ઼મીંદાન હૈં વ઼ક્ત નૂપિપા આગાતામિપાદ કટકના તક તુમહાના હક઼ હોગા આેન જો સાલ તમામ મેં નૂપિપા કટકના કા વા઼કી નહ જાવેગા તો હમ કો દુખ઼્તિપાન હૈ કિ કટકના નદ કનકે વાક઼ી આપના નૂપિપા તુમહાની મનકુલા વગૈ઼નઃ મનકુલા જાપદાદ સે આદાલત મેં નાલિશ કનકે વસૂલ કનલેવૈં તુમ કો કાક઼ ઉજ઼ન મિપાદ કટકના કા ન હોગા આેન જિસ વ઼ક્ત ઇસ ગાંવ કી જ઼મીન સીંચી જાવે નૂપિપા પાની કી સિંચાઈ કા જેસા નવાજ હૈ કિસાનોં સે તહસીલ કનકે હમાને પાસ દાખ઼િલ કનો આેન નહીં તો તુમહાને દાખ઼િલ કિપે હુપે નૂપિપા મેંસે મુજના લિપા જાપિગા— આેન કટકને કી મિપાદ કે પીછે તુમકો દાવા જ઼મીન સીન પા કોઈ નપા કામ જો આપને કટકને કે વ઼ક્ત મેં કનોગે ન હોગા આેન કટકના કે વ઼ક્ત મેં જો જ઼મીન કિ આ સામિપોં મને હુપે આેન આગા જાનેવાલોં કી હોગી આપને કટકને કી મિપાદ તક દૂસને આસામી કો દેસકોગે ફિન હમ જ઼મીંદાનનમ વનીદાન કો ઇખ઼્તિપાન હૈ જિસકો ચાહેં દેવેં આેન જમઈ જ઼મીન કો વઢાઈ આેન વઢાઈ કો જમઈ ન કનોગે લેકિન ઉસકો વૈસા હી નક્ખોગે આેન જહાંતક હોસકેગા આસામિપોં સે મિલકન ધન કી તનહ જાસા નવહોગે જો કુછ જ઼ાફ઼ન કનોગે તો પટવાની કે કાગ઼જ઼ મેં લિખ્વાદોગે

को सो यह पट्टा लिख दिया कि सनद रहै—
तारीख़ २२ नवम्बर सन् १८७९ ईसवी—

आक़नामा

मैं कि बदलू बेहना बेटा छेदी बेहना रहनेवाला मौज़ा लोहारी तहसील व ज़िला मुलतान शहर का हूं—जो कि मैं अपने बेटे कल्लू से उसके कुराह चलने व बेजा कामों से नाराज़ और बहुत नाखुश हूं सो कल्लू को मैं ने अपनी रज़ामंदी से आक़ किया मेरे पीछे उसको हिस्सा नहीं पहुंचता है इस वास्ते यह सनद आक़नामा की लिख दी कि सनद रहे और आगे को काम आवै—
तारीख़ २७ नवम्बर सन् १८९७ ईसवी—

द० बदलू बेहना — गवाही मगुवा बेहना
गवाही शेख़ मुक़ीम जुलाहा — गवाही फ़क़ीर मिशरी

अमानतनामा

इसके लिखने की यह वजह है कि शेख़ अल्लादत्ता अली बेटा शेख़ शहामत अली रहनेवाले महल्ला अबूतुराब खां का कटरा शहर लखनऊ ने ५०००) रुपिया मेरे पास अमानत की तरह पर रक्खे हैं जिस वक़्त शेख़ अल्लादत्ता अली साहिब चाहें मेरे पास से ले जावें और जो वह मर जावें तो उनके पीछे जो

कोई शख़्स शरीफ़ के क़ायदा से उनकी निगाहबान - और मालिक उनके तरका का होगा यतीम का रुपिया बिना हीला और बिना तकरार उसी वक़्त मांगते ही दे दूंगा सो यह सनद अमानतनामा की लिख दी कि सनद रहे और ज़रूरत के वक़्त काम आवे-

लिखा तारीख़ २४ मई सन् १८७० ईसवी-

द० हीरालाल महाजन	गवाही फ़क़ीरचंद साहूकार
रहनेवाले महल्ला चौक	उसी महल्ला के रहनेवाले
गवाही हरप्रसाद गुमाश्ता	गवाही लछिमन सहाय
हीरालाल साहिब	सरिश्तादार दफ़्तर डिप्टी
	कमिश्नरी

इसतिफ़ता या विवस्था

क्या कहते हैं उलमाय दीन और बड़े मुफ़्तियान शहर के इस मुक़द्दमा में-

कि एक औरत और उसकी लड़की दोनों ने दूध पिलाना इख़्तियार किया मा ने एक लड़के अमरू को दूध पिलाया और बेटी ने एक लड़की हिन्दा को तो अमरू का विवाह हिन्दा के साथ शरअ से दुरुस्त है या नहीं-

जवाब

इस मुक़द्दमा में उलमाय दीन क्या कहते हैं कि सिर या कोई और हिस्सा आदमी मुरदा का या क़तल किया गया या और किसी जानवर का पाया

ફુલ્ના પાયા જાયે તો નમાઝ઼ જનાઝ઼ા કી ઉસ પર પઢ઼ના દુરુસ્ત હૈ યા નહીં—

તલાક઼ નામા

ઇસ કે લિખને કા યિહ બાઇસ હૈ કિ જોકિ અશરફુન્નિસા બેગમ ૬ બરસ સે મુવાફ઼િક શરા શરીફ઼ કે મેરે નિકાહ મેં હૈ આજ કલ મૈં ને અપની ખુશી સે ઉસ કો તલાક઼ દી ઔર તલાક઼ દેના ઉસ કે હક઼ મેં કહ દિયા ઔર જિસ કદર કિ મહર શરઈ થા અશરફુલ-નિસા બેગમ કે હવાલે કર દિયા ઔર પીછે હોજાને ૬ મહીને કે ઉસ કો ઇખ્તિયાર હૈ કિ મ નદ કરે યા ન કરે મુઝ સે કોઈ વજહ ઉસ સે ગરજ઼ ઔર રોકને કી નહીં હૈ સો યિહ સનદ તલાક઼ નામા કી લિખ દી કિ સનદ રહે ઔર વક઼્ત પર કામ આવે—

તારીખ઼ ૨૫ સફ઼ર સન્ ૧૨૭૭ હિજ઼્રી

દ૦ શરફુદ્દીન ખાં બેટા કમરુદ્દીન ખાં

રહને વાલા આમોઝા કઠવારા તહસીલ વ

ઝ઼િલા રાય બરેલી

ગવાહી ઇનાયત ખાં   ગવાહી હૈદર ખાં વકીલ મખુદ

તલાક઼ નામા

મૈં કિ કરીમ ખાં બેટા રહીમ ખાં કૌમ પઠાન રહને-વાલા મહલ્લા સરાય માલી ખાં કા હૂં—

જોકિ લુત્ફ઼ન બેટી મુહમ્મદ મુકીમ કી ૫ બરસ

हुवे मेरे साथ बिवाही गई थी बिना किसी की ज़बर
दस्ती व सिखावे हुवे ठीक अक़्ल व तनदुरुस्ती के
वक़्त अब मैंने उसको अपनी खुशी से तलाक़ दिया
और जिसका मेहर था वह फ़तेहअली वल्द अली
मुहम्मद व करीम बख़्श गवाहों के मुवाजिहा में तर
फ़ैन के हवाले किया गया सो तरफ़ैन को इख़्तियार
है कि जिसके साथ चाहे अपना निकाह करले
मैं मुद्दई को तरफ़ैन से कुछ सरोकार नहीं है इसवास्ते
यह सनद तलाक़नामा की लिख दी कि सनद रहे और
ज़रूरत के वक़्त काम आवे —

लिखा तारीख़ २७ फ़रवरी सन् १२९० हिजरी

द० १२८९ गवाही फ़तेहअली

करीमख़ां

गवाही अली मुहम्मद गवाही करीम बख़्श

इति

कचेहरी के काग़ज़ात

टिकट चिपका है अर्ज़ी दावा

मुहम्मद अबदुल्ला ख़ां बेटा मुहम्मद अमीर अली-
ख़ां क़ौम पठान पेशः नौकरी रहने वाला महल्ला मुफ़्ती-
ख़ाना शहर लखनऊ का हूं — मुद्दई

बनाम

देवसिंह बेटा गजवासिंह क़ौम अहीर काश्तकार
रहने वाला महल्ला सलामी गढ़ी क़सबा काकोरी

तहसील व ज़िला लखनऊ—

मुद्दआ अलैह

दफ़ा ५२ ज़िमन २ ऐक्ट १९ सन् १८६८ ईसवी—

दावा

दिलापाने १३॥॥) बाक़ी लगान सन् १२८१ फ़सली बाबत ज़मीन ३/२२ नम्बरी १९५२ जोकि क़स्बा काकोरी में है जिसके ग्राहक है इस्तग़ासह यह है कि मुद्दआ अलैह ने ३/२२ ज़मीन २६) रुपिया सालाना की जमा पर मुद्दई से लेकर जोता बोया उसमें से १२॥) अदा किया और बाक़ी नहीं देता है यह रुपिया जिसका दावा किया गया है सन् १२८१ फ़सली तथा सन् १८७४ ईसवी को मुद्दआ अलैह को देना चाहिये था और वही तारीख़ दावा की है उम्मेदवार हूं कि दावा किया गया रुपिया अदालत के ख़र्चा समेत दिलाया जावे

नम्बर	नाम खेत	तादाद ज़मीन	तादाद लगान
१९५२	महुलवा	३/२२	२६)
			१२॥) वसूल
			१३॥॥) बाक़ी

मैं मुद्दई कि नाम मेरा इस अर्ज़ी में लिखा है इक़रार करता हूं कि मेरी समझ बूझ में जो कुछ इसमें लिखा है ठीक और दुरुस्त है—

द० महम्मद अब्दुल्ला ख़ां

वकील मुद्दई

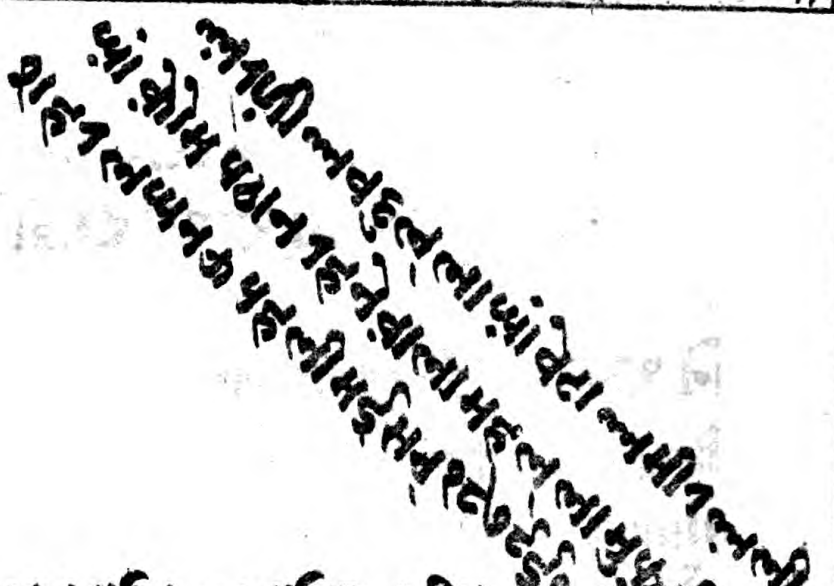

अरज़ी आज हमारे पेश हुई जो ऐसा अमीन अली
हां जोम प्रदान महने वाला महल्ला गुमपुरी
गहन लयम जो पहली मई सन १८६७ई०

वकालतनाम हरनारायन आनारायण नवीस-
सनदयाफ़्ता:

अराज़ी दावा लगान

दफ़ा ८३ ज़िमन ऐक्ट १० सन १८५९ ईसवी-
टिकट ।=) का चिपका है

भौसेरी सिंह वेटा मदानी सिंह क़ौम ठाकुर रहने वाला
पट्टीदार मौज़ा कलली पचछम परगना विजनौर
तहसील व ज़िला लखनऊ— मुद्दई

बनाम

मंगल सिंह बेटा भरत सिंह क़ौम ठाकुर रहने वाला
काश्तकार रेयान मुद्दआ अलैह -

दावा

दिलापाने ३) बाक़ी लगान ख़रीफ़ सन १२८२ फ़सली
ज़मीन ८ १४ नम्बरी २३।१९ जोकि कलली पचछिम
में है और बराह नहीं किया मुद्दई की तरफ़ से

મુદ્દઆઅલૈહ જોતે હૈં કિ જિસકી મિયાદ આખ઼િર મહીના નવમ્બર સન્ ૧૮૭૨ ઈસવી કો હોગઈ ઔર યહ રૂપિયા મુદ્દઆઅલૈહ કો તભી દેના થા ઔર મુદ્દઆઅલૈહ ને તક઼ાજ઼ા કરને સે અબ તક નહીં દિયા સો વહી તારીખ઼ આખ઼િર મહીના નવમ્બર સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી દાવા કરને કી હૈ (૩) મૈં ઉમેદવાર હૂં કિ તહક઼ીક઼ાત કે પીછે દાવા કિયા ગયા રૂપિયા અદાલત કે ખ઼રચા સમેત દિલા પાઊં—

નમ્બર	નામ ચીજ઼	તાદાદ જ઼મીન	તાદાદ લગાન
૨૩ ઈ૧	કલ્લૂરા	૮૨૪	૩)
			+ વસૂલ
			૩) બાક઼ી

મૈં મુદ્દઈ કિ નામ મેરા ઇસ અર્જ઼ી દાવા મેં લિખ્યા હૈ ઇક઼રાર કરતા હૂં કિ જહાં તક મેરી જાન બૂઝ હૈ જો કુછ ઇસ અર્જ઼ી દાવા મેં લિખ્યા હૈ ઠીક ઔર દુરુસ્ત હૈ—

૭ ૬૦ નિશાની ઔસેરીસિંઘ

મૈં મુદ્દઈ ઔસેરીસિંઘ કૌમ
રાજપૂત રહનેવાલા [illegible]
[illegible] ઝ઼હૂરાબાદ ઝ઼િલા ગાજ઼ીપુર
[illegible] તારીખ઼ [illegible] સન્ ૧૮૭૫ ઈ૦
૨૦ [illegible]
[illegible] રામદાસ [illegible]

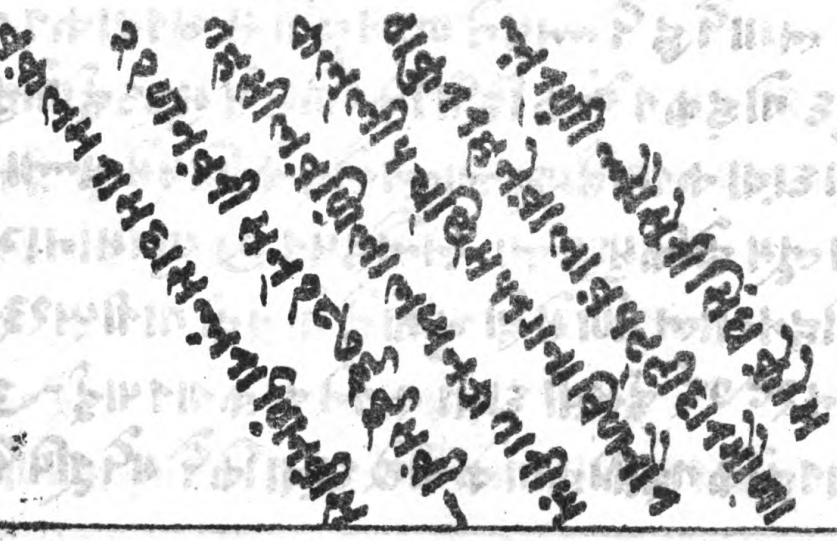

अर्ज़ी दावा दीवानी

टिकट १॥)

बख़्तावर बेटा महावीर क़ौम बिरहमन पेशः काश्तकारी रहनेवाला कल्ली पच्छिम परगना बिजनौर तहसील व ज़िला लखनऊ—

मुद्दई

बनाम

मल्हू बेटा मोहना क़ौम लोधा पेशः मज़दूरी रहनेवाला उसी गाँव का—

मुद्दआअलैह

दावा

दिलापाने २०) रुपिया बाबत नुक़सान दरख़्त आम के जो मौज़ा कल्ली पच्छिम परगना बिजनौर में मुद्दई के लगाए हुए थे जिसके गवाह भी हैं जिसका ब्योरा यह है कि तारीख़ २३ अप्रैल सन् १८७६ ईसवी को मुद्दआ अलैह ने अदावत की राह से दरख़्त आम मुद्दई के लगाए हुए अपने हाथों से चिरवा कर और ख़ुद तोड़कर फेंक दिया कि जिस से मुद्दई को नुक़सान का दावा करता है मुद्दआअलैह के ज़िम्मे हुआ और मालूम हो कि मुद्दआ अलैह पर ३) जुरमाना थाना मोहनलाल गंज से हो चुका है सो वही तारीख़ २३ अप्रैल सन् १८७६ ईसवी दावा करने की तारीख़ पाई उम्मेदवार हूं कि तहक़ीक़ात के पीछे दावा कि ये रुपिया की

डिगरी अदालत के ख़रचा समेत मुद्दई के हक़ में बनाम मुद्दआलेह सानी फ़रमाई जावे—

बाबत नुक़सान पेड़ आंब

\+ रसूम

२०) बाक़ी

मैं मुद्दई कि नाम मेरा इस अरज़ी में लिखा है इस बात का इक़रार करता हूं कि बयान इस अरज़ी का जहांतक कि मुझ को इल्म व यक़ीन है सही है—

ह० निशानी बख़्तावर मुद्दई

अरज़ी बख़्तावर मुद्दई रहने
वाला मौज़ा कल्ली पश्चिम परगना
बिसवां तहसील व ज़िला लखनऊ
तारीख़ २७ अप्रैल सन् १९०८ ई०

बक़लम शिव नरायन अरायज़ नवीस

अरज़ी दावा दीवानी

ठाकुर बलदेव सिंह बेटा साऊ सिंह क़ौम पवांर पेशा ज़मींदारी रहनेवाला मौज़ा जैमानपुर परगना महीवां तहसील बाड़ी ज़िला सीतापुर

मुद्दई

बनाम

सीतला बेवा वारिसा महावीर सिंह क़ौम पवांर रहनेवाली

मौजा लालपुर परगना महोना तहसील मलिहाबाद जिला लखनऊ मुद्दालालेह।

दावा।

दखल पाने २६ कित्ते खेत जिनके नम्बर नीचे लिखे हैं जो मौजा लालपुर में हैं और १०॥) सूद रिहन नामा रजिस्टरी किया हुवा १५ अगस्त सन् १८७२ ईसवी कि जिसका विवरा यह है ८५) कि महावीर सिंघ मुद्दआलालेह के खसम ने रुपए लिये हुवे खेतों को रेहन के बदले ७५) सूदी ३) सैकड़ा माहवारी तारीख १५ अगस्त सन् १८७२ ईसवी पास मुद्दई के खेतों का रेहन किया था कि सूद साल साल का अदा करेंगी और असल रुपिया आखिर जेठ सन् १२८२ फसली तथा ३१ मई सन् १८७५ ईसवी अदा करेंगी और जो वादा पूरा न हूवो मुद्दअन को खेतों पर दखल होगी सो सूद के रुपिया में से ३३) रुपिया अदा किया बाकी असल और सूद का रुपिया जिसका वादा किया गया है नहीं अदा किया है और वादा की मियाद हो गई सो अब मुद्दई उम्मेदवार है कि रिहन नामा की शर्त के मुवाफिक खेत के खेतों पर दखल दिलाया जावे और १०॥) सूद की डिगरी मुद्दई को मिले—

असल जिनके बदले दखल	सूद
चाहिये ७५)	४३॥)
खेतों का विवरा	३३) वसूल
	१०॥) बाकी

क़िस्तों का विवरण

नम्बर खेत	नाम खेत	बीघा ज़मीन
१०	कलारा	ऽ१५
१२	रेतन	ऽ१२
३१	मध्या	३ऽ
६९	पीरहा	३ऽ
१०२	"	३ऽ०
१११	लदाटाती	३ऽ६
२६	नध्या	३ऽ४
४८	बेकुरा	३ऽ१७
४९	खुदिरा	३ऽ१
११६	लताटानी	५ऽ५
१५६	मठा	३ऽ७
१७६	जोन	ऽ४
मिनजुमला १७२	सुवना	३ऽ५
		२०ऽ४

मैं मुद्दई इक़रार इस बात का करता हूं कि कहना मेरा ठीक है —

द० बलदेवसिंघ

बलदेवसिंह मुद्दई

जगतवीर ...

हिन्दी-

अर्ज़ी दावा दीवानी

टिकट २) टिकट ॥)

टिकट ≡) तीन टिकट क़ीमती ३॥≡) चिपके हैं

हींगुर बेटा मिट्ठी क़ौम मुराई पेशः मुराई रहनेवाला मौज़ा महमूदपुर परगाना व तहसील मोहनलालगंज ज़िला लखनऊ

मुद्दई

बनाम

मगरे बेटा नामालूम क़ौम मुराई रहनेवाला मौज़ा महमूदपुर तहसील मोहनलालगंज ज़िला लखनऊ

मुद्दआ अलैह

दावा ५१) रुपिया खर्चा शादी जिसके ब्यौरः हैं इस तरह पर कि मुद्दआ अलैह ने अपनी बेटी जानकिया की शादी साथ साहिब दीन बेटा मुद्दई के करने का क़ौल व क़रार करके बैशाख वदी अष्टमी सम्वत् १९३० तथा २० अप्रैल सन् १८७३ ईसवी को पहले रसम बीड़ा की अदा की जिसमें २५) मुद्द मुद्दई का बिरादरी के खाने वग़ैरः में खर्च हुआ जैसा नीचे लिखा हुआ है अब माघ सुदी एकादशी सम्वत १९३२ तथा ६ फ़रवरी सन् १८७६ ईसवी को शादी करने से बेसबब इनकार किया इसी से फ़रवरी सन् १८७६ ईसवी को रुपिये जिसका दावा किया गया है मुद्दआ अलैह के ज़िम्मे देना होगया था और यही तारीख़ दावा करने की है उमेदवार हूं कि रुपिया जिनका

इस्रा किया है ज़यल्लत के पात्या समेत मुद्दई [illegible] लेह मेहिला
पाऊं—
(१) कुल
(२) शराब
(३) घी
(४) मैदा
(५) शकर
(६) तरकारी
(७) ज्यादा बदल बुरी: नज़ाफ़ा
कच्ची के दिन
(८) मुतफ़र्रिकात
(९) बाक़ी रसल ×
मैंकि हींगुन मुद्दई कि नाम मेरा [illegible] में लिखा है
इक़रार करता हूं कि जहां तक मुझ को इल्म [illegible] नहीं है
इस्रा ठीक है—
द० निशानी मुद्दई
८
[illegible] हींगुन मुद्दई [illegible] रहे
मर्ह० सन् १८७८ ई० [illegible]—

अर्जी दावा लगान

मुसाहिब अली जमींदार व नम्बरदार मौजा बिजनौर
खास तहसील व जिला लखनऊ

मुद्दई

बनाम

शिवलाल बेटा छेदी कौम अहीर रहनेवाला मौजे रामनगर
मजरा बिजनौर व काश्तकार मुद्दआअलैह

दावा

दिलापाने १३) बाबत बटाई कीमत नाज गेहूं और सरसों लगभग २८मन कुल पैदावार ४८मन में से फसल रबी सन् १२८३ फसली बाबत जमीन ३५२ नम्बरी १३१८ जो कि बिजनौर में है और उसके गवाह भी हैं इस तरह पर कि मुद्दआअलैह ने ऊपर लिखी हुई जमीन सीर मुद्दई कि बटाई पर काश्त की है आज कल तारीख १४ मार्च सन् १८७६ ईसवी को मुद्दआअलैह जो गेहूं और सरसों पैदावार रबी सन् १२८३ फसली जमीन की कावकार सब आप उठा ले गया मुद्दई को बटाई में से एक दाना नहीं दिया सो वही तारीख १४ मार्च सन् १८७६ ईसवी दावा की करार पाई—

नम्बर	नाम खेत	जमीन	लगान	नाज कच्ची तौल से	
१३१८	मढिया	३५२	बटाई		४८)
				गेहूं	सरसों
				४७)	१मन

हिस्सा हिस्सा मुद्दआअलैह
बटाई २५) मन
बाक़ी
२५) गेहूं सरसों २५ मन क़ीमती
वसूल लगभग १२)

मैं मुद्दई कि नाम मेरा इस अर्ज़ीमें लिखा है इक़रार इस बात का करता हूं कि बयान इस अर्ज़ी दावा का जहांतक कि मुझ को इल्म और यक़ीन है ठीक है—

द० रमज़ान अली
बक़लम ख़ुद

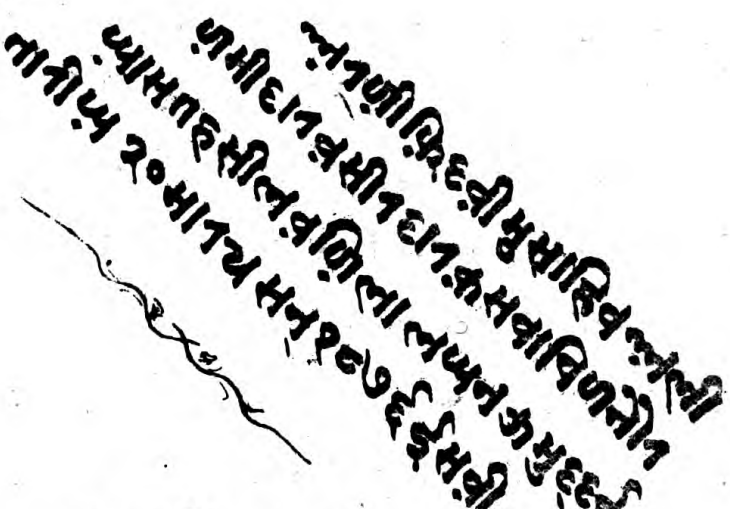

अर्ज़ी फ़िदवी मुसाहिब अली
ज़मींदार व सीरदार क़स्बा बिजनौर
परगना व तहसील व ज़िला लखनऊ मुद्दई
तारीख़ २० मार्च सन १८७६ ईसवी

अर्ज़ीदावा लगान

अ० फ़रज़न्द हुसेन बेटा सैयद क़ासिम हुसेन रहने वाला बिजनौर नम्बरदार गिर्दा रहनेवाला व हक़दार हिस्सा ।) तालिब हुसेन बाबत मौज़ा अहमदपुरपारसा बिजनौर तहसील लखनऊ मुद्दई

बनाम

अली हसन बेटा इमदाद हुसेन नम्बरदार व काश्तकार

જ઼મીન મૌજ઼ા અહમદપુર પરગના વ તહસીલ જ઼િલા
લખનઊ — મુદ્દઆઅલૈહ

દાવા

હિસ્સા પાને ૨૩।) બાક઼ી લગાન જ઼મીન ૩।૧૯ ઉસી મૌજ઼ા મેં જિસકે નમ્બર નીચે લિખે હૈં બાબત સાલ તમામ સન્ ૧૨૮૩ ફ઼સલી મેરા હક઼ ઔર ડિકરી અદાલત દીવાની મુવાફ઼િક઼ મંશાએ જ઼િમન ૨ દફ઼ા ૮૩ ઐક્ટ લગાન સન્ ૧૮૬૮ ઈસવી —

દોનોં તરફ઼ોં મેં બટવારા હોગયા હૈ ઔર મુદ્દઈ તહસીલ અસામીવાર ગૈરવાર હિસ્સા કી આપ કરતા હૈ વ જ઼મીન કાશ્ત મુદ્દઆઅલૈહ કી હૈ લગાન મુદ્દઆઅલૈહ કે જ઼િમ્મે દેના વાજિબ હૈ મગર વહ માંગને ઔર તક઼ાજ઼ા કરને પર હોજાને પરભી એક મહીના આગે ક઼િસ્ત સરકારી સે નહીં દેતા હૈ સો ઉમેદવાર હૂં કિ પીછે તહક઼ીક઼ાત જ઼રૂરી કે ડિકરી દાવા કિયે હુવે રુપિયે કી મુદ્દઈ કે હક઼ મેં બનામ મુદ્દઆઅલૈહ ખ઼ર્ચા સમેત હો જાવે તારીખ઼ દાવા કરને કી ૧ અપ્રૈલ સન્ ૧૮૭૬ ઈસવી એક મહીના આગે ક઼િસ્ત સરકારી સે — હોવે

નમ્બર	નામ ખેત	તાદાદ જ઼મીન	તાદાદ રક઼મ બાક઼ી
૧૭૭	તરાઈ	૩।૧	લગાન + ૨૩≡)
૧૮૫	રેતાન	૩।૧	દો
૧૬૮	દૂનકારા	૫।૧૭	૧૦॥ ૮

હસ દાવા કા બયાન મેરી સમઝ બૂઝ મેં ઠીક ઔર દુરુસ્ત હૈ
દ૦ સૈયદ ફરઝંદહુસેન વકીલ
દ૦ ફરઝંદહુસેન નમ્બરદાર
મીર્ઝા અહમદ પૂર વકીલ મુદ્દઇ

અરજી ફિદવી ફરઝંદહુસેન નમ્બરદાર
મીર્ઝા અહમદ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

અરજી દાવા ફૌજદારી

સબની ઝોરૂ સાકૂ પાસી રહનેવાલી મઆઝાનપુર પરગના નિગોહાં તહસીલ મોહનલાલ ગંજ મુદ્દઇયા—

બનામ

શિવદીન ચૌકીદાર મઆઝાનપુર પરગના નિગોહાં તહસીલ મોહનલાલ ગંજ મુદ્દઆઅલૈહ—

મુકદ્દમા મારપીટ હલકી મુતાબિક દફા ૩૨૩ તાજીરાત હિંદ—

ગરીબ પરવર સલામત જનાબ આલી

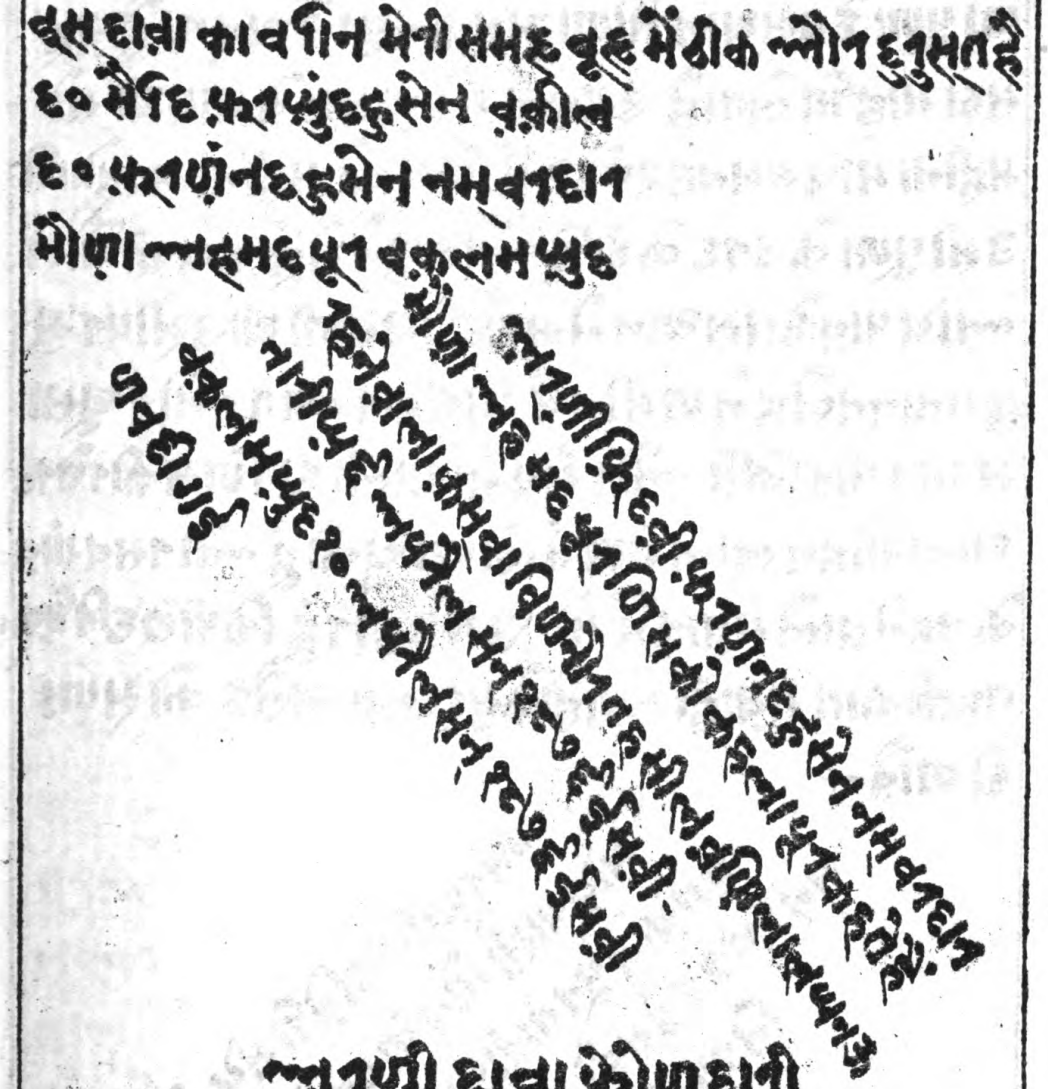

जो पूजा देवस्थान मौज़ा भगवानपुर में चढ़ता है वह
सब गोड़पति लेता है उगाहनी मैने प्रसम के नाम थी सो
महीना माघ सम्वत १९३१ में जिस को महीना भर होगा
उसी पूजा के उरद के दाल और मूने गेहूं कच्ची तौल
आध पाव देवस्थान से मुद्दैया उठाती थी उसी पर मु-
द्दआअलैह ने ज़मीन में गिरा कर लात और घूसा
से मार पीट किया और सैकड़ों गाली दीं जिसकी रपोट
थाना मोहनलाल गंज में लिख्वा चुकी हूं और सब गांव
के रहनेवाले गवाह हैं सो उम्मेदवार हूं कि पीछे दरियाफ्त
तहक़ीक़ात गवाही गवाहों के मुद्दआअलैह को सज़ा
दी जावे—

अर्ज़ीदिहिन्दा सधनी जोरू
साधु पासी गोड़पति रहनेवाली
भगवानपुर तअल्लुक़ा रहीमाबाद
सन् १८७७ ई॰ सही
निशानी सधनी

अर्ज़ी दावा फ़ौजदारी

खुदाबख़्श बेटा ग़ुलाम अब्बास क़ौम शेख़ पेशः
नौकरी रहनेवाला महल्ला अशरफ़ाबाद शहर
लखनऊ मुद्दई

बनाम

नं० १— लालता परसाद बेटा ठाकुर परसाद रहनेवाला

અપન કો મુદ્દઆલૈહ નમ્બર ૨ ઔર ભગવંતસિંધ બેટા
શિવદીન સિંધ રહને વાલા રામદાસપૂર નમ્બર ૩ દેવી
બખ્શ બેટા નામાલૂમ રહને વાલા પિપરસન મુદ્દઆલૈહ
નમ્બર ૪ ઔર હનૂમાન બેટા શિવ બખ્શ રહનેવાલા મોણા
નિગોહાં મુદ્દઆલૈહ નમ્બર ૫ મુદ્દઆલૈહુમ

જુર્મ મુવાફિક મંશા- દફા ૩૨૪
તાજીરાત હિંદ

ગરીબ પરવર સલામત આજ ૮ સિતમ્બર
સન હાલ વક્ત ૭ બજે દિન કો મુદ્દઆલૈહુમ કો પર
લિયે હુયે લાઠી બાંધે હુવે મોણા રામદાસપૂર મેં આના પર
જહાં મુદ્દઈ મુહમ્મદ ઝાહિર અલી હિસમાદાર (?) કી
તરફ સે રહતા થા આવે ઔર નવી બખ્શને મુદ્દઆલૈહ
નમ્બર ૩ ને હાથ મુદ્દઈ કા ખીંચ કર છપ્પર કે બાહર
ડાલ દિયા ઔર લાલતાપરસાદ મુદ્દઆલૈહ નમ્બર
૧ ને જો અસલ ફસાદી ઔર ઇસ લડાઈ કી જડ હૈ એક
લટ્ઠ મુદ્દઈ કે સિર પર ઇસ જોર સે મારા કિ સિર ફટ ગયા
ઔર હડ્ડી સિર કી ટૂટ ગઈ ઔર ભગવંતસિંધ ને એક
લાઠી બાંયે પર મારી કિ ઉસ કો મેંહદી હુસેન બેટે લડકે ને
રોકા કિ ભગવંત સિંધ ને ઉસકો ઉઠાઉઠા કર દબોચા ઔર
ગલા ઐસા દબાયા કિ કરીબ થા કિ આંખેં નિકલ પડેં ઔર
લાલતાપરસાદ ઔર નવી બખ્શ ઔર હનૂમાન પરસાદ
મુદ્દઆલૈહુમ મુદ્દઈ કો લાઠિયોં સે બરાબર મારતે રહે
કિ ઇસી બીચ મેં મદદ આલી ઔર મુવાફક આલી ને

आकर मेंहदी हुसेन को आवंत सिंघ से और मुद्दई को
लाठियों की मार से बचाया और हर तरह से उनको समझाया
जो यह लोग उस वक़्त न पहुंच जाते तो ज़रूर मुद्दआ-
अलेहुम मुद्दई को मार डालते फिर मुद्दई बेहोश हो
गया यह मुहु को थाना मोहन लाल गंज में सवार कर के
लाये मुद्दई ने रपोरट लिखवाई और मुद्दआअलेहुम
से अदावत की यह वजह है कि मुद्दई कानुगिया लालता
परसाद के ज़िम्मे बाबत हिसाब समझौता ठेकादारी बाक़ी
है जिस की नालिश उसी रोज़ करने वाला था यह ख़बर
लालता परसाद ने सुना और अपने नौकर लाकर मार
पीट की और नालिश न करने दिया अगरची दावा तैयार
सब लिखा हुआ मेरे पास तैयार था और यह इरादा
था कि ठेका की सनद छीन लेवें और कुल मुद्दआअ-
लेहुम बाबत दंगा और फ़साद के सज़ा पा चुके हैं जिस
के मुक़द्दमे अदालत में मौजूद हैं पूछने के वक़्त
बयान करूंगा—

अगरची बुद्ध बख्श बेटा गुलाम अब्बास
दस्तख़त बुद्ध तारीख़ ११ सितम्बर सन् १८७६
ईसवी—

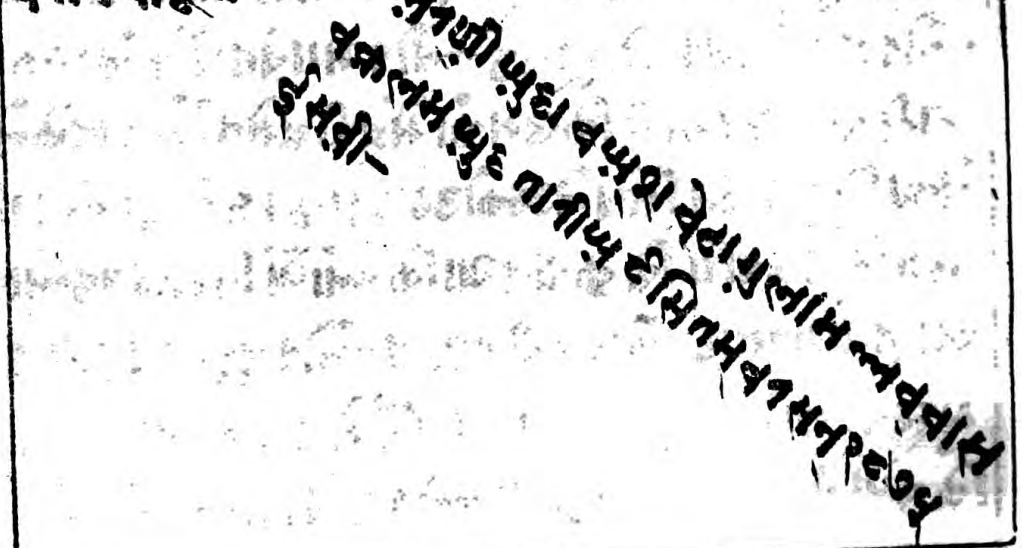

અપીલી દાવા ફૌજદારી

ભભૂતી સિંઘ બેટા પિરથી સિંઘ કૌમ ઠાકુર પેશ: નૌકરી
રહનેવાલા મહરવાણાર હાલ   મુદ્દઈ

બનામ

તુલસીરામ બેટા અહલાદ બિરહમન વ સીતારામ બેટા
ગંગાદીન વ દુર્ગા બેટા તુલસી રામ કૌમ બિરહમન રહને
વાલે મૌજા સિરસ પરગના મોહનલાલગંજ - મુદ્દઆઅલૈ
હુમ   મુતાબિક દફા ૩૨૩

તાજીરાત હિંદ

ગરીબ પરવર સલામત   જનાબ આલી
હાલ યહ હૈ કિ તારીખ ૨૬ જનવરી સન ૧૮૭૫ ઈસવી કો
મુદ્દઈ વાસ્તે કટવાને દો દરખ્ત આમ ઔર દો કોઠી
બાંસ જો કિ લાલા બેટા દેવીદીન જિનકા મુદ્દઈ નૌકર
હૈ ઉપર લિખે હુએ ગાંવ મેં ગયા થા ઔર મજદૂર મુકર્રર
કરકે દરખ્તોં કે કાટને કા લગા લગવા દિયા ઉસી વક્ત
મુદ્દઆઅલૈહ ને નજદીક સે આકર મના કિયા કિ
દરખ્ત મત કાટો મજદૂરોં ને કાટના બંદ કર દિયા મુદ્દઈ
ને કહા કિ ઇન દરખ્તોં કો લાલા બેટા દેવીદીન બિરપાની
જિનકા મુદ્દઈ નૌકર હૈ ફુસહર બિરહમન સે ખરીદ કિયા
ફિર મુદ્દઆઅલૈહ નમ્બર ૨ વ ૩ લાઠી બાંધે હુએ
આએ ઉસી વક્ત તીનોં મુદ્દાઅલૈહુમ   મુદ્દઈ કો
લાઠી વ લાત વ ઘૂંસા મારને લગે કિ મુદ્દઈ લાઠી કી
ચોટ સે બેહોશ હોકર ગિર પડા એક ધોતી ઔર એક

दुपट्टा और पुत्र नक़द एक कुल्हाड़ी छीन लिया और कहा कि जिनदा यहां से चले जाओ मुद्दई बड़ी मुशकिल से मौज़ा सिर मंडा परगना मोरादा में गया ६ दिन तक पड़ा रहा ७ सातवें दिन जब मुद्दई को कुछ ताक़त हुई गिरता पड़ता अदालत तक ज़िनदा हाज़िर आया जोकि मुद्दआअलेहुम ने मुद्दई को नाहक़ मार पीट किया है सो उम्मेदवार हूं कि मुवाफ़िक़ दफ़ा ३२३ ताज़ीरात हिंद मुद्दआअलेहुम बोलाये जावें और पीछे तहक़ीक़ात जुरम साबित के मुद्दआअलेहुम को सज़ा दी जावे — मालूम हो कि निशान जख़म आरे पुटनों के और कुहने पे और बायें हाथ में है —

इति श्री ... रहने वाला शहर ...
मिती ... मुद्दई तारीख २४ ...
सन् १८८९ ई० मुताबिक़ संवत् ...
लिखी सो आज —

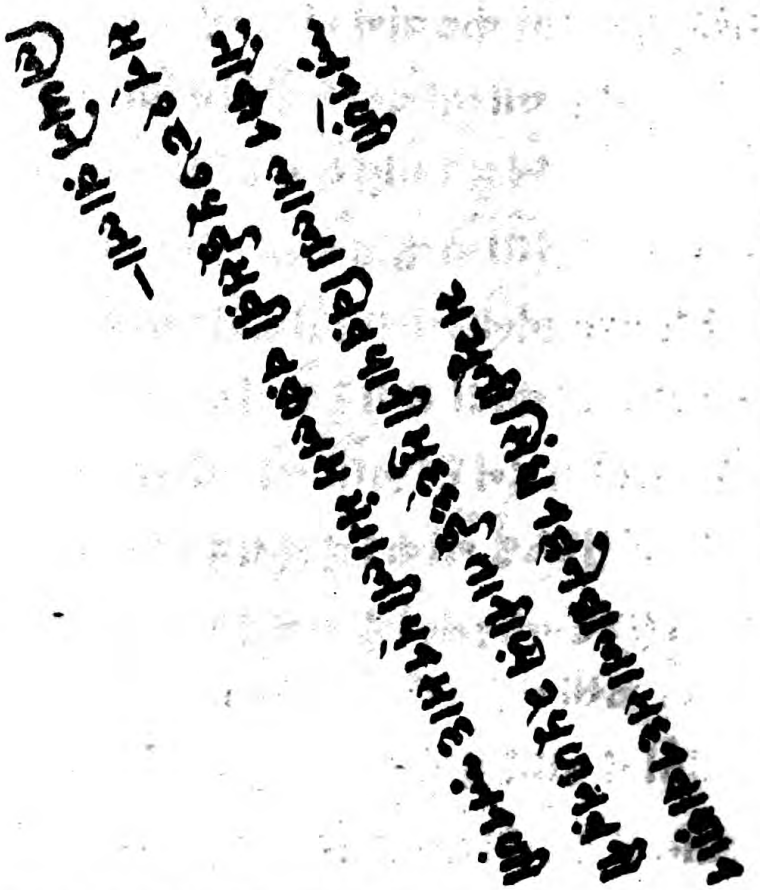

સમમન મુદ્દઆઅલૈહ કે નામ વાસતે તજવીજ
મુકદ્દમા મુતાલિક દફા ૪૨ ઐક્ટ ૮ સન્ ૧૮૭૯ ઈ
ઈસવી નમ્બર મુકદ્દમા ૭૨

ઐક્ટ લગાન કી અદાલત મેં ઇજલાસ કપતાન હેમન સાહિબ અસિસટનટ બહાદુર કમિશનર લખનઊ મુકામ ઇમામ બાડા રાજા મેરાનામ—

અનોસેની સિંઘ રહને વાલે વ પટટીદાર મોજા કલલી પચ્છિમ પરગના બિજનૌર તહસીલ વ જિલા લખનઊ

મુદ્દઈ

બનામ

મંગલ સિંઘ કૌમ ઠાકુર રહને વાલા વ કાશતકાર મોજા કલલી પચ્છિમ— મુદ્દઆઅલૈહ્ મ

દાવા ૭) બાબત બકાયા લગાન—

બનામ મંગલ સિંઘ બેટા પાલસિંઘ કૌમ ઠાકુર રહને વાલા વ કાશતકાર મોજા કલલી પચ્છિમ—

જોકિ અનોસેની સિંઘ મુદ્દઈ બેટા મુલ સિંહ રહને વાલા વ પટટીદાર મોજા કલલી પચ્છિમ ને નાલિશ તુમ પર ઇસ અદાલત મેં વાસતે દિલાપાને ૭) રૂપિયા બાબત બકાયા લગાન કી હૈ સો તુમકો હુકમ હોતા હૈ કિ તુમ તારીખ ૨૫ મહીના માર્ચ સન્ ૧૮૭૯ ઈ૦ વક્ત ૧૦ બજે દો પહર ઇસ અદાલત મેં આપ યા અપને કારિન્દા કે માર્ફત યા વકીલ અદાલત કે જો અચ્છી તરહ સે મુકદ્દમા કા હાલ જાનતા હો

और सब बातों का जवाब जो इस मुक़द्दमा के बारे में पूछी जाएँ दे सके या उसके साथ कोई ऐसा आदमी हो कि जवाब ऐसे सवालों का दे सके जवाब देने दावा औसेरी सिंध के वास्ते हाज़िर हो और वही तारीख़ जो तुम्हारे हाज़िर होने के लिये मुक़र्रर है वही तारीख़ मुक़द्दमा के फ़ैसला की तजवीज़ हुई है सो तुम को चाहिये कि अपने सब गवाहों को उसी तारीख़ पर हाज़िर करो और तुम को इत्तिला दी जाती है कि जो तुम १५ तारीख़ को हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे सुना और फ़ैसला किया जायेगा- सिवा इसके तुम को चाहिये कि अपने साथ जिसको कि मुद्दई देखना चाहता है और कोई दूसरी सनद जिसको तुम अपने जवाब देने की मज़बूती के लिये ज़रूर समझते हो लाओ

तारीख़ २६ फ़रवरी सन् १८७६ ईसवी—

दस्तख़त जज जज तजवीज़ करनेवाला

याद्दाश्त— तलबाना सिवाय मुक़र्ररा अदालत इस सम्मन के जारी होने से पहले दाख़िल होना चाहिये और तारीख़ रसीद से मुद्दआअलैह को कम से कम ७ दिन वास्ते मोहलत हाज़िरी और जवाबदिही के मिलना चाहिये—

सम्मन—या हुक्मनामा गवाह या दूसरा आदमी
मुवाफ़िक़ दफ़ा २४०, २४९, २५२, २५३, २६५,
२६६, २९८, २२६, ऐक्ट ८ सन् १८५९ ईसवी-

नम्बर मुक़द्दमा-

ऐक्ट लगान की अदालत में इजलास राय हरप्यारी-
लाल साहिब एक्स्ट्रा असिस्टन्ट कमिश्नर
बहादुर मुक़ाम-

अनोखी सिंह बेटा मूल सिंह क़ौम ठाकुर रहने-
वाला व पट्टीदार मौज़ा कल्ली पच्छिम परगना
बिजनौर- मुद्दई

बनाम

मंगल सिंह क़ौम ठाकुर रहने वाला मौज़ा रेहन-
मुद्दआ अलैह

दावा ३) बक़ाया लगान

बनाम अमरचंद बेटा बख़्तौरी क़ौम बिरहमन रहने-
वाला कल्ली पच्छिम-

इस मुक़द्दमा में तुमको वास्ते देने गवाही मुवाफ़िक़
दरख़्वास्त मुद्दई-

इस अदालत में ३ तारीख़ महीना जून सन् १८७६ ईसवी
वक़्त १० बजे हुक्म दिया जाता है और बाबत
ख़र्चा ख़ुराक गवाह को इसी के साथ भेजा जाता है
तारीख़ २६ महीना मई सन् १८७६ ईसवी-

दस्तख़त जज तजवीज़ करनेवाला

१— हाज़िरी गवाही देने के वास्ते या—
२— सनदों की पेशी (मुश्तरका) या—
३— हाज़िरी वास्ते देने गवाही और पेशी सनद—या
४— जवाब दिही नालिश बाबत रोकने या हटाने बीच देने रुपया डिक्री—

तम्बीह— जो शख़्स बुलाया गया कोई तरफ़दार मुक़द्दमा का हो या कि सम्मन फ़क़त वास्ते पेशी किसी सनद वग़ैरह हाज़िरी हो तो ज़िक्र उस अम्र का ख़ास के लिखना चाहिये—

याददाश्त— तलबाना मिआद मुक़र्रर पर सम्मन से पहले अदालत में दाख़िल होना चाहिये—

इजलास जनाब पंडित प्रेमनाथ साहिब तहसीलदार तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ—

दफ़ा २५२

रिक़ १० सन् १८७२ ई० सम्मन बनाम मुद्दआअलैह

मनसाराम बेटा राधाकिशुन क़ौम बनिया रहनेवाला मुनशीगंज— मुद्दई—

बनाम

हीरासिंह बेटा मन्नालाल क़ौम अहीर रहनेवाला ईसापुर मुद्दआअलैह

मुवाफ़िक़ दफ़ा ३५२ व ३२३ मजमूआ ताज़ीरात हिंद मंसाराम बेटा राधाकिशुन रहनेवाला मुंशीगंज

તહસીલ મલિહાવાદ જિલા લખનઊ —
સો હાજિર ન આના તુમ્હારા વાસતે જવાબદિહી મુકદમા
કે કિ તુમને તારીખ —
જુરમ મારપીટ —
કિ જિસ જુરમકી તારીફ દફા ૩૫૨ ઓર ૩૨૩ તાજીરાત હિંદ મેં લિખી હે જરૂર હે સો હુકમ દિયા જાતા હે કિ તુમ તારીખ ૮ અગસ્ત સન ૧૮૭૫ ઈસવી કો મુકામ તહસીલ મલિહાવાદ હમારે ઇજલાસ મેં હાજિર હો તાકીદ જાનો —

૬૦ પંડિત પેમનાથ સાહિબ તહસીલદાર —
ઓહદા તહસીલદાર સાહિબ —
ઇખતિયારાત મજિસટ્રેટ દરજા દૂસરા —
મુકામ તહસીલ મલિહાવાદ —
તારીખ ૩૦ જુલાઈ સન ૧૮૭૫ ઈસવી —

મોહર સરરિશ્તઃ તહસીલદારી મલિહાવાદ

વારનટગિરફતારી

ઇજલાસ પંડિત પેમનાથ સાહિબ તહસીલદાર મજિસટ્રેટ દરજા દૂસરા
તારીખ ૩૦ અકટોબર મુકામ લખનઊ

બનામ આફસર પુલિસ સાહિબ થાના મલિહાવાદ

જો કિ મુન્નાખાં બેટા ચુન્નાખાં કોમ પઠાન રહનેવાલા

बख़्शी पुर थाना मलिहाबाद बसबब जुर्म मार पीट दफ़ा ३२३ व ३२५ ताज़ीरात हिंद पकड़ने क़ाबिल हैं और इस जुर्म का बयान दफ़ा ३२३ व ३२५ मजमूआ ताज़ीरात हिंद में लिखा है इस वास्ते तुमको हुक्म दिया जाता है कि मुहम्मद अल्लाह मुन्ना ख़ां को पकड़ कर के हमारे सामने हाज़िर लाओ इस मुक़द्दमा में ताकीद जानो—

हुक्म

जो मुहम्मद अल्लाह मुन्ना ख़ां ख़ुद मुचलका और ज़मानत रु ५०) रुपिया की दाख़िल करे और ज़मानत मोतबर बाबत रु ५०) की तारीख़ ६ अगस्त सन १८७४ ईसवी को हमारे सामने हाज़िर होने के वास्ते देवे तो उसको छोड़ देना वाजिब है—

लिखा तारीख़ ३० जुलाई सन १८७४ ईसवी—

दस्तख़त

तहसीलदार साहिब — मोहर सरिश्ता तहसीलदारी मलिहाबाद

अर्ज़ी दरख़्वास्त गवाहों के बुलाने की अदालत से—

टिकट ।) टिकट ।) का चिपका है—

जौहरी सिंह बेटा नत्थू सिंह क़ौम ठाकुर रहनेवाला व नम्बरदार मौज़ा कल्ली पच्छिम परगना बिजनौर

मुद्दई

बनाम

मंगल सिंघ क़ौम ठाकुर रहनेवाला कल्ली पचछिम पराना बिजनौर — मुद्दआ अलैह

धारा ३६ वसूली लगान

ग़रीब परवर सलामत — जनाब आली

इस मुक़द्दमा की पेशी ५ जून सन् १८७६ ईसवी की मुक़र्रर है सो नीचे लिखे हुए गवाहों को तलब कुल वाले लोग पीछे तहक़ीक़ात के मेरा फ़ैसला किया जावे

नाम गवाहों के —

नाम गवाहों के जिनको तलब करना में बुलवाना मंज़ूर है —		नाम गवाहों के जिनको मैं ख़ुद अपने साथ हाज़िर लाऊंगा ॥
गंगादीन नम्बरदार मौज़ा कल्ली पचछिम	भगवंतसिंघ क़ौम बिरहमन रहनेवाला मौज़ा कल्ली पचछिम	भवानी परसाद कायस्थ का- सिंघा गंगादीन

तलबाना	ख़ूराक	तलबाना	ख़ूराक
।)	२)	।)	।)

ब गुनी किदही मोसमी सिंघ क़ोम
ठाकुर रहनेवाला पूर्वीहा जौला
कल्ली पचछिम पराना बिजनौर
तहसील लखनऊ तारीख़ २४ मई
सन् १८७६ ईसवी

दरख़्वास्त

इनकार नीलाम जाइदाद मदयून डिकरी जिसका इश्तिहार नीलाम हो चुका है और रसीद कुल ज़रे डिकरी जो बाबत फ़ैसला मे मदयून डिकरी से वसूल हो चुका है—

नारायन परसाद रहनेवाला इन्दौर— डिकरीदार

बनाम

बख़्शू हलवाई रहनेवाला इन्दौर

मतालिबा

२१) डिकरी

मैं कि नारायन परसाद बेटा बख़्शीराम मारवाड़ी रहनेवाला इन्दौर का हूं— सिरपर लिखे हुए मुक़द्दमा में मुझको नीलाम कराने दूकान बख़्शू डिकरादार का जोकि मैं ने क़ुर्क़ और उसको नीलाम का इश्तिहार ७ मई सन १८७४ ई० का कराया था मंज़ूर नहीं है क्योंकि बख़्शू डिकरीदार ने मेरा देना अदा कर दिया अब मुझको बख़्शू से कुछ दावा नहीं है सो रसीद २१) की दाख़िल अदालत करता हूं कि आगे को सनद रहै— और क़ानून के बमूजिब काम आवै— तारीख़ २ अपरैल सन १८७४ ईसवी—

६० टिकट८) गवाही दौलतराम वकील मज़कूर

नारायन परसाद बेटा बख़्शीराम गवाही हाज़िर रहनेवाला इन्दौर का

मुचलका हाज़िरी मुद्दआअलैह

मंगरू जोखू सेवूवा क़ौम पासी रहने वाला मगावान-पुर तहसील मोहनलाल गंज मुद्दई।

बनाम

शिवदीन चौकीदार क़ौम पासी रहने वाला मगावान-पुर मुद्दआअलैह

मैं कि शिवदीन बेटा मगरू चौकीदार मौज़ा मगावान-पुर तहसील मोहनलाल गंज ज़िला लखनऊ का हूं— इस मुक़द्दमा में मैं मुद्दआअलैह हूं इक़रार करता हूं कि जब तक मुक़द्दमा फ़ैसल न होगा अदालत में हाज़िर रहूंगा और जो ग़ैर हाज़िर हूं तो २५) रूपियां जुरमाना दूंगा इस वास्ते यह मुचलका लिख दिया कि सनद रहे और वक़्त पर काम आवे—

तारीख़ ४ मार्च सन् १८७६ ईसवी

द० निशानी दस्तख़त शिवदीन — गवाही
बक़लम बिरज बहादुर — शिवदयाल
बक़लम ख़ुद

गवाही
निशानी हीरा बिरहमन — गवाही उमेदराय

मुचलका हाज़िरी मुद्दआअलैह

मैं कि भैरीलाल क़ौम अहीर रहने वाला बख़्शी पूर का हूं—
इक़रार करता हूं कि सीताराम मुद्दई के मुक़द्दमा

मैं अब्दुलग़नी तहसील मलिहाबाद में तारीख़ २४ अगस्त
सन् १८७४ ईसवी को वक़्त १० बजे दिन के उसी वक़्त
और इसी कचेहरी में मुक़द्दमा जुर्म दफ़ा ३८५ और
३७२ ताज़ीरात हिंद में निसबत मुहम्मद ईसी नाम के हाज़िर
तहसील हूं। और ग़ैरहाज़िरी करूं तो इक़रार करता हूं
कि सौ रुपिये सरकार में दाख़िल करूं - लिखा तारीख़ २८
जून सन् १८६९ ईसवी -
द० मेढ़ीलाल

(मुचलका लड़ाई झगड़ा न करने के वासते)

मैं कि भवानी दीन वेद देवी दीन क़ौम ठाकुर रहने
वाला कहरा परगना हैदरगढ़ ज़िला बरेली का हूं -
जो कि सरकार से झगड़ा और लड़ाई न करने के
वासते एक साल तक के मुचलका मांगा जाता है इस
वासते मैं इक़रार करता हूं कि साल भर तक झगड़ा
फ़साद न करूंगा और ऐसा कोई काम न करूंगा जिस
से झगड़ा वग़ैरः का शक हो और जो इस मुचलका
के ख़िलाफ़ करूं तो पूरे रुपिये जुरमाना सरकार में दाख़िल
करूं - तारीख़ २४ मई सन १८७२ ई०
दसतख़त हाकिम

६० भवानीदीन   गवाही इस्लामी, गवाही अंग्रेज़ी कुमान

इश्तिहार नीलाम

बसबब इजराय डिकरी मुताल्लिक़ा दफ़ा २४८ रेकाट
८ सन् १८७५ ईसवी -
नम्बर मुक़द्दमा २८७

अदालत दीवानी इजलास पंडित श्रीराम नरायन साहिब बहादुर रेक्सट्रा असिसटंट कमिश्नर ज़िला लखनऊ

मुक़ाम

विनायक परसाद रहनेवाला मौज़ा कुटौंवा ख़ास परगना महोना तहसील मलिहाबाद—

डिकरीदार

बनाम

गुलाबी हलवाई रहनेवाला मुनशीगंज तहसील मलिहा-बाद ज़िला लखनऊ

मदयून डिकरी

तादाद रुपिया डिकरी ८३।) सिवाय ख़रचा—

सबब इजराय डिकरी बाबत मुक़द्दमा देने ८३।) के ।

जो डिकरीदार को देना वाजिब है इशतिहार दिया जाता है कि तारीख़ ६ मई सन् १८७५ ईसवी वक़्त १२ बजे के मुक़ाम मौज़ा हक़ मुताल्लिक़ गुलाबी बेटा महमदी क़ौम हलवाई रहनेवाला मौज़ा कुटौंवा ख़ास तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ—

मुद्दआ अलैहुम मुक़द्दमा की जायदाद जो फ़िहरिसत में लिखी हुई है उसका नीलाम आम मुताबिक़ हुकम इस अदालत के होगा—

तारीख़ २५ महीना मार्च सन् १८७५ ईसवी—

जज तजवीज़ करनेवाला

फ़ेहरिस्त

हक़ मुताबिक़ क़ागज़ात बाबत एक दुकान जिसकी हद्दें नीचे लिखी हैं इटावा में है –

हद पूरबी किसी दुकान का दरवाज़ा

[illegible]

हद पश्चिमी किसी दुकान की दीवार से मिली हुई

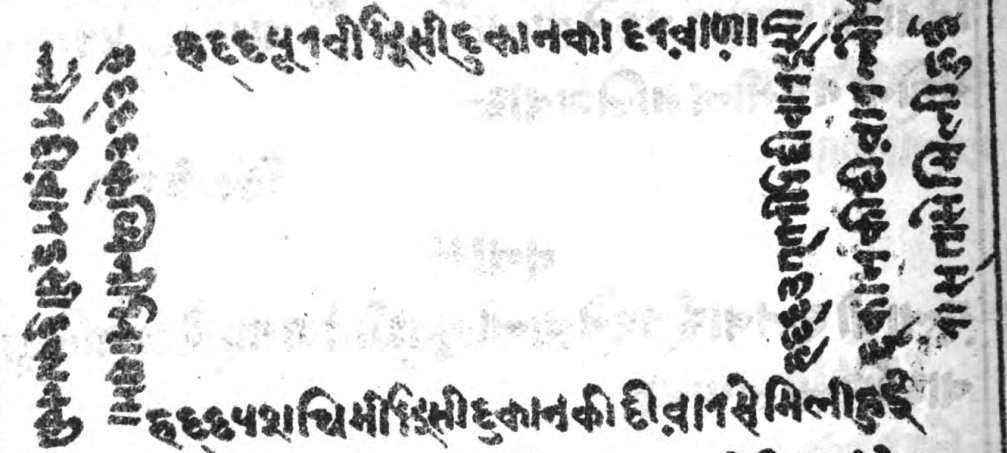

दादरसी – दिलवाना इस्तिहक़ाक़ हुक्म डिक्री के –

पहले मिसल मुक़द्दमा पर आध लाग में दाख़िल होना चाहिये

अर्ज़ी

ग़रीब परवर सलामत – जनाब आली

अर्ज़ यह है कि मुझको आज एक बड़ा ज़रूरी काम है – और बिना बंदोबस्त उस काम के मेरा बड़ा हरज है और सिवाय मेरे दूसरे से उसका बंदोबस्त हो नहीं सकता है सो उम्मेदवार हूं कि आज चार घंटा की रुख़सत १२ बजे से ४ बजे तक सरकार से बख़्शी जावे – फ़िदवी हद्द अदब मुलाहिज़ा आफ़ताब दौलत और इक़बाल का हमेशा चमकता रहे –

अर्ज़ी फ़िदवी [illegible]
[illegible] फ़िदवी [illegible]
पाठशाला [illegible]
तारीख़ [illegible]
सन १८७[illegible]

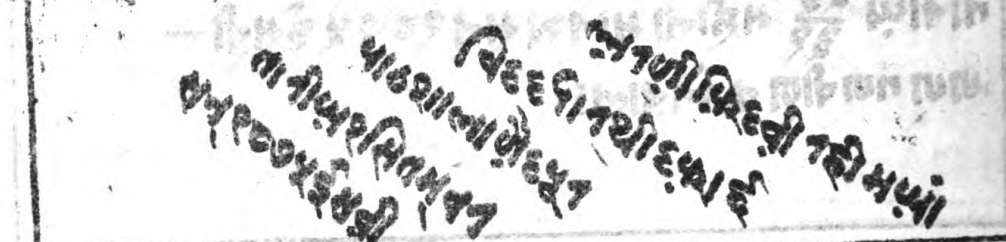

[illegible]

गरीबपरवर सलामत जनाब आली

इन दिनों पानी न बरसने के सबब से बड़ी गरमी होती है और जनाब ने मदरसा का वक़्त बदल दिया है सो हम लोगों में से अकसर लड़के ऐसे हैं कि वह दो दो तीन तीन मील से और भी ज़ियादा से मदरसा में हाज़िर होते हैं फिर तो गरमी और धूप और लू में दस बजे आना और चार बजे जाना दिक़्क़त से ख़ाली नहीं है और ऐसे आने जाने में बीमारी का भी शक है सो यह अरज़ी हुज़ूर में देकर उम्मेदवार हैं कि जब तक बरखा न हो मदरसा का वक़्त बदस्तूर ६ बजे से १० बजे तक बहाल किया जावे ग़रीब जानकर अरज़ किया इलाही दौलत और इक़बाल आपका हमेशा बढ़ता रहे

अरज़ी करीमबख़्श व बुध
दारध्यां बीर: विद्यार्थी
ई० ७ जून ६ व ज़िला
इस्कूल उन्नाव

अरज़ी

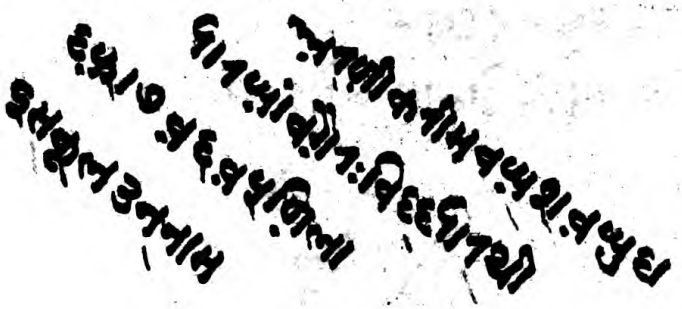

जनाब साहिब डिपटी कमिशनर बहादुर ज़िला सीतापुर—

गरीबपरवर सलामत जनाब आली

हाल यह है कि मैं इलम फ़ारसी और उर्दू को अच्छी तरह

से जानता हूं और गिरिजा भी सरकारी इसकूल में दाखिल
कर चुका हूं सो लिफाफा और इसके साथ मेरी नकल सार्टी
फिकेट दी हुई जनाब साहिब डाइरेक्टर बहादुर सरिश्ता
तालीम अवध जो इस अरजी में शामिल है उससे बखूबी
मालूम होती है इसके सिवाय कारगुजारी अदालत भी बहुत
अच्छी तरह से कर सकता है क्योंकि तीन महीना अदालत
दीवानी ज़िला बहराइच में मोहर्रिरी कर चुका हूं और मुद्
दत से मुझको अभिलाष अवध तीन अमला की थी और अब आजकल
हुजूर के दफ़्तर में दो तीन जगह ख़ाली होनेवाली हैं सो मैं
भी उमेदवार हूं कि गरीब को मेहरबानी करके उनमें से
किसी न किसी जगह पर मुकर्रर फ़रमाइये कि बदौलत
हुजूर अपनी मुराद को पहुंचकर दौलत और दरजा के
बढ़ने की दुआ करता रहूं—
फ़िदवी हद्द अदब—
खुदा आपकी दौलत और इकबाल को हमेशा रोशन रक्खे

मोहनजी गांधी अरजीदार उमेदवार
पोरबंदर ना रहीश फिदवी
सन १८७४ ईसवी

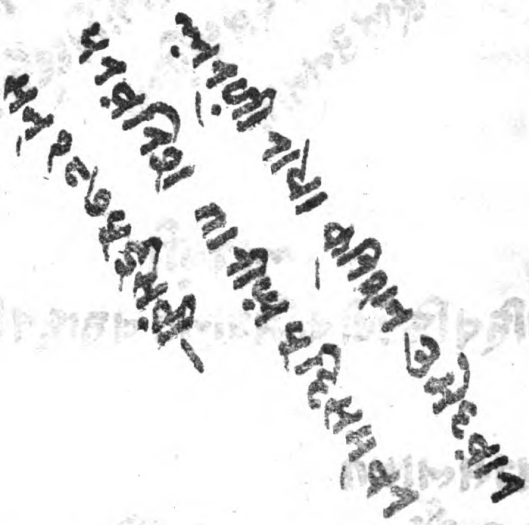

रूबकार

रूबकार सदर सरिश्तातालीम इजलास में साहिब डाइरेक्टर आफ़ पब्लिक इनसट्रकशन अवध तारीख़ २९ अगस्त सन् १८७६ ईसवी-

मोहकमा सरिश्ता
नम्बर २६

हुकुम हुआ।

जो कि अर्ज़ दरख़्वास्त अफ़सर मुदर्रिसीन उनाम लिखी हुई तारीख़ १८ अगस्त सन् १८७६ ईसवी बाबत इसके कि द महीना पानेवाले लड़कों में से ६ को १ सितम्बर और १२ को २९ नवम्बर सन् १८७५ ई० से और १२ को ३० जनवरी सन् १८७६ ई० से महीना दिया जाता सो अर्ज़ यह है कि लड़कों को महीना आख़िर तारीख़ अगस्त सन् १८७६ ईसवी से बख़्शा जावे या इमतिहान सालाना तक हुकुम मुनासिब से इत्तिला दी जावे अंगरेज़ी में लिखी हुई साहिब इनसपेकटर बहादुर मदारिस सरकिल ग़ारबी अवध तारीख़ २४ अगस्त सन् १८७६ ईसवी इस दफ़्तर में आई सो ख़िदमत में साहिब इनसपेकटर बहादुर मदारिस सरकिल मग़रबी मुल्क अवध लिखा जावे कि जनाब साहिब चीफ़ कमिशनर बहादुर मुल्क अवध की ख़िदमत में दरख़्वास्त की गई है कि महीना लड़कों को १ सितम्बर सन् १८७६ ईसवी से जो फ़ेहरिस्त वज़ाइफ़ में छपी हुई है और जिसको डिपटी इनसपेकटर उनाम ने जारी दिया हो।। इति।। मक़ाम सन्

१८७६ ईसवी तक बढ़ा दी जावे लेकिन अभी हम ठीक
नहीं कह सकते कि मंजूर होगा या नहीं—
दस्तख़त जनाब साहिब डाइरेक्टर बहादुर
अवध—

परवाना

हुक्म से— साहिब बहादुर डाइरेक्टर आफ़ पबलिक इन्सट्रक्शन अवध—

मोहर सरिश्ता
डाइरेक्टरी

दस्तख़त साहिब डाइरेक्टर साहिब बहादुर—
शराफ़त पनाह मौलवी इनायत अली अफ़सर मुदर्रिस मदरसा महोली ख़ुश रहो—
दरख़्वास्त लिखी हुई २२ अगस्त सन् १८७६ ईसवी आपको लिखा जाता है कि क़ायम मुक़ाम मुदर्रिस जेल सीतापूर मुंशी काली परसाद साहिब की जगह पर ३०) रुपिया महीना पर नौकर रक्खे गये आपको चाहिये कि मुदर्रिस दूसरे मदरसा महोली को चारज देकर अपने काम पर कल दस बजे सेन्ट्रल जेल में हाज़िर हूजिये और आपकी सार्टीफ़िकट भी इस परवाना के साथ भेजी जाती है इत्तिला के वास्ते आपको लिखा गया—
तारीख़ २६ अगस्त सन् १८७६ ईसवी—

दरख़्वास्त नक़ल हुकम पाने के वास्ते —

टिकट ।)

दरख़्वास्त देने वाले का नाम	अबदुल समद ख़ां कारिंदा मुंशी कुदरत रियाज़ अली साहिब नम्बरदार क़सबा बिजनौर —
नाम हाकिम	राय कन्हैयालाल साहिब रेकसट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर बहादुर ज़िला लखनऊ —
नाम फ़रीक़ैन	मुसाहिब अली रहने वाला क़सबा बिजनौर — मुद्दई — बनाम छिद्दीलाल कोरी सअनहीन और अबदुस समद ख़ां मुद्दआअलैहिम
सूरत मुक़द्दमा	दफ़ा ९३ बाबत ग़ल्ला बटाई रबी सन १२८३ फ़सली —
तारीख़ फ़ैसला	८ जून सन् १८७६ ईसवी
नाम मौज़ा और परगना	क़सबा बिजनौर तहसील व ज़िला लखनऊ
ख़ुलासा	दरख़्वास्त मिसल ने नक़ल तजवीज़ पंत अंगरेज़ी में वास्ते अपील के मुहकमे कुशनरी से मिल जावे

सवाल

જનાબ આલી

જોકિ નક઼લ હુકુમ લેના ફ઼ૈસલા ઓર તજવીજ઼ અંગરેજ઼ી વાસ્તે જ઼રૂરત અપીલ કે મુઝ સવાલ દેને વાલે કો દરકાર હૈ સો ઇસ સવાલ કો હુજ઼ૂર મેં દેકર ઉમેદવાર હૂં કિ નક઼લ કાપિયા કે મુવાફ઼િક઼ મુઝ સવાલ દેને વાલે કો હુજ઼ૂર સે મિલ જાવે—

સવાલ — કાગ઼જ સાદા ટિકટ ॥)

એક — સમેત

નક઼દ — એક

૫)

ઓહદીન અબદુસ્સમદ ખાં ક઼ાદિર

મુનશી ઇમતિયાજ઼ અલી સાહિબ નમ્બર-

દાર ક઼સબા વિણમીર તહસીલ ઓર જ઼િલા

લખનઊ-તારીખ઼ ૭ જુલાઈ સન ૧૮૭૯ ઈ૦

દસ્તખ઼ત અબદુસ્સમદ ખાં

બક઼લમ ખુદ

બક઼લમ બહાદુર સિંઘ

અર્જ઼ીનવીસ

ઇશ્તિહાર વ નોટિસ

માલૂમ હો કિ મેમ્બરાન દેહલી સુસાઇટી કે હુકુમ સે મુવાફ઼િક઼ માસ્ટર લછિમનદાસ સાહિબ વાઇસ સેક્રેટરી સુસાઇટી ને વિલિયમ નોવરસ સાહિબ કી તારીખ઼ અમેરિકા કા તરજુમા અંગરેજ઼ી સે ઉર્દૂ જ઼બાન મેં કિયા હૈ ઓર દેહલી સુસાઇટી કી તરફ઼ સે પહિલે હિસ્સા કા તરજુમા

छपकर तैयार भी हो गयी है – इस हिस्सा में अमेरिका का अगले ज़माने से दरियाफ़्त होने सन् १४९८ ईसवी तक का बहुत साफ़ साफ़ हाल है और जहाज़ चलाने के काम की तरक़्क़ी और उस मुल्क के मालूम करने की जो जो तदबीरें जिस जिस वक़्त पर की गई थीं उन सब का साफ़ साफ़ बयान भी है – इस किताब की मोटाई २५९ सफ़ा की है और किताब पीछे ।।। क़ीमत और ।) महसूल डाक का मुक़र्रर है जिन साहिबों को ख़रीदनी इस किताब की मंज़ूर हो वह ।।।=) भेज कर कमतरीन जार्ज याना काशीनाथ मोहर्रिर देहली सुसाइटी से मंगा लें –

दस्तख़त काशीनाथ मोहर्रिर देहली
सुसाइटी – १ अगस्त सन् १८६६ ई०

इश्तिहार –

मुवाफ़िक़ हुक्म साहिब डिपटी कमिश्नर बहादुर ज़िला फ़ल्का –

ज़ाहिर हो कि गुलाब राय बेटा महताब राय क़ौम बनियां रहने वाला महल्ला –

उमर ३६ साल काला रंग छोटा डील बड़ी बड़ी आंखें दाहने हाथ में छः उंगली – साहिब दीन बेटा गाधीन रहनेवाला महल्ला – को ख़ूनी मार कर और ३००) नक़द और २५६०) के दस नोट और कुछ ज़ेवर और असबाब ले कर फ़रार भाग गया है सो यह इश्तिहार जारी किया जाता है कि जो शख़्स गुलाब राय को अदालत

में दाख़िल करेगा उसको ५००) रुपिया सरकार से इनाम
मिलेगा—
तारीख़ ३० अक्टूबर सन् १८७४ ईसवी—
दस्तख़त साहिब डिपुटी कमिश्नर बहादुर
ज़िला—

डिकरी अदालत इब्तिदाई

नम्बर मुक़द्दमा १२० सन् १८७४ ईसवी—
अदालत दीवानी साहिब एक्स्ट्रा असिस्टेन्ट
कमिश्नर बहादुर—
सीतल परसाद बेटा छोटू लाल बनिया रहने वाला—
और दूकानदार कुटौना परगना महोना— मुद्दई

बनाम

इमाम ख़ां बेटा छोटे ख़ां क़ौम पठान रहने वाला और
दूकानदार कुटौना परगना महोना— मुद्दआअलैह
दावा ७५) रुपिया बाबत तमस्सुक लिखे हुवे तमस्सुक के
आज यह मुक़द्दमा इजलास पंडित श्यामनरायन
साहिब एक्स्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर बहादुर
ज़िला लखनऊ में सामने सीतल परसाद मुद्दई
और गोपाल नरायन वकील मुद्दआअलैह के वास्ते
सुनने और बहस के पेश हुआ और जो सबूत दाख़िल
किया हुआ मुद्दई और मुद्दआअलैह ने पेश किया
वह सुना गया और जो दोनों तरफ़ों के गवाहों ने बयान
किया उस पर अच्छी तरह से ग़ौर किया गया सो

अदालत हुक्म देती है और डिकरी करती है डिकरी ७॥) असिल और सूद सीतलप्रसाद मुद्दई के हक़ में बनाम इमामी हलवाई मुद्दआ अलैह दी जावे और ख़र्चा ज़िम्मे मुद्दआ अलैह इसी तरह पर डिकरी जारी की जावे—

आज तारीख़ २६ फ़रवरी सन् १८७५ ईसवी यह डिकरी अदालत की मुहर और हमारे दस्तख़त से तैयार हुई—

हिसाब ख़र्चा मुद्दई ज़िम्मे मुद्दआ अलैह		ख़र्चा मुद्दआ अलैह ज़िम्मे मुद्दआ अलैह	
इस्टाम्प क़ानूनी	३।=)	×	
तलबाना	।।=)	×	
मेहनताना वकील	३।)	३।)	मेहनताना
मुतफ़र्रिक़ात	।) वकालतनामा	।)	वकालतनामा
जोड़	६॥)	३॥)	

दस्तख़त हाकिम

हस्तखत सत दूकानदारिकी मुकद्दमा [illegible] दीवानी [illegible] साहिब [illegible] दिकत ॥ दिवानी ॥ का विषय है

नम्बर मुकद्दमा	
तारीख फैसला	२० फरवरी सन् १८७५ ईसवी -
नाम	[illegible] रहनेवाला मौजा [illegible] मुद्दई [illegible] रहनेवाला मौजा [illegible] मुद्दआलेह [illegible] मुद्दईन
[illegible]	नहीं हुआ
[illegible]	नहीं हुआ
[illegible]	हुआ
[illegible]	[illegible]
[illegible]	(८) [illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
नाम [illegible]	[illegible] रहनेवाला [illegible] मौजा [illegible] तहसील [illegible] जिला [illegible] -
[illegible]	सरकार से कौन मदद चाहिये
	[illegible] नहीं है सो [illegible] दूकान [illegible] नीचे लिखी है [illegible] हुआ की [illegible] दिलाया जावे - [illegible] दूकान का [illegible] [illegible] सन् १८७५ ईसवी [illegible] वकील -

हुक्म समनाबाने इजराय डिकरी बमूजिब ... कुरकी जायदाद
गैरमनकूला मुताबिक़ दफ़ा २३४ ऐक्ट ८ सन १८५९ ईसवी

अदालत में पंडित शम्भूनाथ साहिब एकस्ट्रा असिस्-
टंट कमिशनर बहादुर ज़िला लखनऊ

नम्बर मुक़द्दमा

राम परसाद रहनेवाला मौज़ा कुटौंजा परगना महोना तहसील
मलिहाबाद— डिकरीदार

बनाम

इमामी हलवाई रहनेवाला ऐज़न्

मदयून डिकरी

पू० डिकरी का रुपिया ॥ ख़र्चा हाल

बनाम इमामी बेटा क़ौम हलवाई रहनेवाला मौज़ा
कुटौंजा तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ— मदयून
इस मुक़द्दमे में—इस हुक्म से तुमको बदलने जायदाद
तुम्हारी जैसा नीचे लिखा है बेचने और बख़शदेने या
और किसी तरह से मनाही की जाती है और कोई शख़्स
मोल और बख़शिश या किसी और तरह से न लेवे क्योंकि
वह जायदाद इस हुक्म से इस मुक़द्दमा में कुरक की गई है-
तारीख़ २ माह मार्च सन् १८७४ ईसवी

जज तजवीज़ करनेवाला

कैफ़ियत हक़ मुताबिक़ मदयून बाबत एक दूकान जो
कुटौंजा में है उसकी चारों हद्दें यह हैं—

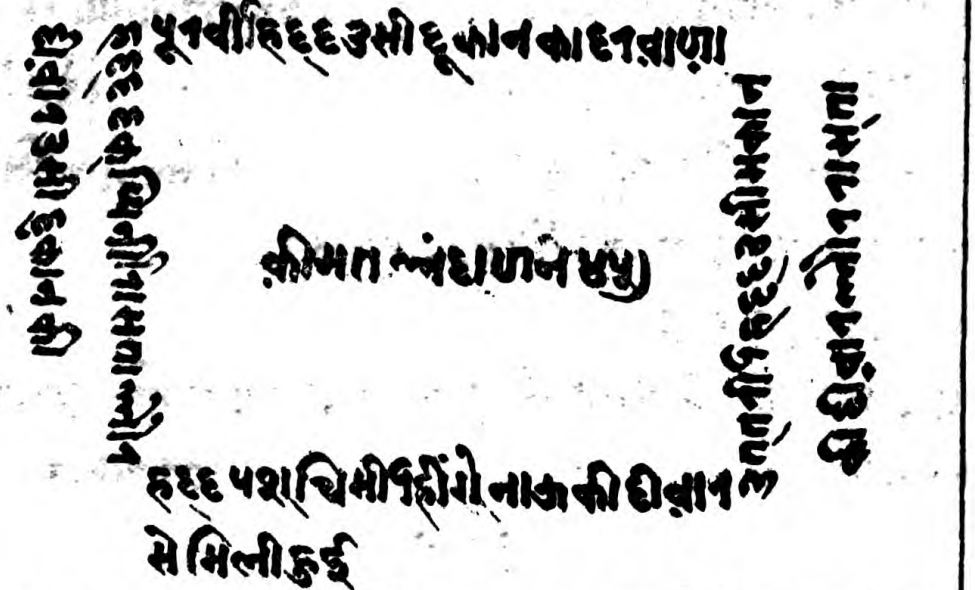

पूरबी हद्द उसी दूकान का दरवाजा

कीमत अन्दाजन ४७)

हद्द पश्चिमी पड़ोसी नाऊ की दीवार से मिली हुई

दादरसी तलबाना पहले इस हुकुमनामा के जारी होने से पेशतर मुकर्रर पर अदालत में दाखिल होना चाहिये-
तलबाना १)

अपील

इमामी बेटा छोटे कौम हलवाई रहनेवाले और दूकानदार इटौंजा परगना महोना तहसील मलिहाबाद जिला लखनऊ

मुद्दआलेह अपीलेन्ट

बनाम

राम प्रसाद बेटा छोटे राम कौम मारवाड़ी रहनेवाला और दूकानदार इटौंजा परगना और तहसील और जिला ऐजन

मुद्दई रेसपान्डेन्ट

दावा ४७) रुपिये मय असल
और सूद बाबत तमस्सुक के
अपील नाराजी फैसला पंडित शालिग्राम नरायन साहिब
ऐक्सट्रा असिस्टन्ट कमिश्नर बहादुर लखनऊ -

तारीख २९ फ़रवरी सन् १८७५ ईसवी

१— मुद्दई ने दावा असल और सूद समेत तमस्सुक से किया लेकिन कोई सबूत इस बात का नहीं है कि मुद्दई ने तमस्सुक का रुपिया अदा किया था यह अम्र भी मुद्दई के बयान से साबित है कि पहले ५) पांच ही रुपिये अपीलैन्ट को दिया था जिस के पीछे २५) जिन का कोई सबूत नहीं है—

२— अपीलैन्ट ने यह रुपिया मुद्दई से परागदत्त का क़र्ज़ा अदा करने के वास्ते लिया था और उस को दिला दिया—उस को रुपिया देना अपीलैन्ट के देने के बराबर था जब उस को रुपिया नहीं दिया गया तो क्योंकर अपीलैन्ट से पा सकता है—

३— और जो यह ख़याल किया जावे कि जब परागदत्त को दिलाया गया और परागदत्त ने नहीं पाया तो परागदत्त मुद्दई पर नालिश करे और मुद्दई अपने फ़रेब से इस नालिश में फ़ायदा उठावे तो भी मेरी उस दूकान में किराया पर तीन साल तक २) दो रुपिया महीना पर रहा और कुछ बाबत किराये के नहीं दिया उस में मुजराकारी परागदत्त को हुक्म नालिश का होना—

४— अदालत मातहत ने बग़ैर मुजरा देने रुपिया किराये के जो कि अपीलैन्ट को मिलना थे जिस की बाबत मुद्दई ने भी कोई उज़्र नहीं किया था बमूजिब फ़ैसला मुवर्रख़ा २२ अक्टूबर सन् १८७५ ईसवी— डिकरी दी गई—

५— जो मुद्दई मेरी दूकान में २) दो रुपिया माहवारी

किराया दिये न रहा होता तो कुल छः साल के सूद का क्यों न दावा करता तो यह साबित है कि वे किराया दिये रहा और किराया उसके जिम्मे देना वाजिब है—

६—समझने की बात है कि अगर मुद्दई ने रुपिया दिया होता और किराया का रुपिया उसके जिम्मे देने को न होता तो क्यों इस क़दर अरसा तक अपना दावा न करता—

७—जब असल ही रुपिया का देना साबित नहीं है तो उस का सूद वैसा और क्या दिलाया जाय यह सब ऊपर लिखा हुआ हजूर में देकर उम्मेदवार हूं कि पीछे गौर होने फैसला मातहत के अपना रुपिया खर्चा दिलाया जाऊं—

अपीलेन्ट कि नाम मेरा इस
अरजी में लिखा है इक़रार करता
हूं कि बयान इस अरजी का मेरी
समझ बूझ में ठीक और दुरुस्त है
दसतखत इमामी वकील मुद्द

अरजी फ़िदवी इमामी [illegible] वाला
और इक़रारनामा इन्हीं का परवाना मको ना
तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ—
मुद्दई अपीलान्ट [illegible] अपीलेन्ट
तारीख १७ मारच सन १८७५
ईसवी—

अपील

ठाकुर बलदेव सिंह बेटा माज सिंह क़ौम पवांर पेशः ज़मींदारी रहनेवाला जैपारपूर परगाना मनवां तहसील बाड़ी ज़िला सीतापूर मुद्दई — मुद्दई

मुसम्मात सितालो बेवा और वारिसा महावीरसिंह और मुसम्मात सितालो बेवा रघुवीरसिंह सौतेली मां रतनसिंह नाबालिग़ रहनेवाले मौज़ा लालपूर परगाना महोना तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ मुद्दआअलेहुमा — मुद्दआअलेहुमा

दावा दख़लयाबी २३ क़ित्ता ज़मीन जो कि तिहननामा में लिखे हैं और २०॥) सूद —

अपील नाराज़ी फ़ैसला पंडित शिवराम नरायन साहिब एकस्ट्रा असिस्टेन्ट कमिशनर बमुक़ाम लखनऊ तारीख़ २४ मार्च सन १८७५ ईसवी

१— मुद्दई ने मुद्दआअलेहुमा नम्बर १-२ के ख़सम के तिहननामा लिखे हुवे पर दावा किया था मुद्दआअलेहुमा नम्बर १-२ ने कोई सबूत मिरो के रूपिया के अदा करने का नहीं दिया अदालत मातहत ने सिर्फ़ उज़रदारी मुद्दआअलेहुमा नम्बर २ दावा मुद्दई डिसमिस किया यह काम इनसाफ़ का नहीं है —

२- मुद्दआअलेहुमा नम्बर २ इस मुक़द्दमा में उज़रदारी नहीं कर सकती थी क्योंकि अदालत दीवानी से अपना साबित करार दि-

३ – जो यह डिकरी रद्द न कराई गई हो और रतनसिंह नाबालिग़ रज्जनसिंह के भतीजे हैं तो कोई सार्टीफ़िकट विरासत नहीं हासिल करना है कि जिस के ज़रिये से हक़ वापसी ज़मीन दावा की हुई का हासिल होवे –

४ – वह डिकरी रज्जनसिंह और महावीरसिंह बेवा रज्जनसिंह के मुक़ाबिला में थी रतनसिंह जो आपको रज्जनसिंह का भतीजा बतलाता है उस से फ़ायदा नहीं पा सकता है – क्योंकि महावीरसिंह वारिस रज्जनसिंह है नकि रतनसिंह –

५ – कोई सबूत नहीं है कि रतनसिंह भतीजा रज्जनसिंह के भाई का लड़का बाप महावीरसिंह का है –

६ – रज्जनसिंह की जायदाद नीलाम होगई तो भी कोई हक़ रतनसिंह का नहीं रहा जो रतनसिंह को कोई दावा होवे तो अदालत दीवानी से पहले अपना हक़ साबित करे तब फ़ायदा उठा सकता है नकि इस मुक़द्दमा में –

७ – जब गिरों के रुपिया का देना साबित नहीं है तो दावा रद्द (ख़ारिज) मुद्दई का भी अदालत मातहत ने डिसमिस किया सो यह सब वजह ऊपर लिखी हुई है करार उम्मेदवार हूं कि पीछे रद्द होने फ़ैसला मातहत के डिकरी दख़ल पाने ज़मीन दावा की हुई की मेरे हक़ में डिकरी ऊपर मुद्दआअलैहुमा के जारी की जावे मैं अपीलेन्ट कि नाम मेरा नीचे लिखा है इक़रार करता हूं कि बयान इस अर्ज़ी का जहां तक मुझको समझ बूझ

है ठीक और दुरुस्त है —

दस्तखत हिंदी ठाकुर बलदेवसिंह

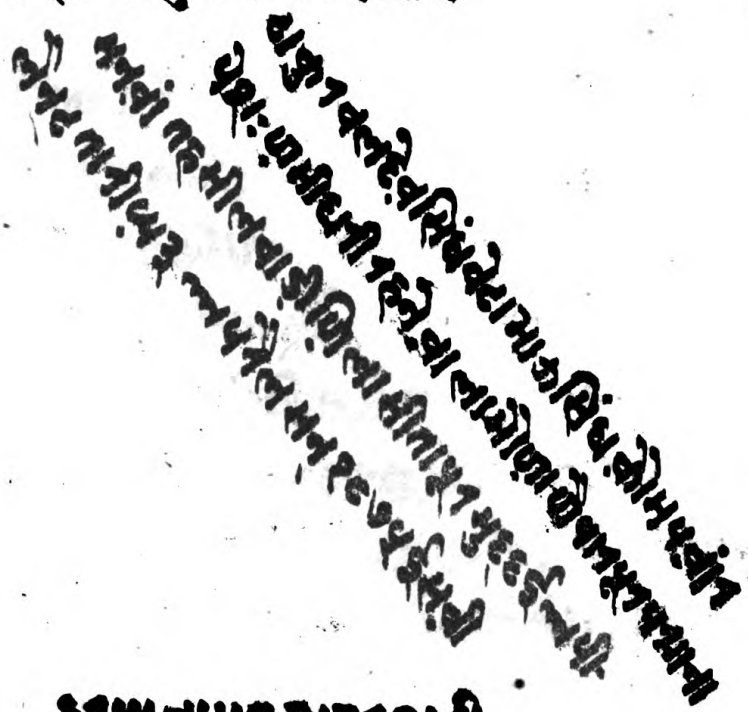

ठाकुर बलदेवसिंह [illegible]

मोहर: [illegible]

[illegible] तहसील बारासिवनी जिला बालाघाट [illegible]

[illegible] सन् १८७५ ई० [illegible]

दरख्वास्त उज्रदारी

असगर अली   उज्रदार

बनाम

हरदेव बख्श   मुद्दई

गरीबपरवर सलामत   हस्ब जैल पर

लिखे मुकद्दमा मुद्दई ने जायदाद हरदेव बख्श मुद्दई

[illegible] पुलकुकनापिल   बनाम

सूद समेत बाक़ी पिछले साल   अहमद हुसैन मुद्दआ-

[illegible] के फैसला के पहले   अलैह

से हुई की जायदाद कुर्क है [illegible]

[illegible] है [illegible] को [illegible]

लिखी हुई जायदाद से कुछ वास्ता दस्तख़ती अहमद हुसैन

और सरोकार नहीं है क्योंकि असल कूपिया मुहर उजारदार का था और महम्मद हसन बिहिश्त वासी मीर अहमद हसन मुहम्मद अली के कारिंदा की तरह हमारी तरफ़ से काम ठेकों का किया करता था सो मैंने यहां की तसदीक इकरार नामा रजिस्टरी किया हुआ लिख्या हुआ अहमद हुसेन मुहम्मद अली तारीख़ ७ जुलाई सन् १८७६ ईसवी से अच्छी तरह से साबित है — उ मे इकरार हूं कि कारिंदगी की तरह कीराम के पीछे काम की हुई जायदाद हुकूक की ओड़ हो जावे और घरका मुहर ई से दिला पाके—

मैंने रूबरू दे लिख्या तारीख़ २१ जनवरी सन् १८७६ ईसवी

मैं उजारदार कि नाम मेरा ऊपर लिख्या है इकरार करता हूं कि जो कुछ इस अरजीमें लिख्या है मेरी समझ बूझ से ठीक ठीक और दुरुस्त है—

द० असगर अली वकील अमृतसर — २१।१

मिसिल मुकद्दमा लगान — तमाम

२२।७६

किलगई

नम्बर मुकद्दमा लि आ।दि वजिसदर—२ २३ ई—

मौज़ा सालिगपुर				
मीयाद ख़ाना। १	नम्बर ख़ाना २	तफ़सील ख़ाना ३	तारीख़ इजराय की	तारीख़ फ़ैसला
१२८९ लगान	२९	जिसका २ रु० आ८ लगान	३ मई सन् १८७६ ईसवी	पहिली जून सन् १८७६ ईसवी

शेख़ हसमतअली मुद्दई बनाम शेख़ मुहम्मद हाफ़िज़ अब्दुल्ला रहनेवाला काकोरी बनाम इनका दावा दिलापाने लगान सन् १२८२ फ़सली—

इक़रार में शामिल लेनेको	तादाद काग़ज़ात	इक़रार से ख़ारिज करने को	तादाद काग़ज़ात	
नम्बर १ ऊपर शेख़ हसमत को	१क	नम्बर १ इसअमान	१क	
नम्बर २ शेख़ हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुल्ला	१क			
नम्बर ३ इक़रार फ़ुरमों के	१क			
नम्बर ४ मुख़्तारनामा की	१क	१० जुलाई सन् १८७६ ईसवी		

नम्बर १२८६ शेख़ सदर लगान—

मुहम्मद हाफ़िज़ अब्दुल्ला बेटा मौलवी अताहुल्ला कौम शेख़ पेशः चौक में रहनेवाला महल्ला क़स्बा काकोरी

क़सबा काकोरी तहसील ज़िला लखनऊ   मुद्दई

डिकरी (।=) का चिपका है

क़िस्म ४३ रेकद लगान

बनाम

हनवा बेटा गणुवा क़ौम चमार काश्तकार और रहनेवाला महल्ला सलामी गढ़ी क़सबा काकोरी तहसील और ज़िला लखनऊ   मुद्दआ अलैह

दफ़ा ८३ ज़िमन २ ऐक्ट १९ सन् १८६८ ईसवी—

दावा दिलापाने ३।॥) बाक़ी लगान सन् १२८२ फ़सली बाबत ज़मीन ३६२ नम्बरी १७५० जो क़सबा काकोरी में है जिसके गवाह भी हैं और साफ़ साफ़ हाल यह है कि मुद्दआ अलैह हनवा ने इस ज़मीन को मुद्दई से १०) रुपिये सालाना लेकर खेती की और उसमें से ६।) अदा किये और जो बाक़ी है नहीं देता है जिस रुपिये का दावा किया गया है वह सन् १२८२ फ़सली तथा आख़िर जून सन् १८७५ ईसवी जिसमें मुद्दआ अलैह के अदा करना था और वही तारीख़ दावा करने की है उम्मेदवार हूं कि दावा किया गया रुपिया अदालत के ख़र्चा समेत अदालत से दिला पाऊं—

नम्बर	नामखेत	तादाद ज़मीन	तादाद लगान
१७५०	फुलवारी	३६२	१०)

वसूल ६।)

बाक़ी ३।॥)

मैं मुद्दई कि नाम मेरा इस अरज़ी में लिखा है इक़रार

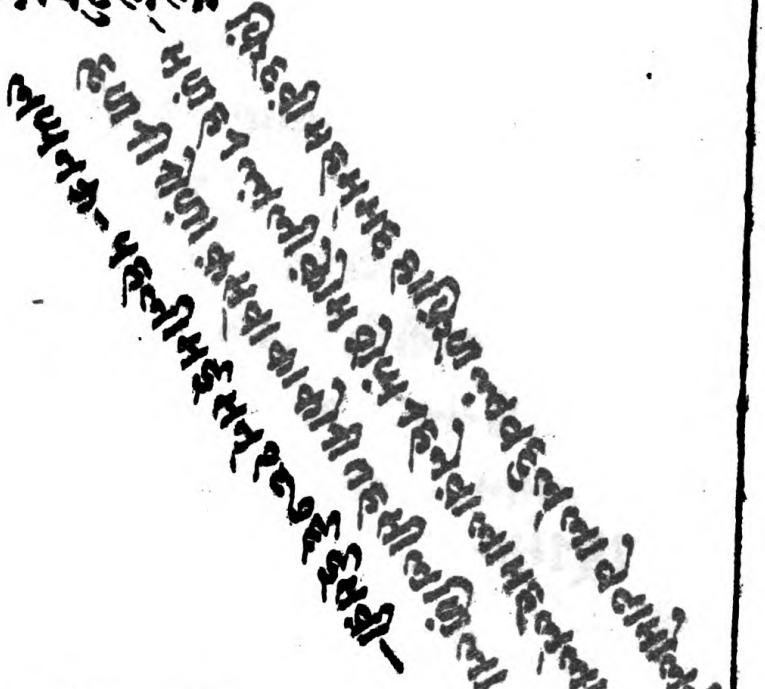

करताहूं किमेनी समह वूहमें जोकुछ इसमें लिख्या है सवठीक
ल्लो१हुसत है-
६० महसमह ल्लवहुलला

श्रीहदीसहसमह साहिब ल्लवहुलला वे लासोंकी
महहमी स्त्रीश्रीयम्यु रहेनेवाला सहलला
हुणरी श्रीमत्वावाकी गहसीलजिला
ल्लधनर- पहिलीमई सन १८७६ ईसवी-

वक्तलमेधनप तनार्ग ल्लनणी
लिख्यनेवाला सन ६ पाकता
१३६
नम्वरहुकम तारीख्हुकम हुकमपुलासा हुवाला ल्लनणी
पहिलीमईसन निशानमुंसरमीपिझ्या कारण
१८७६ मुद्दईने ख्दु खिसप१ल्लसल
देकानसदीक्र हुकमलिख्याहो
किया जोणपूरन हो-
हवाला नम्बर ल्लोर तारीख
नपोल्ट जोणवावमें हुकम ल्लापा हो

हुकम हुआ

४ मई सन् १८७२ ईसवी रजिस्टर में लिखने को पीछे कप्तान हेमन साहिब बहादुर की खिदमत में भेजा जावे—तारीख पहली मई को १८ रुपैया ॥=) और तलबाना ।) चिपकाहै

दस्तखत हाकिम   २९ नम्बर रजिस्टर

२ मई सन् १८७२ ईसवी से रुजू रजिस्टर मुद्दआ अलैहुम फ़रीक़ैन समन जारी किया जावे—कि—

पहली जुलाई सन् १८७२ ईसवी को हाज़िर हो—

दो पर्त समन लिखे गये

लालता परसाद   दस्तखत हाकिम

<u>४४</u>

पहली जून सन् १८७२ ईसवी रूबरू

आज मुक़द्दमा पेश हुआ जिनका मुक़द्दमा था आप हाज़िर हुए और गुमश्ता चौकीदार और अब्दुल गनी रहनेवाला लोकाकोनी और चौथी हैसियत ली गई हैं मुद्दई का बयान लिया गया मुताबिक़ तजवीज़ अंगरेज़ी के—

हुकम हुआ

डिकरी ॥) और खर्चा मुक़द्दमा ॥=) कुल ३=) मुद्दई के हक़ में दी गई मुक़द्दमा दाखिल दफ़्तर हो—

पहिली जून सन् १८७२ ईसवी—

दस्तखत हाकिम

इस्टाम्प   तलबाना
(=)   ।)

४५

मुक़द्दमा लगान कप्तान हेमन साहिब बहादुर की अदालत की
किता फ़ैसला—

नम्बर मुक़द्दमा	नाम मुद्दई नाम मुद्दआ अलैह	दावा	तारीख़ दाख़िल करने की - तारीख़ फ़ैसला
१३६	हाफ़िज़ अब्दुल्ला हनवंता	३॥।) बाक़ी लगान बाबत सन् १२८८ फ़सली	२ मई सन् १८७६ ईसवी पहली जून सन् १८७६ ईसवी

[illegible] की बाबत ६२

लगान ३७

वसूल ६॥।)

बाक़ी ३॥।)

उज़्र मुद्दआ अलैह हनवंता

३) मैंने लगाना के है - पट्टा मेरे पास नहीं है - क़बूलियत मैंने कभी नहीं लिखी मैं इस ज़मीन को तीन बरस से ज़ियादा से जोतता हूं और ३) रुपिया साल अदा करता हूं ६॥) दे चुका हूं और मैंने ३॥) देने का वादा कर लिया था लेकिन मुद्दई ने ३॥।) के चने ज़बरदस्ती मुझ से ले लिये तो

ज़र मुदई को १११) देना बाक़ी रहे हैं- मैंने २६॥) तीन बरस
में अदा किये- ४) रुपिया मैंने पहले साल में दिये और २२)
रुपिया दूसरे साल से और २०) तीसरे साल से-

जवाब मुद्दई

मुद्दआ अलैह पारसाल का ज़िकर करता है और इसने २६॥)
तीन बरस में दिये हैं- सन् १२८३ फ़सली की बाबत २०)
दस्तख़त हाकिम

९ अमूर तनक़ीह तलब
या वह काम जिनमें सफ़ाई दरकार है

१- तादाद लगान जो मुद्दआ अलैह से माला ना देने लायक़ है किस क़दर है-

२- मुद्दआ अलैह ने सन् १२८३ फ़सली में किस क़दर अदा किया-

इज़हार रूपनारायन

सही सही इक़रार करता है ज़ात पासी रहनेवाला कावेरी
जब मुद्दआ अलैह पास साहब मन पहुँचा तो उसने कहा कि
जो लगान मेरे ज़िम्मे बाक़ी है मैं उसको अदा करूँगा-
दस्तख़त कप्तान हेमन
साहिब बहादुर-

यह मैं नहीं जानता हूँ कि मुद्दआ अलैह किस क़दर लगान
अदा करता है-
दस्तख़त हाकिम

इज़हार अब्दुल्ला सही सही इक़रार करता है ज़ात

शेख़ रहने वाला काकोरी बेटा अमान अली उमर ५० बरस—

एक महीना का अरसा हुआ कि मुद्दआ अलैह कहता था कि मेरे ज़िम्मे ३॥।) देना है और यह कि मेरा लगान का तो ६) रुपिया था लेकिन दो बरस से इज़ाफ़ा किया गया है और १७) रुपिया कर लिया है मुद्दआ अलैह चार बरस से खेती करता है और मुद्दई के पास तीन बरस से जोता है पहले साल में पट्टा था और उसके पीछे इज़ाफ़ा लगान का पट्टा नहीं हुआ और मेरे सामने मुद्दआ अलैह ने कुछ अदा नहीं किया और मेरे सामने मुद्दआ अलैह ने १७) देने का इक़रार नहीं किया—

इस्तिफ़सार कप्तान हेमन साहिब बहादुर

इज़हार चौधरी हयात अली सही सही इक़रार करता है ज़ात शेख़ रहने वाला काकोरी बेटा रहमान अली—
मेरे सामने लगान मुक़र्रर नहीं हुआ न पट्टा न क़बूलियत लिखी गई मुद्दआ अलैह ने मेरे सामने कुछ नहीं अदा किया लेकिन मुद्दआ अलैह ने मेरे सामने एक रुपिया चौदह आने १॥ॾ) के चने दिये थे और ३॥।) बाबत हिसाब किताब पिछले सालों के बाक़ी निकले थे
इस्तिफ़सार हाकिम

मुद्दई

मैंने क़बूलियत नहीं लिखी हिसाब नहीं रखा और कोई गवाह सबूत नहीं है—

फ़ैसला।

मुद्दई २७) सालाना के हिसाब से लगान पाने के लिये मुद्दआअलैह पर दावा करता है और मुद्दआअलैह फ़क़त ६) साल देना क़बूल करता है और मुद्दई के गवाहों के इज़हारों से साबित है कि पहले ६) रुपिया सालाना था और उस के पीछे मुद्दई ने उसको २७) तक बढ़ाना चाहा लेकिन इक़रारनामा लिया हुआ इस इज़ाफ़ा लगान का जो मुद्दई ने तजवीज़ किया नहीं है तो जब इक़रारनामा मौजूद नहीं है तो उसकी डिकरी नहीं हो सकती इस के सिवाय यह भी सबूत नहीं है कि किसी साल में मुद्दआअलैह ने २७) मुवाफ़िक़ दावा मुद्दई के अदा किया हो इस वास्ते हम समझते हैं कि सन १२६१ फ़सली से लगान फ़क़त ६) सालाना था—

डिकरी बाबत तीन साल लगायत साल तमाम—

२७) कुल

२६॥) वसूल

॥) बाक़ी

डिकरी

मुद्दई के हक़ में तादादी ॥) पचास सेन अमीआनी

हिसाब पांच के

हाफ़िज़ अब्दुल्ला के मुक़द्दमा में मुद्दई

बनाम

हनवा मुद्दआअलैह

जवाब मुद्दई   जवाब मुद्दआ अलैह
इसटामप ।≡)
।≡) तलबाना
समन बनाम मुद्दआ अलैह के नाम अदालत तहसीलदारी ज़िला लुकनऊ
दफ़ा मुताबिक़ दफ़ा ४२ ऐक्ट १९ सन १८७३ ई० के सरी-
नामबर मुक़द्दमा २३६—
अज़ इजलास रेकवेन्यू जनाब कप्तान केमन साहिब
बहादुर असिस्टंट कमिश्नर बहादुर लखनऊ मुक़ाम
कोठी क़ैसर पसंद
हाफ़िज़ मुहम्मद अबदुल्ला बेटा मौलवी मुहम्मद-
अली क़ौम शेख़ रहनेवाला क़सबा काकोरी महल्ला
हवानी टोला तहसील और ज़िला लखनऊ मुद्दई
बनाम
इनायत बेटा ग़फ़ारा क़ौम चमार रहनेवाला क़सबा काकोरी
महल्ला सलामी गली — मुद्दआ अलैह
दावा ३॥।) बाबत बाक़ी लगान
बनाम इनायत बेटा ग़फ़ारा क़ौम चमार रहनेवाला महल्ला
सलामी गली क़सबा काकोरी—
चूंकि हाफ़िज़ मुहम्मद अबदुल्ला मुद्दई बेटा मौलवी
मुहम्मद अली रहनेवाला क़सबा काकोरी महल्ला
हवानी टोला ने नालिश नम्बरी इस अदालत में बाबत
हिस्सा थाने ३॥।) बाबत बाक़ी लगान दायर की है—
सो तुम को हुकम होता है कि तुम पहली तारीख़ जून सन्

१८७६ ईसवी दफ़ा २० वग़ैरः ही पहर को इस अदालत में
आयहीं या मारफ़त कारिंदा अपने या वकील अदालत
के जो मुक़द्दमा के हाल से वाक़िफ़ हो और मुक़द्दमा
की सब बातों का जवाब दे सके या उसके साथ कोई ऐसा
शख़्स हो कि जवाब ऐसे सवालों का दे सके — वास्ते जवाब
दिही और दावा ऊपर लिखे हुए मुद्दई के हाज़िर हो
और वही तारीख़ जो तुम्हारे हाज़िर होने के लिये मुक़र्रर
है वास्ते मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है सो तुमको चाहिये
कि तुम अपने सब गवाहों को उसी तारीख़ पर हाज़िर
करो और तुमको इत्तिला दी जाती है कि जो तुम उस रोज़
हाज़िर अदालत न होगे तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी
तुम्हारे सुना जावेगा और फ़ैसला होगा सिवाय इसके
तुमको चाहिये कि अपने साथ जिन को मुद्दई देखना
चाहता है और कोई दूसरी सनद जिसको तुम वास्ते
मज़बूती अपनी जवाबदिही के ज़रूर समझते हो लाओ।
तारीख़ ९ महीना मई सन् १८७६ ईसवी —

जज ख़फ़ीफ़ा [illegible] वाला

याद दाश्त — तलबाना पियादह अदालत मुक़र्रर पहले
इस सम्मन के जारी होने से दाख़िल होना चाहिये और
तारीख़ पहुंचने सम्मन से मुद्दआ अलैह को कम से कम
एक हफ़्ता की मुहलत वास्ते हाज़िरी और जवाबदिही
के मिलना चाहिये —

नम्बर २४८९ अमीर ख़ाँ तारीख़ ६ मई सन १८७६ ईसवी

ઙાના વ લ્લા લી

ફુકમ હ્ઝૂરસે મુત્વાફ્રિક પતાવતાને મુદ્દઈ કે લડ્કે કે તારીખ્ ૮ મઈ સન્ ૧૮૭૬ ઈસવી વક્ત ૧૨ વળે દિનકો અપર મકાન મુદ્દઆ લ્લેહ કે ગયા મગર મુદ્દઆ લ્લેહ નહીં મિલા માલૂમ હુઆ કિ કહીં ગયા હૈ શામ તક આવેગા સો મળબૂરી સે સમ્મન મુદ્દઆ લ્લેહ કે મકાન કે દરવાઝ્ઃ પર જિસ મકાન મેં કિ વહ રહતા હૈ દો પરાસી ગવાહોં કે સામને ચિપકા દિયા વાસ્તે ઇત્તિલા કે હુઝૂર મેં રપોર્ટ કી – તારીખ્ ૧૨ મઈ સન્ ૧૮૭૬ ઈસવી –

દસ્તખ્ત અમીર્ખાં ચપરાસી ૬૦ બહાદુર અલી નાઝિર

૭ તલ્બાના ૪ મઈ સન્ ૧૮૭૬ ઈસવી

દર્જ રજિસ્ટર હુઆ –

૮ તારીખ્ કો ન મિલને મુદ્દઆ લ્લેહ કે બાદ ૬ વળે દિન કો મુત્વા-ફ્રિક બતલાને મહમ્મદ શફ્રીઉદ્દીન મુદ્દઆ લ્લેહ કે મકાન પર ચિપકા દિયા ઓર ઝ્બાની માં મુદ્દઆ લ્લેહ કે દરિયાફ્ત હુવા કિ કહીં ગયા હૈ દો દિન સે –

ગવાહી રુપના ચોકીદાર રહને- ગવાહી શેખ્ નવી બખ્શ
વાલા કસવા કાકોરી રહને વાલા કસવા કાકોરી

મહમ્મદ શફ્રી વકીલ મુદ્દઈ

મુકાબિલા કિયા ગયા ઠીક હૈ

મિસિલ મુકદ્દમા દીવાની

૧૬ ફરવરી ૭૬ ઈ

પરવાના મહોના –

कागज़ात जो पर लिखे हुवे मुक़द्दमा की मिसिल के कागज़ात हैं

१२ नम्बर मौज़ा
क़िसम नम्बर १ई
दफ़्तर के रजिस्टर
में लिखा गया

नम्बर मुक़द्दमा		२३०
तारीख़ मुक़द्दमा के दायर करने की		तारीख़ १९ जनवरी सन् १८७५ ईसवी
तारीख़ फ़ैसला		तारीख़ १९ फ़रवरी सन् १८७५ ईसवी
नाम मुद्दई		नाम परसाद बेटा छोटू नाम
नाम मुद्दआलेह		दूमामी
दावा	बाबत दावा	५४)
	क़िसम दावा	तमस्सुक की बुनियाद
नाम फ़ैसला करनेवाले हाकिम का		पंडित श्यामनारायन साहिब एक्स्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर

अलिफ़ क़िता वे क़िता
फ़ेहरिस्त हुक्मोंकापर्चा इकालतनामाएक
१क १क सम्मन १क
अर्ज़ीदावा नम्बरमुकदमासन् इकालतनामा
१८७५ ईसवी मुहम्मद अलीफ़
१८७५ फ़सली

१क १क १क

तजवीज़ फ़ारसी सनहतमसरूकबाद
मदे डिक्री वहीरकाहफ़ीवोज़
ईस्टर्न विरुद्धमपलि सन्
१२८४ फ़सली

मिसलहुक्मनामे १क
डिक्रीनम्बरी१८८१
फ़ैसलाफरमाई सन्
१८७५ ईसवी
१क

कोर्टफ़ीस १॥=)
अर्ज़ीदावा १॥=)
तलबाना ।=)

टिकट	टिकट	टिकट
।=)	१)	१)

दफ्तरकीसन्१८७५ईसवी
दस्तख़तहाकिम

अर्ज़ीदावा अर्ज़ीरामपरसाद
रामपरसादवेटाछोटूरामसाकिन मौज़े रहनेवाला मौज़ेहमीरपुर
दारुठौं परगना महोबा तहसीलमतीहावाद ज़िला –

લછ્મનજી મુદ્દઈ

બનામ

જુમામી બેટા છોટે કોમ હલવાઈ રહને વાલા ઔર દૂકાન-
દાર કુરોળા પરગના મહોના તહસીલ ઔરણિલાલછ્મનજી
મુદ્દહલ્લાલ્લૈહ—

દાવા - દિલાપાને ૪૫) રુપિયા અસલ વ કાણા સૂદ સમેત
જેસા કિ નીચે લિખ્યા હે તમસસુક તારીખ ૨૦ અગસ્ત
સન ૧૮૬૬ ઈસવી કો રજિસ્ટરી કિયા ગયા ઇસ તરહ પર
કિ મુદ્દહલ્લાલ્લૈહે ૩૦) રુપિયા મુદ્દ મુદ્દઈ સે કરાર લેકર
વાદા રુપિયા દેને કા જો કિ તમસસુક મેં લિખ્યા હુઆ હે
મહીના વૈશાખ સન ૧૨૭૫ ફસલી તથા ઈમઈ સન ૧૮૬૮
ઈસવી કા કિયા થા ઔર યહ ઇકરાર થા કિ જો રુપિયા
વસૂલ ન હો તો રહક દૂકાન જો મોજા કુરોળા મેં હે મુદ
મહાજન કા દખલ કરા દેવે લેકિન અવ વાદા ભી
ગુજર ગયા ઔર રુપિયા ભી નહીં વસૂલ હુઆ ઔર અવ
મેં દૂકાન પર દખ્લ ચાહતા હૂં તવ ઔર જવાની કરને કો
તૈયાર હોતા હે સો અદાલત મેં નાલિશ કરકે ઔર તારીખ
૬ મઈ સન ૧૮૬૮ ઈસવી તારીખ બુનિયાદ દાવા કી કરાર
દે કર ચાહતા હૂં કિ દાવા કિયા ગયા રુપિયા સમેત ખરચા
અદાલત કે દિલાપાજે— ૪૫)

અસલ	સૂદ ડેઢ રુપૈયા કે હિસાબ સે
૩૦)	૧૫)

मैं मुद्दईकि नाम मेरा इसलारणी रसूल
धरा में लिख्या है इकरार करता हूं ४
कि वयान जो कुछ इसलारणी में बाकी
लिख्या है मेरी समझबूझ में ठीक ४५)
और दुरुस्त है
दसतखत रामप्रसाद
वकलम खुद —

रामप्रसाद मुद्दई रुबरु लाला
डूंगाजी का ता॰ नीष्व जनवरी सन् १८७४
ईसवी मारफत गोधालवनारायणजी

तारीष्व जनवरी सन् १८७४ ईसवी
रामप्रसाद —
दसतखत हाकिम —
मैं कि रामासी हलवाई रहनेवाला मोरा डूंगाजी का हूं —
३०) रुपिया कि आये उसके २५) रुपिया होते हैं राम-
प्रसाद माडवाडी दूकानदार वाणार डूंगाजी से दो
३) रुपिया सैकडा माहवारी के हिसाबसे करज लेकर
अपने खरच में लाया इकरार यह है कि रुपिया जिकर
किया गया सब सूद समेत आखिर महीना वैशाख में
रामप्रसाद को अदा और बेबाक करदूंगा और जो

शाइद ज़िकर किया गया तूफ़ान इसलिये हुवे वादा के
मुवाफ़िक़ न पहुंचे तो महाजन को इख़्तियार है कि उसकी
दूकान जो इटौंजा के बाज़ार में है और उसपर अपना
क़बज़ा मालकाना करै उसपर अपना क़बज़ा और
दख़ल करलेवें हमको कभी कुछ उज़्र न होगा सो ये
सनद रहन सुकती लिख दिया कि सनद रहे—
तारीख़ मिती माहौं वदी सप्तमी सन् १२७५ फ़सली—
द० हिंदी इस्सामी गवाही इसमतखां गवाही इसमतखां
हिंदी हिंदी

५८० १२५६७

२७ जून सन् १८६८ ईसवी

आज तारीख़ २७ महीना अगस्त सन् १८६८ ईसवी—
३ बजे दिन को इस्सामी बेटा ... कौम हलवाई रहने
वाला इटौंजा उमर ४७ बरस मुन्नू हुवे बेटा गोवर्धन हुवे
रहनेवाला केसरमऊ— परगना ... केसरी बेटा जोइली कौम
नाई रहनेवाला सिंधामऊ की पहिचान से तीन सनदें लिखी
गई काग़ज़ इस्टाम्प क़ीमती) को हरफ़ हरफ़ तसदीक़
किया पीछे मरजिस्ट्रार के मुवाफ़िक़ रजिस्टरी लिखके इस
सनद को सनद लिखनेवाले के हवाले किया—
द० हिंदी गवाही द० हिंदी गवाही द० हिंदी
द० हनूमानप्रसाद रजिस्टरार
महोना मोहर

नम्बर	तारीख	खुलासा हुक्म	[illegible]	[illegible]
		मनशिशता मुनसरमी वकील मुद्दई ने ज्वाब ही दे कर न मददी की किरी हुकम हुवा कि		
१	८ जनवरी सन् १८७७ ईसवी	खिदमात में पंडित शरी मनरानिया हि-ववहादुर पेश होवे जीवनदिकदशा जीवजसल सनद मीनाथी के दसतखत हाकिम		
२	१० जनवरी सन् १८७७ ईसवी	न म्बर २२ वकिसदर दीवानी मुलाहिजा के पीछे हुकम हुवा २२६ वकिसवरमें दाखल होकर फा-ईसमू मन १८६ फरवरी सन् १८७७ ई-सवी मुकरर होकर वाली हो कि मुद्दई मुकरर मतारीख पर हाजिर हो- दसतखत हाकिम	पेशवालम्सद लिखे गये १८६२	२४ जनवरी को पोरव जाई
३	२६ फरवरी सन् १८७७ ईसवी	जव मुद्दई जीव गोपालनरायन वकील मुद्दई ज्वाब ले हाजिर थे पेश होकर फरवसी तवरीख के मु-वाफिक १८६२ हुकम हुवा किकनी ध्वा मुद्दई के हक में जाय मुद्दआ ज्वाले के हैसियत वाजिब में मुद्दा ज्वाले हवाली होकर इसी वक्त दसतखत हाकिम		

२६ फ़रवरी सन् १८७५ ई०

रामप्रसाद – मुद्दई – बनाम – इमामी हलवाई
मुद्दआलेह दावा ४५) रुपिया क़र्जा तमस्सुकी रजिस-
टरी किया हुआ—

जबकि रामप्रसाद मुद्दई और गोपाल नरायन वकील
मुद्दई और ख़ुद इमामी मुद्दआलेह और पंडित
प्राननाथ वकील मुद्दआलेह हाज़िर थे पेश हुआ

बयान गोपाल नरायन वकील मुद्दई—

इमामी मुद्दआलेह ने रिहन नामा लिखा और –
रजिसटरी करा दिया तारीख़ १० अगस्त सन् १८६८
ईसवी को एक दूकान जो इटौंजा में है ३०) रुपिया पर
रामप्रसाद मुद्दई के पास गिरो रक्खा और एक साल
के वादा पर २) रुपिया सैकड़ा माहवारी सूद देने का इक़रार किया
जो असल रुपिया सूद समेत न अदा हो सके तो दूकान
पर दख़ल दूंगा॥ सो मियाद के भीतर रुपिया अदा न होने
से मुद्दआलेह ने दूकान पर दख़ल मुद्दई को दिला
दिया—तीन साल मुद्दई का दख़ल रहा तीन साल हुए
कि मुद्दआलेह ने दूकान से मुद्दई को बेदख़ल कर
दिया है अब मुद्दई ३०) असल और १५) सूद डेढ़
के हिसाब से कुल ४५) रुपिया का दावा करता है हिसाब के
मुवाफ़िक़ सूद मुद्दई ने तलब किया है—

इसतफ़सार हाकिम – २६ फ़रवरी सन् १८७५ ईसवी—

जवाब पंडित प्राननाथ वकील मुद्दआलेह —

इस तारीख़ तक ठीक है उज़्र यह है कि तमस्सुक का रुपिया मुद्दआ-
अलैह ने मुद्दई रामप्रसाद से अपने परगनादार के दिलवा-
दिया था और परगनादार का करीब तमस्सुक भोजदार मी
के था इसलिए ६ मासी ने रामप्रसाद को तमस्सुक लिखाकर
रुपिया देन लेकर करना के देने को परगनादार के लिए दिलवाई
परगनादार को कर दी थी और परगनादार ने उस दिलवाई को
मंजूर कर लिया था रघुवानी परगनादार के मालूम हुआ कि उस
ने तमस्सुक रामप्रसाद को फेर दिया है और रुपिया उस को
राम प्रसाद से वसूल हुआ है रुपिया अभी बाकी
हैं — सिवाय इस के तीन साल तक दूकान करना मुद्दई
में रहा है दो रुपिया माहवारी किराया के हिसाब से कुल
रुपिया हिसाब किया जावे तो तमाम करना मुद्दई का
बेबाक हो जाता है —

अदालत का सवाल	वकील का जवाब
अगर तमस्सुक का रुपिया वसूल नहीं हुआ था तो मुद्दई को दूकान पर कब्ज़ा क्यों दिया	दो रुपिया माहवारी किराया पर यह दूकान मुद्दई को दी थी तमस्सुक के मुवाफ़िक

तारीख़ २९ फरवरी सन् १८७४ ईसवी —
दस्तख़त हाकिम

जवाब कागज़ात वकील मुद्दई—
पचास हज़ार बावन तीस रुपिया जिसमें इमामी के था और
दूकान रिहन थी मगर इमामी ने किसी क़दर रुपिया पराग
दत्त को आपही अदा कर दिया है फ़क़त ५) रुपिया बाक़ी
रहा था रामपरसाद ने वास्ते देने परागदत्त के ५) रुपिया
पहले इमामी को दिया। इमामी ने रामपरसाद को तमस्सुक
परागदत्त से फेर कर हवाले कर दिया। अब मुद्दई ने ५) इमामी
को दिया। सब रुपिया मुद्दआअलैह को तमस्सुक का दिया
गया। था २६ फ़रवरी सन् १८७५ ईसवी—
इसतफ़्सार हाकिम
इस वक़्त परागदत्त के नाम का तमस्सुक मुद्दई के
वकील ने दाख़िल किया। और इमामी ने तमस्सुक देख
कर बयान किया यही तमस्सुक है तमस्सुक पढ़ा गया—
तनक़ीह तलब यह जिनमें सफ़ाई दरकार है—
क्या तमस्सुक का सब रुपिया मुद्दआअलैह को नहीं मिला
था जिसमें मुद्दआअलैह—
बयान परागदत्त गवाह का ठीक ठीक—
बाप का नाम मन्नालाल रहने वाला मौज़ा कुन्सा
ज़िला रायबरेली उमर अंदाज़न ५० साल ने बयान
किया कि ३७) रुपिया पर यह दूकान पहले मेरे पास इमामी
हलवाई की तरफ़ से गिरवी थी मेरे तक़ाज़ा पर इमामी
ने रामपरसाद से क़ारज़ लेने की बात चीत की रामपरसाद
ने मज़हर से पूछा कि यह दूकान मैं गिरवी करूं मज़हर

ने कहा मुझको रुपिया पाने से इनकार है असामी ने तमस्सुक राम
परसाद को लिखकर कर्ज लिया और मैने सामने कह दिया
कि रु ३५) रुपिया में ५) रुपिया पहले वसूल होगया था रु ३०) रुपिया
बाकी था यह रु ३०) रुपिया राम परसाद मुझको देवेगा सो उसी
रोज़ जिस रोज़ कि सनद बहाली पाई वह ५) रुपिया असामी
के दिलाने से राम परसाद ने मुझको दिये और बाकी रुपिया
को देना ऊपर रजिसटरी होने के करार के रुका रहा—
मज़हर अपने बाप की बीमारी से अपने घर जाने वाला था
तमस्सुक राम परसाद को हवाले कर दिया कि जब असामी
से उसको यह रुपिया मिले तुम यह तमस्सुक असामी को देना
फिर मुझको मालूम नहीं है कि राम परसाद ने असामी को
रुपिया दिया था या नहीं यह तमस्सुक मज़हर ने उसी रोज़ राम
परसाद को दिया था जिस रोज़ तमस्सुक जिसका जिकर
किया गया है लिखा गया था—
तारीख २९ फरवरी सन १८७४ ईसवी—

दस्तखत हाकिम

एक गवाह एक दिन में लिखा गया—
दस्तखत राम नरायन मोहर्रिर

तसदीक़ अदालत

इजलास पंडित शयाम नरायन एक्सटरा असिसटैनट
कमिश्नर ज़िला लखनऊ—
तारीख २९ फरवरी सन १८७४ ईसवी
राम परसाद   मुद्दई

बनाम

इमामी हलवाई मुद्दआअलैह—

दावा ४५) रुपिया करजा असिल और सूद तमस्सुकी तहसीली कि बाबत—

रामप्रसाद मुद्दई और गोपाल नारायन वकील मुद्दई और मुद्द-
इमामी मुद्दआअलैह पंडित प्राणनाथ वकील मुद्दआअलैह
हाजिर इमामी मुद्दआअलैह ने तारीख २० अगस्त सन १८६८
ईसवी को अपनी दुकान २०) रुपिया वास्ते पक्की बनवाने टोंका में
है रामप्रसाद मुद्दई के गिरो रक्खा सूद ३) माहवारी
सैकड़ा पीछे देने का इकरार करके करज लिया इकरार यह है
कि महाजन आपही दुकान पर कबजा करले जो एक
साल के अरसे में असिल और सूद का रुपिया अदा
न होवे से मुद्दई की दुकान पर दखल मुद्दआअलैह
ने दिया तीन साल तक दखल मुद्दई का दुकान पर रहा
अब तीन साल हुवे हैं कि मुद्दआअलैह ने मुद्दई को
दुकान से बेदखल कर दिया है सो मुद्दई २०) रुपिया
असिल और २५) सूद डेढ़ा कुल ४५) रुपिया का
दावादार है प्राणनाथ वकील मुद्दआअलैह का जवाब
यह है कि सनद तमस्सुक की ठीक है इस सनद का
रुपिया मुद्दआअलैह ने आपही लेकर मुद्दई से पाया
इतना पहले गिरो रखने वाले दुकान को दिलवा दिया
था और धनागाहदत्त ने यह दिलवाई मंजूर कर लिया
था फ़ारवानी परागदत्त के मालूम हुआ कि उस ने

तमस्सुक अपना रामप्रसाद मुद्दई को फेर दिया है और
रामप्रसाद से परागदत्त को पांच ही ५) रुपिये वसूल
हुआ है २५) अभी बाक़ी है सिवाय इसके तीन साल तक
दूकान मुद्दई के क़बज़ा में रही है ७) रुपिये किराया माहवारी
के हिसाब से कुल रुपिये मुद्दई को वसूल होगया है—

वकील मुद्दआ अलेह से पूछा गया कि जो तुमने तमस्सुक
का रुपिया नहीं पाया था तो दूकान पर क़बज़ा मुद्दई को क्यों
दिया था उसके जवाब में वकील ने बयान किया कि पराग-
दत्त का क़रज़ा मुद्दआ अलेह ने पहले ही अदा कर दिया
था ५) रुपिया बाक़ी था रामप्रसाद से इमामी ने ५) रुपिया
लेकर परागदत्त को अदा करके तमस्सुक फेर करके
रामप्रसाद मुद्दई को हवाले कर दिया तब रामप्रसाद ने
२५) रुपिया जो बाक़ी रहे थे इमामी को दिया था और मुद्दई
के वकील ने परागदत्त के नाम का तमस्सुक अदालत में
दाख़िल किया जिसको इमामी मुद्दआ अलेह ने मान लिया
कि यही तमस्सुक है—

तनक़ीह तलब या सफ़ाई दरकार है

क्या सब रुपिया मुद्दआ अलेह को नहीं मिला है—१

ज़िम्मे मुद्दआ अलेह

परागदत्त गवाह जो कि आप अदालत में हाज़िर था और
अदालत ने आप उसको गवाह कर लिया है बयान करता
है कि इमामी ने रामप्रसाद को तमस्सुक लिख कर मैंने
क़रज़ा देने के वास्ते क़रज़ा लिया था जिस रोज़ कि तमस्सुक

अदालत की मोहर और हमारे दस्तख़त से ते जारी हुई —

डिक्री ख़र्चा मुद्दई जिम्मे ख़र्चा मुद्दआ अलेह जिम्मे

दफ़ा मुद्दआ अलेह मुद्दआ अलेह

अदालत

इस्टाम्प तलबाना वकालतनामा वकालत मेहनताना

३।=) ।=) ॥) नामा वकील

मेहनताना वकील ॥) ३)

३) २॥)

६॥)

तारीख़ २९ फ़रवरी सन् १८७५ ईसवी —

दस्तख़त हाकिम

डिक्री

नक़ल मुताबिक़ असल डिक्री अदालत इब्तिदाई मुराफ़िआ

नम्बर १२४ दफ़ा रेकर्ड सन् १८७५ ईसवी —

नम्बर मुक़दमा १२० सन् १८७५ ईसवी —

अदालत दीवानी साहिब एक्सट्रा असिसटेन्ट कमिश्-
नर बहादुर

रामप्रसाद बेटा छोटूराम मारवाड़ी रहनेवाला और
दुकानदार कटौंधा परगना महोना — मुद्दई

बनाम

इमामी बेटा छोटे क़ौम हलवाई रहनेवाला और दुकान-
दार कटौंधा परगना महोना मुद्दआ अलेह

दावा दफ़ा नालिश की क़ीमत हुण्डी तमस्सुक का —

आज दिन मुक़दमा पंडित राधारमन रायन साहिब एक्सट्रा

असिसटैनट कमिश्नर ज़िला लखनऊ इजलास में राम-
परसाद मुद्दई और गोपाल नरायन वकील मुद्दआअलैह
के हाज़िरी में सुनने और तहक़ीक़ात के वासते पेश हुआ
और जो सबूत ज़बानी और लिखे हुए मुद्दई और मुद्दआ-
अलैह ने पेश किया वह सुना गया और जो गवाह मुद्दई व
मुद्दआअलैह ने बयान किया उसको अच्छी तरह से सुन
के अदालत हुकुम देती है और डिकरी करती है—
डिकरी तादादी ४७) असिल और सूद रामपरसाद मुद्दई
के हक़ में बनाम कुआसी हलवाई मुद्दआअलैह कीजावै—
और ख़रचा जिसमें मुद्दआअलैह डिकरी अमीजानी
हो— ६।।) रुपिया
आज तारीख़ २६ फ़रवरी सन् २८७ ईसवी को यह
डिकरी अदालत की मोहर और हमारे दसतख़त से की
गई—

हिसाब ख़रचा मुद्दई	ख़रचा मुद्दआअलैह
जिसमें मुद्दआअलैह	जिसमें मुद्दआअलैह
३।=) इसटाम्प क़ानूनी	×
।=) तलबाना	×
३।) मेहनताना	३।) मेहनताना
वकील	।।) वकालतनामा
।।) फ़ुटकर वकालतनामा ६।।।)	×

६।। दसतख़त हाकिम

।) इसटाम्प (पीछेपर) दाख़िल किया गया मुद्दई तारीख़

फ़ेहरिस्त — २९ फ़रवरी सन् १८७४ ईसवी—

दस्तख़त हाकिम

मैं कि इमामी हलवाई रहनेवाला मौज़ा इटौंजा का हूं— ३७) रुपिया कि आधे उसके १९) रुपिया होते हैं परागदत्त महाजन रहनेवाला मौज़ा कुसुम्भा इलाक़ा थीनों से क़र्ज़ लेकर अपने ख़र्च में लाया इक़रार यह है कि रुपिया लिया गया असिल और सूद समेत आधे आना रुपिया पीछे के हिसाब से सब महीना बैसाख में अदा और बेबाक़ करूंगा जो शर्त इस सनद में लिखे हुवे वादा के मुवाफ़िक़ रुपिया न पहुंचे तो महाजन को अख़्तियार है कि एक दूकान मेरी जो इटौंजा में है उस पर अपना क़ब्ज़ा और दख़ल कर लेवे हमको कुछ उज़्र न होगा इसवास्ते यह सनद तमस्सुक की तरह पर लिख दिया कि सनद रहै— तारीख़ माघ वदी ५ का दश्री दिन बिरहसपत सन् १२७४ फ़सली संवत् १९२३-

दस्तख़त इमामी हलवाई   गवाही देवीदीन

गवाही रामबख़्श बिरहमन

रहनेवाला इटौंजा ख़ास वकलम

महम्मदख़ां रहनेवाला कुरसी

(कागज़ के जो दूसरी तरफ़ लिखा हुआ है)

१२० नम्बर रामपरसाद बनाम इमामी वकील मुद्दई ने पेश किया

હુકમ હુઆ શામિલ મિસિલ હોવે—

ટિકટ ચિપકા હૈ

૭ જનવરી રામપરસાદ
૭ જનવરી સન ૧૮૭૪
ઔર હ દ મુહમદ
દબાવા ... અલી

રામપરસાદ

બનામ

શ્યામીહલવાઈ

દસતખત

હાકિમ—

મૈં કિ રામપરસાદ બેટા છોટૂ રામ મારવાડી રહનેવાલા

કટૌંળા—

સિરનામા પર લિખે હુવે મુકદ્દમા મેં આપની તરફસે
બાબૂ ગોપાલ નરાયન વકીલ અદાલત કો વકીલ
અપના મુકર્રર કરકે ઇકરાર કરતા હૂં કિ બાબૂ
ગોપાલ નરાયન વકીલ જો કુછ ઇસ મુકદ્દમા
મેં સવાલ ઔર જવાબ ઔર હોડ઼ બૂઝ કરેંગા ઔર અરજી
દાવા ઔર કોઈ સનદેં દાખિલ કરેંગા ફેર લેવેં વહ
સબ વકીલ સાહિબ કા કિયા હુઆ મુઝ ઇકરાર કરને
વાલે કો આપને પાસ કિયે કી તરહ પર કબૂલ ઔર
મંજૂર હૈ ઇસ વાસ્તે યહ સનદ વકાલતનામા કી લિખ
દિયા કિ સનદ રહે તારીખ ૭ જનવરી સન્ ૧૮૭૪ ઈસવી

દસતખત રામપરસાદ — ગવાહી શિવલાલ

ગવાહી તેલી — મારવાડી નકલનવીસ

વકીલ કા નૌકર — ઇસુરી પરસાદ

યે કાગ઼ઝ કી દૂસરી તરફ લિખના ચાહિયે-

વકાલત નામા મંજૂર હે—

દસ્તખ્ત ગોપાલનારાયન વકીલ

તારીખ ૭ જાનવરી સન ૧૮૭૫ ઈસવી

સમ્મન — નક્શા ખુડીશાલનમ્બર ૧૦૮

સમ્મન મુદ્દઆ અલૈહ વાસ્તે તજવીજ મુક્દમે દમા મુસા-

ફિરૂક દફા ૪૧ રેકાર્ડ ૮ સન ૧૮૫૯ ઈસવી —

નમ્બર મુકદ્દમા ૨૨૦

દસ્તખ્ત હાકિમ

અદાલત દીવાની શહરામનગરમેં સાહિબ એક સ્ટરા-

અસિસ્ટેનટ કમિશનર બહાદુર લખનઊ મુકામ કોઠી

કેસરબાગ—

રામપરસાદ બેટા છોટૂ કોમ બાડ઼વાડ઼ી રહનેવાલા અહાતે

દુકાનદાર કટોંજાપરગાના મહોના તહસીલ મલિહાબાદ-

મુદ્દઈ

બનામ

રમામી બેટા છોટે કોમ હલવાઈ રહનેવાલા અહાતે દુકાન-

દાર કટોંજાપરગાના મહોના તહસીલ મલિહાબાદ—

મુદ્દઆ અલૈહ

દાવા ૪ા) રૂપિયા કર્જા કે

બનામ રમામી બેટા છોટે કોમ હલવાઈ રહનેવાલા કટોંજા

રામપરસાદ મુદ્દઈ બેટા છોટૂ રાસ રહનેવાલા કટોંજા

ઊપર લિખે હુયે ને નાલિશ તુમપર દસ અદાલતમેં વાસ્તે

हिलापाने ४थ्] तुषिा वावत क़रणा दा॰१ की है सो तुम को हुकम होता है कि तुम तारीख २८ महीना फ़रवरी सन १८७ ई ईसवी वक़्त १० वजे दोपहर इस अदालत में आप ही या मारफ़त अपने वकील जो अदालत के जो मुक़द्दमा के हाल से वाक़िफ़ हो और कुल वातों का जो इस मुक़द्दमा की वावत पूँछी जावे उनका जवाव दे सके या उस के साथ कोई ऐसा आदमी हो कि जवाव ऐसे सवालात का दे सके जवाव देने वाला नाम परसाद मुद्दई के हाज़िर हो और जो तारीख़ कि हाज़िरी के लिये मुक़र्रर हुई है वास्ते मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है सो तुम को चाहिये कि अपने सब गवाहों को २८ फ़रवरी सन् १८७ ई ईसवी को हाज़िर करो और तुम को इत्तिला दी जाती है कि अगर उसी रोज़ तुम हाज़िर न होगे तो मुक़द्दमा तुम्हारी ग़ैर हाज़िरी में सुना जावेगा और फ़ैसला होगा सिवा इस के तुम को चाहिये कि अपने साथ जिस को मुद्दई देखना चाहता है और कोई दूसरी सनद जिस को तुम अपनी जवाव दिही की मजबूती के वास्ते ज़रूर समझो लाओ तारीख़ ८ जनवरी सन १८७ ई ईसवी—

जज तजवीज़ करनेवाला

याददाश्त— नलवाना जो अदालत ने मुक़र्रर किया है इस समन के जारी होने से पहिले दाख़िल

હોના ચાહિયે ઔર તારીખ પહુંચને સમ્મન સે મુદ્દઅ-
લ્લેહ કો કમસે કમ એક હફ્તા કી મોહલત વાસ્તે
હાજિરી ઔર જવાબદિહી કે મિલના ચાહિયે—
૨૧૦ નમ્બર ૨૦ જનવરી સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી
તલબાના ।ક   કુંજબિહારી લાલ

જનાવરખાલી

તારીખ ૨૪ જનવરી સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી વક્ત ૮ વજે
સુબહ કો એક સમ્મન દુમામી હલવાઈ રહને વાલા
બાજાર કટૌંજા કો મુવાફિક બતાને ઔર પતા દેને
આદમી મુદ્દઈ કે દુન ગવાહોં કે સામને જો કિ ઇસ
રપોર્ટ કે કનારે પર લિખે હૈં દેકર રસીદ ઉસ સે
લાલતા પરસાદ કી કલમ સે લિખવાકર ઇસ રપોર્ટ
કે સાથ પેશ કરતા હૂં—
તારીખ ૨૫ જનવરી સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી
દસ્તખત કુંજબિહારી લાલ ચપરાસી
મરિશ્તા મુનસરમી
મજકૂરી કી રપોર્ટ સે જાહિર હૈ કિ સમ્મન કાયદા
કે મુવાફિક દિયા ગયા ઇસ વાસ્તે હુકમ હુઆ કિ
મિસલ દરજ ખાસ કા હોકે પેશ હો—
તારીખ ૨૫ જનવરી સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી
રામપરસાદ વેદા ઝોટૂ મારવાડી રહને વાલા કટૌંજા
પરગના મહોના તહસીલ મલિહાબાદ—
મુદ્દઈ

बनाम

इमामी बेगम छोटे क़ौम हलवाई रहनेवाला कुटौना दूकानदार कुटौना परगना और तहसील मलिहाबाद

मुद्दआलैह

दावा ४५) रुपिया

॥

टिकट चपका है

मैं कि इमामी बेगम छोटे क़ौम हलवाई रहनेवाला और दूकानदार कुटौना परगना महोना तहसील मलिहाबाद का हूं—

जो कि मैं ने सिर पर लिये हुये मुक़द्दमा में पंडित प्राननाथ वकील अदालत को वकील अपना मुक़र्रर करके इक़रार करता हूं और लिखे देता हूं कि जो कुछ पंडित साहिब इस कागज़ लिये हुये मुक़द्दमा में सवाल और जवाब और हर एक सब मुक़द्दमा को अपने आप किये हुये की तरह मंज़ूर और क़बूल होगा इस वास्ते यह सनद वकालतनामा की लिख दी कि सनद हो—

तारीख़ २६ फ़रवरी सन् १८७५ ईसवी

દસ્તખત રૂમામી હલવાઈ ગવાહી રામદીન કારિંદા

પંડિત સંગ્રામલાલ વકીલ મુદઈ

વકાલત નામા
મંજૂર હૈ
૬૦ પંડિત પ્રાન
નાથ વકીલ
અદાલત

ગવાહી સરજૂપરસાદ બેટા
ગંગા પરસાદ રહને વાલા
પત્તિ ની ટોલા

દેખને કે પીછે હુકમ હુઆ મિસિલ મેં શામિલ હોવે

મિસિલ દાખલ કિયે હુવે મુકદ્દમા કી

તારીખ ૩ મિસિલ રૂજુ ડિકરી સાહિબ રુખસદ ૮ મઈ સન ૧૮૭૫ અસિસ્ટન્ટ કમિશ્નર બહાદુર જિલા ઈસવી લખનઊ

મુકદ્દમા દીવાની

નમ્બર મુકદ્દમા	નામ		દાવા	તારીખ સન ૧૮૭૫ ઈસવી	
	મુદ્દઈ	મુદ્દઆલેહ		મુકદ્દમા કે દાયર કરને કી તારીખ	ફૈસલા
૨૮૩	રામ પરસાદ	રૂમામી હલવાઈ	ઇજરાય ડિકરી	૨૪ ફરવરી સન ૧૮૭૫ ઈસવી	૮ મઈ સન ૧૮૭૫ ઈસવી

तादाद कागजों की

नथ्थी १			नथ्थी २		
नम्बर सिलसिलावार	नाम कागज	सफा	नम्बर सिलसिलावार	नाम कागज	सफा
१	फ़ेहरिस्त	एक	१	हुकम रोकने का	एक
२ व ३	अर्जी केवारफ़ हुकम के पत्र व्या समेत	दो		इत्तिलानामा नीलाम समन नीलाम इश्तिहार	३
४	नीलाम डुगना	एक			
५	नक़्शा पटवारी का दाखिल खारिज हल्का	एक			
६ व ७	रिपोर्ट नाज़िर पाँडी के गवाह की रसीद समेत	दो			

दस्तख़त

गामयवसाढ वनाम दूमानी हल्लवाई
वर्णान मुकद्दमा सिने पनकोपनना दुजाणा डिकनीन्तदालाग

नम्बर १९८८

तारीख रुएदाद पेश लगाने की डिक्री की व तारीख इजराय	तादाद रुपया डिक्री	खुलासा हुक्म पहिली तारीख समेत	तारीख अमल हुक्म पेश होने की तारीख समेत	खुलासा हुक्म मौजूदा पेशी की कारवाई की तामील की तारीख समेत	तारीख तामील हुक्म की तारीख समेत	तादाद रुपया डिक्री की मुकद्दमा दाखिल दफ्तर होने के वक्त बाकी रहा
२४ फरवरी सन् १८७५ ईसवी	पूरा	सलिशानसे कैफियतनी नहिंतलब उसेमें पेश होवे २४ फरवरी सन् १८७५ ईसवी	कैफियत पेश हुई तारीख २२ फरवरी सन् १८७५ ईसवी	वारंट कुर्की मुश्ताहिर के उसकी ३ तारीख जारी होवे पहिली मार्च सन् १८७५ ईसवी	जारी हुआ वारंट कुर्की [illegible] सन् १८७५ ईसवी	
इत्तला वास्ते [illegible] नीलाम जारी [illegible] हुआ			इत्तला पेश हुई इत्तला जो कि [illegible] डिक्रीदार को वसूल होगया रसीद दाखिल होगई इसवास्ते कुर्क की [illegible] नीलाम नहीं की गई इसलिये हुक्म हुआ कि मुकद्दमा [illegible] डिक्री की [illegible] होगया तो मुकद्दमा दाखिल दफ्तर होवे तारीख ८ मई सन् १८७५ ईसवी	जिस वक्त पहिले कनी जारी हुई है उसका परवाना दानकशावना [illegible] नीलाम जारी होवे तारीख २१ मार्च सन् १८७५ ईसवी	जारी हुआ २१ मार्च सन् १८७५ ईसवी	
हसनखान हाकिम				इत्तला पेश हुई इत्तला परवाने के देखने से मालूम हुआ कि [illegible] मालिक है [illegible] नीलाम [illegible] नीलाम की नहीं है तारीख [illegible] नीलाम मुल्तवी किया जावे [illegible] सन् १८७५ ईसवी		डिकनीदार ने नीलाम नहीं कराया रसीद दाखिल की ८ मई सन् १८७५ ईसवी—

नम्बर १२९२ नक़शा पुड़ीशल

नम्बर हुकम	तारीख़ हुकम	तफ़सील जवाब हुकम	हुक्म जारी होने की तारीख़ जिस पर हुकम लिखा हो जो पहुँचती	हुक्म नम्बर वापिसी हुकम के जवाब में आया हो
१	२२ जनवरी सन् १८७९ ई.	शनिश्चर ता० मुन्सरमी हुकम हुआ। पंडित श्री मनारीन साहिब व- हाकिम की ख़िदमत में पेश होवे और टिकट ३॥) का चिपका है दस्तख़त हाकिम		१२ जनवरी ८७९
२	२३ फ़रवरी सन् १८७९ ई.	नम्बर २३५ देखने के पीछे हुकम हुआ। रजिस्टर में लिखा जावे और कैफ़ियत सरिश्ता के दिन को अगले में पेश होवे- दस्तख़त हाकिम नम्बर ६३६		१३ मार्च सन् ८७९ ई.
३	२१ मार्च सन् १८७९ ई.	कैफ़ियत देखने के पीछे- हुकम हुआ। वापिस मतिनाई और कुर्की मुताबिक़ नक़्शा दफ़ा ३३४ तारी- ख़ २२ मार्च सन् १८७९ हुई सो वा- पिस भिजवाना चाहिये कि- नम्बर ७४	चार पान वापिस कुर्की के लिखे गए	२४ मार्च सन् ८७९ ई.

नम्बर हुकम	तारीख़ हुकम	नक़ल हुकम	हवाला—जवाबी दीहदसपाकायाज़ा ख़िअपेअन्नासि- लहुकमलि- ख्याहोतोणाज़ू- अतहो	हवाला नमब- अन्नौअना बी- ख्अपोअटजो हुकमकोज- वावमेंन्ना- दाहो
४	२१ मार्च सन १८७५ ईसवी १८ मार्च सन १८७५ ईसवी	नामील के हुक्मने के पीछे हुकम हुआ इधुर गांव का पटवारी वासते धनि ग़ाफ़त नक़शा न्नोअमहूदनवासते देनेनुपि- गिडिकरी दन्नापनैलसन१८७५ ईं०कीबुलाये जावैं न्नोअनीलाम का इश्तिहार एक महीना की मी- गाद पअताणीख़ ७ मई सन १८७५ ईस- वी जारी होवै तलवाना न्नंदार दिनके डिकरीदार से लिया जावे- न्नायपेश हो कार डिकरीदारको न्नावाणहिला दि गई हाज़िर नहीं है हुकम हुआ होनोयाइंतिज़ार किया जावे न्नौअ कलपित्रयेश होवै-इसदपतर हाकिम जोकि डिकरीदार ने तलवाना दाख़ि- ल कर दिया है इसवासते हुकम हुआ	ग़नावन्नाली-डिकरीदार ने तलवाना दाख़िल नहीं किया इसवासते तामील नहीं हुई इसनम्बर १८ में न्ना१ण की है तारीख़ १८ मार्च सन १८७५ ईसवी	इसतख़्तहाकिम
५	२४ मार्च सन १८७५ ईसवी	तारीख़ २१ मार्च सन १८७५ ईसवी की पटवारी न्नोअमहूदनतारीख़ ६ न्नपनैलसन१८७५ ईसवी बुलाये		हिकद२५ ए ख़ुराक पटवारी दाख़ि- ल होवै २४ मा- र्च सन १८७५ ईसवी - नाअनापिनलो हावित एको पअत इश्ता हार नीलाम न्नौअहोपअत समअन न्नौअ इपतेत हुश्तिहार लिखा गया ८६६-

नम्बर मुक़द्दमा	तारीख़ हुक्म	तफ़सील हुक्म नम्बर ४८	हुक्म अदालत अपील जो हुक्म अदालत जिसमें पहला हुक्म बहाल रखा हो जो मंज़ूर हो	हुक्म अदालत की जो अपील पर हुक्म की जो बहाल रखा हो
३	तारीख़ ७ मई सन् १८७४	नं० ४८ जारी होवे इश्तिहार नीलाम मौजा २ कम महीना तारीख़ ३ अप्रैल सन् १८७४ ईसवी जारी होवे - ६० हाकिम ज़िला पेश हुआ मद्दईन को ज़ा ब्ता दिखलाई गई साबित नहीं है दावा गीलाल पटवारी ने ज़ाहि र होकर मातिवत कमील नक़शा दाख़िल कर दिया जो कि हम कान मिल कि तिलफ़ी नहीं है मद्दईन ब लाम कान ही का मालिक है इसवा स्ते नीलाम के नक़शा की तैयारी की ज़रूरत नहीं है और इश्तिहार जारी हो चुका है - हुक्म हुआ तारीख़ ७ मई सन् १८७४ ईसवी हि न शनीज़ इश्तिहार नम्बर का र ने नीलाम की सूरत में किया जावे नाज़िर को इत्तिला दी जावे - दस्तख़त हाकिम		
७	तारीख़ ८ मई सन् १८७४	ज़िला पेश हुआ जो कि कुल रुपि या डिगरी डिक्रीदार को वसूल हो गया और डिगरी दाख़िल हो गई इसवा स्ते जारी दादरसी की कुई नीला म नहीं की गई - हुक्म हुआ मुक़द्दमा कुल रुपिया डिगरी की वासिल [illegible] करने से दाख़िल दफ़्त र होवे - दस्तख़त हाकिम		

नम्बर मुक़द्दमा	
तारीख़ फ़ैसला	२० फ़रवरी सन् १८७५ ई०
नाम फ़रीक़ैन	[illegible]
[illegible]	नहीं हुआ
डिकरी या [illegible]	नहीं हुआ
तादाद रुपिया डिकरी	५४)
तादाद ख़र्चा	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

[illegible]

बयान जो दरख़्वास्त इजराय डिकरी के दूसरी तरफ़ लिख्या जाता है—

मिसिल के देखने से मालूम होता है कि तारीख़ २९ फ़रवरी सन् १८७५ ईसवी को डिकरी ४५) असिल इ॥) ख़र्चा कुल ४९।॥) मुद्दई के हक़ में बनाम मुद्दआअलैह हुई है और दरख़्वास्त पहिली दफ़ा है—

दस्तख़त नोनिहालचन्द महाफ़िज़ दफ़्तर २९ फ़रवरी सन १८७५ ईसवी—	टिकट १) रुपिया का चिपका है

नक़्शा दूकान इस्मी हलवाई रहनेवाला बाज़ार इटौंजा परगना महोना ज़िला लखनऊ

नम्बर मुक़द्दमा	[illegible]	[illegible]	कैफ़ियत
मुक़द्दमा नम्बर ५०७ बयान दूसरी तरफ़ का	इस्मी हलवाई [illegible]	× तारीख़ ६ अप्रैल सन १८७५ ईसवी	यह दूकान मेरी समझ में किसी के पास रेहन और बै नहीं है और तख़्ता इस दूकान का नम्बरदार के क़ब्ज़ा में है रेहन और क़ीमत अमला दूकान लगभग ३५) के होगी और यह दूकान इस्मी हलवाई की बनवाई हुई है और मसकनी वही बताता है दस्तख़त दरबारीलाल तारीख़ ६ अप्रैल सन १८७५ ईसवी

मिसल के साथ पेश होवे—

दस्तख़त हाकिम

पूरब उसी दूकान का दरवाज़ा और रास्ता

क़ीमत लगभग ३५)

पश्चिम दूकान नाऊ

[illegible]

नाम परसाद डिकरीदार डुजलास पंडित शरीमनरायन
एकमटनाल्लसिस्टंट कमिशनर
बहादुर

बनाम पूरा दावा
डुमामी हलवाई मदहून

जनाब ल्लाली

वासते नीलाम डुसमुकद्दमा के नियानसिंघ मजकूरी
मेजा गया था डिकरीदार ने नीलाम नहीं कराया मदहून
से ल्लापसमें रजामंदी होगई ल्लौर ल्लाज मजकूरी के
साथ हाजिर ल्लदालत ल्लाकर रसीद कलमूपियाकीदाखिल
करता है डुसलिये रपोरट हुकम मुनासिव देने के वासते
पेश करता हूं ल्लौर जोकि मजकूरी नीलाम के वासते
मौकापर पहुंच गयी ल्लौर नीलाम मुल्लाफिक चाहने
डिकरीदार के हुल्ला ल्लाने जाने की फीस के वारे में
जैसा हुकम मुनासिव हो- तारीख़ ८ मई सन १८७५ ईसवी
दसतखत वहादुर ल्लली नाजिर-
वीन जोदूसनी तरफलिखाहे
तारीख़ ८ मई सन् १८७५ ईसवी
ल्लाज पेश होकर देखने के पीछे हुकम हुल्ला

हुकम हुल्ला

नाजिर फीस मामूली ल्लाने जाने की डिकरीदार से
वसूल करे क्योंकि डिकरीदार ने ल्लापसमें फैसल्ला
कर लिया है ल्लौर रसीद दाखिल की है-

दस्तख़त हाकिम

(२) डिकरी डिकरीदार से दाखिल करा लिये गये

राम परसाद रहनेवाला

हटौंडा डिकरीदार

नम्बर ७

बनाम

स्वामी हलवाई रहनेवाला हटौंडा

डिकरी पूरा चुकाया।

मैं कि राम परसाद बेटा छोटू राम मारवाड़ी रहनेवाला हटौंडा का हूं —

सिरे पर लिखे हुवे मुकदमे में मुझ को नीलाम कराना दूकान मदयून का जो कि मैंने तारीख़ ७ मई सन् १९७४ ईसवी मुकर्रर कराके दरख़ास्त नीलाम कराई थी मंज़ूर नहीं है क्योंकि मदयून ने मेरा कुल रुपया अदा कर दिया और मेरा देना पूरा कर दिया अब मुझ को कुछ दावा नहीं है इस वास्ते यह रसीद की तरह से पूरा दाखिल अदालत करता हूं—

दस्तख़त राम परसाद   गवाही घीलाराम बलवन्त रहनेवाला नागिरी (?) रामलाल

लिखनेवाला

बल्लभपुर

बयान दूसरी तरफ़ का   तारीख़ ८ मई सन् १९७६ ईसवी

आज राम परसाद डिकरीदार खुद हाज़िर हुआ और

बयान किया कि कौल तुर्फ़ैन। डिकरी का मुद्दई को वसूल होगया। कुछ बाक़ी नहीं रहा है नियान चपरासी नज़ारत ने पहिचान डिकरीदार की की इस वासते

हुकम हुआ।

मुक़द्दमा कौल तुर्फ़ैन। अदा करने से दाख़िल दफ़्तर होवै—

दस्तख़त हाकिम

हुकम इसतिनाय इजराय डिकरी नक़द तुर्फ़ैन। क़रारदाद ग़ैरमनक़ूला मुताबिक़ दफ़ा २३५ ऐक्ट ८ सन् १८७५ ईसवी—

अदालत पंडित श्याम नरायन साहिब ऐकस्टरा असिसटेन्ट कमिशनर बहादुर ज़िला लखनऊ

नम्बर २४४

दस्तख़त हाकिम

मुक़ाम कोठी क़ैसरपसंद

नम्बर मुक़द्दमा २८४

रामपरसाद रहनेवाला मौज़ा इटौंजा परगना महोना
तहसील मलिहाबाद डिकरीदार

बनाम

इमामी हलवाई रहनेवाला ऐज़न - मदयून डिकरी

तादाद तुर्फ़ैन। डिकरी ५१॥) अलावा २॥) ख़र्चा ख़ास

बनाम इमामी बेटा क़ौम हलवाई रहनेवाला इटौंजा मौज़ा तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ

मदईन मुकद्दमा इस हुकम से तुम को इत्तिला दीजाती है कि नीचे लिखी हुई जायदाद को तुम न तो बेचो हिबा करो और किसी तरह किसी को दो और कोई आदमी खरीद करे हिबा करे और किसी तरह से न लेवे क्योंकि यह जायदाद इस हुकम से इस मुकद्दमा में कुर्क की गई है तारीख पहिली मार्च सन् १८७५ ईसवी-

तारीख रवोरजारी करने की ११ मार्च सन् १८७५ ईसवी

जगतनरायन करने वाला

फ़िहरिस्त

इक मदईन बाबत एक दूकान इटौंजा में जिस की चारों हद्दें यह हैं—

हद्द पूरबी दूसी दूकान कादिरवाण

[illegible] | कीमत असामा ४५) रूपिया | [illegible]

पश्चिमी हद्द मिलाहुआ होना नाऊ की दीवार से

जो हद्द इश्तहारनवीस इस हुकमनामा के जारी होने से पहले मुकर्रर वक्त में दाखिल अदालत होना चाहिये-

द० इश्तहारनवीस

५ मार्च सन् १८७५ ईसवी

दुर्गापरसाद जनावल्लाली

दुर्गापरसाद मजकूरी क्या की करने हुकमसाकारसे मैं

वाला आगा हाज़िर अहल आलाकार ने एक परवाना हुक्म
बयान करता है कि मैं डिकरीदार के साथ नामा इत्तिलाई
तारीख़ ८ मई सन् १८७४ ईसवी को वक़्त ८ मार्च सन् १८७४
४ बजे दिन को इटौंजा में पहुंच कर एक ईसवी को मार-
परवाना हुक्म इमामी मदहून को दिया फ़त दुरगा परसाद
और रसीद उसकी दसतख़ती लिया चपरासी के पाि
ली और एक परत कुरक़ी की हुई दूकान दसतख़त इमामी
पर चिपका कर के ढोल बजवा कर हलवाई
पुकरवा दिया और एक परत अदालत गवाही गवाही
के दरवाज़े पर चिपका दिया — हरीपटवारी मेक़ोम
रहनेवाला पासीरहने
धरमपुर वाला इत्तो-
जाचौकीदार

-चूंकि तामील क़ायदे के मुवाफ़िक़ हो गई इसलिये इस
रपोरट को तामील करके मुनासिब हुक्म के वासते पेश करता
हूं और मज़कूरी बयान करता है कि फ़ेहरिसत दूकान
के अमला का साफ़ साफ़ बंद होने दूकान की वजह से न
हो लिखी गई मदहून मोजूद था चूंकि न उसका बेटा
माल की कुरक़ी के ख़याल से दूकान में कुफ़ल लगा कर
कहीं चला गया इत्तिला के वासते अरज़ किया

दसतख़त बहादुर अली नाज़िर
तारीख़ १० मार्च सन् १८७४ ईसवी
सररिशता मुनसरमी दसतख़त हाकिम

હુકમ હુઆ।

રપોર્ટ ઇજલાસ મુરાફ઼આ મેં પેશ હોવૈ

તારીખ઼ ૨૦ માર્ચ સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી

પંડિત શ્રીરામ નરાયન સાહિબ બહાદુર એકસ્ટ્રા અસિસ્
ટંટ બહાદુર જ઼િલા લખનઊ કે હુકમ સે- નમ્બર ૨૩૯

પેશી મુક઼દ્દમા કી

ઇત્તિલા

બનામ ઇમામી હલવાઈ રહનેવાલા ઇટોંજા

રામ પરસાદ રહનેવાલા મૌજ઼ા ઇટોંજા મુદ્દઈ

બનામ

ઇમામી હલવાઈ રહનેવાલા મૌજ઼ા ઇટોંજા પરગના
મહોના તહસીલ મલિહાબાદ- મુદ્દઆઅલૈહ
મુક઼દ્દમા સુનને કી તારીખ઼ ૬ અપ્રૈલ સન્ ૧૮૭૫
ઈસવી મુક઼ર્રર હુઈ હૈ ઇસ વાસ્તે તુમ કો ઇત્તિલા દી
જાતી હૈ કિ તારીખ઼ ૬ અપ્રૈલ કો વક઼્ત ૧૦ બજે ઘંટા અદા-
લત મેં હાજ઼િર આઓ વાસ્તે દરિયાફ઼્ત તજવીજ઼
અદા કરને રૂપિયા ડિકરી કા ૪૨।) તારીખ઼ ૨૪ માર્ચ
સન્ ૧૮ ૭૫ ઈસવી તલબાના વસૂલ હુઆ।
મુવાફ઼િક઼ હુકમ અદાલત મુન સરિમ બયાન
દૂસરી તરફ઼ કાગ઼જ઼ કા।

સરિશ્તા મુન્સરમી જાનીવક઼ાલી

હુકમ હુઆ હૈ મુવાફ઼િક઼ હુકમ હુજ઼ૂર તારીખ઼
રપોર્ટ ઇજલાસ મુરાફ઼આ ૪ અપ્રૈલ સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી

પેશ હોવૈ તારીખ ૮ અપ્રૈલ સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી	વકાલત બવખે દિનકો ઓ કુછ હુકમ નામા મેં લિખા થા ઉસસે ઇત્તિલા દેકર રસીદ ઇત્તિલા પાને કી મુવા- ફિક કાયદા કે કાગઝ કી દૂસરી તરફ લિખવા લિયા - ઇત્તિલા કે વાસ્તે આરઝ કિયા - તારીખ ૭ અપ્રૈલ સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી
દસ્તખત હાકિમ ગવાહી ગવાહી લાલતા બેચૂ પરસાદ કોમ કોમ બનિયાં બિરહમન	દસ્તખત દુરગાપરસાદ ચપરાસી

સમ્મન યા હુકમનામા ગવાહ યા દૂસરે આદમી પર બમૂજિબ દફઆત ૨૪૦ વ ૨૪૯ વ ૨૫૨ વ ૨૫૩ વ ૨૬૫ વ ૨૬૬ વ ૨૧૯ વ ૨૨૬ ઐક્ટ ૮ સન્ ૧૮૫૯ ઈસવી

નમ્બર ૧૨૪

નમ્બર મુકદ્દમા ૨૮૩

અદાલત દીવાની હુઝૂર પંડિત શ્યામનરાયન સાહિબ બહાદુર રજિસ્ટરાર અસિસ્ટંટ કમિશ્નર ઝિલા લખનઊ-

મુકામ-

રામપરસાદ રહનેવાલા કટૌંઆ પરગના મહોના તહસીલ મલિહાબાદ- ડિક્રીદાર

બનામ મદ્યૂન ડિક્રી

જુમામી હલવાઈ રહનેવાલા કટૌંઆ

ધરા ખૂરશ) સિવાય ઇસ્તિહાલ

બનામ પટવારી બેટા કોમ રહનેવાલા મોઝા કટૌંઆ

परगना महोना-

इस मुक़द्दमा में तुम को वास्ते दरियाफ़्त करने पूरे मरातिब नक़्शा नीलाम-

तारीख़ ६ महीना अप्रैल सन् १८७५ ईसवी वक़्त १० बजे इस अदालत से हुक्म दिया जाता है और ।।) बाबत ख़र्चा राह और ख़ूराक के साथ भेजा जाता है-

जज तजवीज़ करने वाला

तारीख़ २५ महीना मार्च सन् १८७५ ईसवी

१- हाज़िरी गवाही देने के वास्ते या-

२- पेशी दस्तावेज़ दिखलाने या-

३- हाज़िरी गवाही देने- और सनद को पेश करने को या-

४- जवाबदिही नालिश बाबत नोकरी हरजरीच

इजराय डिकरी

तम्बीह या चेतना- जो बुलाया हुआ आदमी कोई तरफ़ मुक़द्दमा का या कि सम्मन वास्ते पेशी किसी सनद के बिला हाज़िरी हो तो कोरट में लिखे हुए फ़िकरा को लिखें-

यादृदाश्त- तलबाना इस सम्मन के जारी होने से पहले मियाद मुक़र्रर पर अदालत में दाख़िल होना चाहिये-

।=) जो दूसरी तरफ़ लिखा जाता है

इस्टाम्प ऐक्ट
१८७० ईसवी
दि०

જનાવલ્લાલી

મુતાબિક હુકમ હુજૂર તારીખ ૫ અપ્રૈલ સન્ ૧૮૭૫
ઈસવી રફાત ૭ વળે દિન કો રકો પનાસમમન ખુનાકસમેત
ઇ) દરવાની લાલપટવાની કો દેકર દસ્તાવેજા પાને કી
રસીદ કાગળ કી પીઠ પર દો ગવાહોં કે સામને લિખવા-
લીયા - દસ્તાવેજા કે વાસતે અરજ કિયા -
તારીખ ૭ અપ્રૈલ સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી -
દસ્તખત દુરગા પરસાદ ચપરાસી
૭ સનિ શાના મુનસરમી

હુકમ હુઆ

રપોર્ટ મજકુરી ઇજલાસ મુકદમ મેં પેશ હોવે -
તારીખ ૮ અપ્રૈલ સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી

દસ્તખત હાકિમ

જનાવલ્લાલી

હુકમ સરકાર સે દસ્તાવેજા પાઈ લોન ઇ) વસૂલ પાયા -
દસ્તખત દરવાની લાલ પટવાની
તારીખ ૫ અપ્રૈલ સન્ ૧૮૭૫ ઈસવી
ગવાહી ઠાકુર પરસાદ ગવાહી ગંગા બિરહમન
સોમ બિરહમન
દરખાસ્ત નીલામ દુકાન ડિકરી મુતાબિક દફા ૨૮૬
રેકટ ૮ સન્ ૧૮૫૯ ઈસવી
નમબર મુકદ્દમા ૨૮૩
અદાલત દીવાની ઇજલાસ પંડિત શંભુરામ નાગિન સાહેબ

बहादुर रेकमन्द असिस्टंट कमिश्नर ज़िला लखनऊ

मुकाम

राम परसाद रहनेवाला मौज़ा इटौंजा परगना महोना
तहसील मलिहाबाद डिकरीदार

बनाम

इमामी हलवाई रहनेवाला मौज़ा इटौंजा परगना-
मदयून डिकरी

तादाद रुपिया डिकरी ५१॥) सिवाए खरचा हाल
सबब इजराए डिकरी मुकद्दमा बाबत अदा करने
५१॥) जो डिकरीदार को चाहिये है -

यह इश्तिहार दिया जाता है कि तारीख ७ महीना मई
सन् १८७५ ईसवी वक्त १२ बजे दिन को मुकाम मौज़ा
हक्क मुताबिक इमामी वल्द कौम हलवाई
रहनेवाला इटौंजा परगना तहसील मलिहाबाद ज़िला
लखनऊ

इस मुकद्दमा में जो जायदाद नीचे लिखी हुई है उसका
नीलाम आम मुवाफ़िक हुकम इस अदालत के होगा
तारीख २० महीना मार्च सन् १८७५ ईसवी
जज तहसील करनेवाला

फेहरिस्त

हक्क मुताबिक मदयून बाबत एक दुकान जो इटौंजा में है
जिस की हद्दें नीचे लिखी हैं -

६६

हद्द पूरबी ए दरवाज़ा उसी दूकान का

श्रीमती रामराय ४५) रूपिया

हद्द पश्चिमी ए उसी दूकान की दीवार

हद्द दक्खिनी ए उसी दूकान की दीवार

हद्द उत्तरी ए वही दूकान और रास्ता

यादद्दाश्त तलबाना - तलबाना इस इश्तिहार के जारी होनेसे पहले मियाद मुक़र्रर पर अदालत में दाखिल होना चाहिये - (=)

(जो दूसरी तरफ़ लिखा जाता है)

- जनाब आली

आप के हुक्म के मुवाफ़िक़ तारीख़ ४ अपरैल सन् १८७५ ईसवी को एक परत इश्तिहार ढोल बजाकर मुद्दआ अलैह की दूकान पर और दूसरा परत अदालत के दरवाज़ा पर चिपका दिया और तीसरा परत इश्तिहार का मिसिल में शामिल करके पेश करता है -

तारीख़ ७ अपरैल सन् १८७५ ईसवी -

दस्तख़त दुर्गापरसाद

चपरासी

सरिश्ता मुनसरमी - बूसी वासते

हुक्म हुआ

रपोर्ट मज़कूरी इजलास मुक़र्रर में पेश होवे -

तारीख़ ८ अपरैल सन् १८७५ ईसवी

दस्तख़त हाकिम

मुक़द्दमा फ़ौजदारी पंडित पेमनाथ साहिब तहसीलदार मजिस्ट्रेट दर्जा सालिस के इजलास से फ़ैसल हुआ					
नम्बर मुक़द्दमा	नाम		जुर्म	तारीख़	
	नालिशी	मुलज़िम		रुजू	फ़ैसला
७६	सीताराम बनिया	[illegible]	कुल्ल मुताबिक़ दफ़ा ३५२ ताज़ीरात हिन्द	३० जनवरी सन १८७५ ईसवी	१४ अगस्त सन १८७५ ईसवी

फ़ेहरिस्त काग़ज़ात २० वरक़

(१) नत्थी अव्वल						(२) नत्थी दोम
सिलसिलेवार नम्बर	नाम काग़ज़	वरक़	सिलसिलेवार नम्बर	नाम काग़ज़	फ़ीस	(१) इस नत्थी के काग़ज़ात दफ़्तर में दाख़िल किये जाते हैं
१	फ़र्द फ़ेहरिस्त	१	१ से लेकर ५ तक	समन तलबी मुद्दआअलैहुम	२०॥	
२	फ़र्द हुक्म मुफ़स्सिल	१	६ ७ ८	मुचलका	३ ॥	(२) इसके काग़ज़ात एक मुद्दत मुक़र्रर के पीछे जैसे ३ वा ५ बरस के पीछे ख़ारिज किये जाते हैं
३	नालिशी की अर्ज़ी	१	९ व १०	अर्ज़ी सीताराम समन समेत	२ ॥	
४	गवाहों के मुक़द्दमा	७	११	समन तलबी फ़ालिमसिंघ	१ ॥	
५	फ़ैसला व रूबकार जुर्माना	१	१२	वारंट बनाम मैंडू	१ ॥	
			१३ व १४	मुचलका	२ ॥	
			१५	मुख़्तारनामा	१ ॥	

(॥) टिकट चिपका है — अलहाल फ़ौजदारी सीताराम बेटा जौकिशुन क़ौम बनिया रहने वाला मुंशीगंज क़स्बा मलिहाबाद ज़िला लखनऊ — मुद्दई
अलाल बलसिंघ बेटा लाला व मैडू बेटा नामालूम है

कन्हैई बेटा नामालूम व गुरबख़्श बेटा नामालूम व तिलक बेटा नामालूम क़ौम अहीर रहनेवाले मौज़ा ईसापुर परगना व तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ

मुद्दआअलैहुम

इल्लत — कुल दफ़ा ३५२ और नुक़सान पहुंचाना दफ़ा ३२३ ताज़ीरात हिंद

ग़रीबपरवर सलामत

कल तारीख़ १५ जुलाई सन् १८७५ ईसवी को वक़्त १० बजे दिन के मैं मुद्दई मुक़ाम गुमटी ईसापुर एक तालाब में नहाने लगा और जो कपड़ा अपने पहने था उस मक़ाम पर रख दिया और मुद्दआअलैह नम्बर एक से मुझ मुद्दई ने कह दिया कि मेरे कपड़े रक्खे हैं तुम ज़रा मेरे कपड़े ख़बरदारी से देखते रहना लेकिन उसने अपने जानवरों की निगहबानी न की एक जानवर ने मेरा अंगरखा का दामन चबा डाला तब मैं ने कहा कि बावजूद मेरे कहने के तिस पर भी तूने मेरा नुक़सान करा दिया तिस पर मुद्दआअलैह नम्बर एक ने बहुत तक़रीर किया और सब मुद्दआअलैहुम खेत से दौड़े और सबों ने मिलकर मेरे पट्टे पकड़ कर लातों और घूसों से ख़ूब मारा और मार पीट करके चले गये इसी वास्ते उम्मेदवार हूं कि मुक़द्दमा क़ायम होकर इनसाफ़ किया जावे — और बावजूद मारपीट के फिर मारने को

कहते हैं—

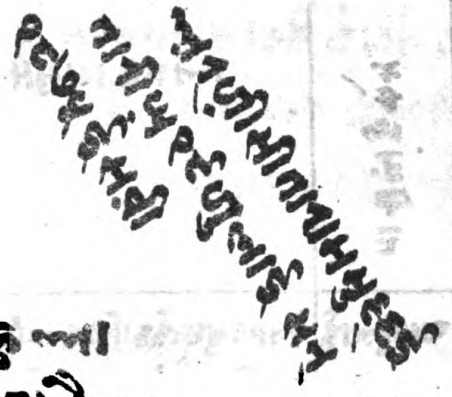

हुक्म हुआ।

पास तहसीलदार के पेश जावै—

तारीख़ २९ जूलाई सन् १८७५ ईसवी—

तारीख़ २२ जूलाई सन् १८७५ ईसवी

आज मुद्दई हाज़िर आया हुक्म हुआ कि तहक़ीक़ात हो—

पेमनाथ तहसीलदार

इज़हार मुद्दई— धरम की तरहपर—

सीताराम बेटा मैकिशुन जात बनियाँ रहने वाला मुंशीगंज उमर २२ बरस पेशा तमोली ने कहा कि हम गुमटी पर नहाते थे आतवल दारहा चराता था हाकाने हमारा अंगरखा चराया मैं ने गिला किया उसने गाली दी और फिर सबने मिलकर खूब मारा इसी वास्ते नालिशी हूं बैरागी और रघुबरी मेरे गवाह हैं जवाब दूंगा— अपने गवाहों को मैं आप लाऊंगा— दसख़त सीताराम

द० पेमनाथ तहसीलदार

तसदीक़ के पीछे हुक्म हुआ कि मुद्दआलैहुम सममन जारी होकर तलब हों— तारीख़ ३० जुलाई सन् १८७५ ई०

सममन लिख्खा गया गुलाम रसूल को मोहर्रिर तहसील शाहाबाद— २४ जुलाई सन् १८७५ ई०

नम्बरसिलसिला	तारीख़ हुक्म	हुक्म मअ मुख़्तसर मिसिल	[illegible]	[illegible]
१	२४ जुलाई सन् १८७५ ईसवी	आज मुद्दई हाज़िर आया हुक्म हुआ कि तहक़ीक़ात होकर हाज़िर लिखाने और जांच के पीछे हुक्म हुआ कि मुद्दआ अलैहुम सम्मन जारी करके बुलाये जावें -	मुद्दई की अर्ज़ी की पेशी पर लिखा गया।	जवाब अर्ज़ी सम्मन की तामील मुक़द्दमे की पेशी सके ता २६ जुलाई सन् १८७५ ईसवी
२	दस्तख़त पेमनाथ तहसीलदार	तारीख़ ३ जुलाई सन् १८७५ ईसवी		
३	१० जुलाई सन् १८७५ ई०	जांच के पीछे हुक्म हुआ कि मुद्दआ अलैह हाज़िर से मुचलका ज़मानत दिया का लेकर तारीख़ पेशी आइंदा की हिदायत दी जावे और अपने गवाहों को हमराह हाज़िर लावें और सम्मन जारी सिंध के नाम जारी होवें और मुद्दई गैरहाज़िर के नाम वारंट गिरफ़्तारी जारी किया जावे मुद्दई का बयान है -	देखान	जवाब मुद्दआ अलैहुम हाज़िर मुचलका लिया और सम्मन की तामील हुई तहसील - मिल हुआ ३ अगस्त सन् १८७५ ईसवी
४	३ अगस्त सन् १८७५ ईसवी	आज पेश हुआ कल तातील थी हुक्म हुआ कि जो लोग हाज़िर हैं उनके इज़्हार लिये जावें -		
५	दस्तख़त पेमनाथ तहसीलदार रेवान पेमनाथ तहसीलदार	जांच के पीछे मुद्दआ अलैहुम ने लाला किशनचन्द को अपना मुख़्तार मुक़र्रर करके मुख़्तारनामा दाख़िल किया गवाहों का बयान मुद्दआ अलैहुम के सामने जांच नहीं हुई है और न मुद्दआ अलैहुम के गवाहों में से कोई हाज़िर है और न कोई नहीं और न सिवाय गवाह सफ़ाई के रहने वाले के नहीं आये जिनके नाम सम्मन जारी हुआ है सो हुक्म हुआ कि मुक़द्दमा २४ के दिन पेश होवे मुद्दआ अलैहुम जिन गवाहों के नाम सम्मन जारी कराये उनके नाम सम्मन तारीख़ मुक़र्रर पर लिखे हुए के जारी हो और मुद्दई के नाम हिदायत हो कि अपने गवाह		जवाब मुद्दआ अलैहुम हाज़िर

नम्बर हुक्म	तारीख हुक्म	अहकाम मुफस्सिल	[illegible]	[illegible]
६	२८ अगस्त सन १८७५ ईसवी पेश नाजिम तहसीलदार	जो हाकिम लाजिम और मुचलका रुपया रुपया वसूली की बाबत दोनों मुद्दई और [illegible] हुक्म से लिया जावे - वसूली के लिये और दाखिल के पीछे मेद्दई छोड़ दिया जाय और गुजरबसर और तिसका और कान ही और दाखिल सिंघ पर दो दो रुपये जुरमाना किया जावे नाजिम वसूल करे - लगान न देतो वारंट वसूल जुरमाना जारी होवे जो जुरमाना वसूल न हो तो पंद्रह पंद्रह दिन के दसवें तक कैद और जिन जुमला कुल के रुपया बाबत बदले अयान मुद्दई मुद्दई के तरफ जमा करावे। मुद्दई मालगुजारी के पीछे दाखिल दफ्तर होवे -		जनाब मालिक मुचलका लिया गया [illegible] सन १८७५ ईसवी गुजारी लगान हाकिम
नम्बर [illegible]	[illegible]	हुसलत का गवाही कुई मुद्दई पुलिस मुताबिक दफा जामीन और तामील वारंट दाखिल वनानी अमले मुद्दई की अदालत में	साबित होने जुरम दफा ३४२ ता जीनात हिंद	
[illegible]	सीताराम महत न [illegible] ४२ मेडई ३ कर्मचंद ४ गुजरबसर ५	सब मुताबिक दफा ३४२ और नुकसान पहुंचाना मुताबिक दफा ३२३ दस्तखत पेशनाजिम तहसीलदार	साबित होने जुरम दफा ३४२ ताजीरात हिंद पर गुजरबसर और जामिन और कानून और तिलक मुचलका लेकर पर दो दो रुपये जुरमाना हुकम मेद्दई छोड़ दिया गया -	

तारीख़ २० जुलाई सन १८७५ ईसवी

मुद्दई और तीन आदमी मुद्दआ अलैहुम हाज़िर
मिले अदालत का सम्मन लौट आया कि कोई
नहीं है और मेड़ई के सम्मन की तामील हो गई
मगर वह नहीं आया सो हुक्म हुआ कि इज़हार
मुद्दई लिया जावे और गवाहों के भी इज़हार
लिये जावें—

दस्तख़त प्रेमनाथ तहसीलदार

बाक़ी इज़हार मुद्दई बरसम की रहबर

मुद्दई ने कहा कि अदालत कोई मुद्दआ अलैह
नहीं है उसका नाम ज़ालिम अहीर था वह दो
कोस पर रहता है मगर उसका नाम क्या मालूम
है कि क्या है न उसके बाप का नाम जानते हैं और
मेड़ई के बाप का नाम भी हम नहीं जानते हैं—

दस्तख़त प्रेमनाथ तहसीलदार

मुद्दई के गवाहों का इज़हार बरसम की रहबर
बैरागी बेटा अमृती जात बनियां रहने वाला
मलिहाबाद उमर ३२ बरस पेशा दद्दू लादना
ने कहा कि हम ख़ाली दद्दू अपना मलिहा-
बाद से इसटेशन को लिये जाते थे गोमती के
किनारे ईसापूर की ज़मीन में अपनी आंख से
देखा कि मुद्दई का पट्टा रह आदमी पकड़े था
और रह इशारा गुरबख़्श मुद्दआ अलैह की तरफ़
करके बतलाया फिर हमारे पास से मेड़ई दौड़ा उसने
घूंसा मारा फिर पांचों ने लपट कर किसी ने थप्पड़

किसी ने घूंसा मारा मैं यह नहीं बतलाऊं कि किसने अप-
राधा किस ने घूंसा मारा मैं ज़रा पल्ले पर था मगर
ज़रूर पांचों ने मिलकर खूब मारा हम जाते तो हमको
भी मारते हम तो बनिया हैं वहां पर गये थे नहीं अपने
से अपने चले गये गवाह ने सुना और कहा कि ठीक है

दस्तख़त प्रेमनाथ तहसीलदार

मुद्दई के गवाहों का इज़हार बरम की ताइद पर

गंगू बेटा हिम्मत ख़ान मुक़ाम रहनेवाला मलिहाबाद
उमर २२ बरस पेशा दल्लाल ने कहा कि हम दल्-
लाह हुए अपने इस्टेशन से आते थे चार आदमी
मुद्दई को निकारी के लात घूंसा जूता थप्पर से मार
रहे थे मैंने अपनी आंख से देखा है बलकि इस शख़्स
को बख़ूबी पहिचान लिया था कि यह गुरबख़श पकड़ा
पकड़े हुए था बाक़ी तो तीन आदमी घूंसा मारते ही थे यह
तीनों गुरबख़श समेत हाज़िर हैं बाक़ी दो आदमी नहीं आये
हैं उनमें से एक आदमी था जिसके हाथ में चांदी के कड़े पड़े
थे मैं वहां नहीं गया था दिन के साढ़े सात बजे थे बैसाख का दिन
था आज सोलह दिन हुए। गवाह ने सुनकर कहा कि यही है

दस्तख़त प्रेमनाथ तहसीलदार

जवाब मुद्दआ अलैह

गुरबख़श बेटा मुलहूराम अहीर रहने वाला ईसापूर
उमर २७ बरस पेशा ज़मींदारी ने कहा कि मैंने कुछ नहीं
कहा है कि हम पंदरहवीं तारीख़ बैसाख के दिन मौज़ा सुंदारा
में सुबह के वक़्त पांच सात आदमी लेकर निकालने
गया था शाम तक वहां रहा नरपति सिंह ठाकुर और हि-

यूं पढ़ान गवाह है मैंने मुद्दई को नहीं मारा है बयान जो
कि आदमी पकड़ा गया है उसका ठीक ठीक लिख्या है और
उसको सुना दिया गया—

दस्तख़त प्रेमनाथ तहसीलदार

जवाब मुद्दआअलेह—

तिलक बेटा भवानी जात अहीर रहनेवाला ईसापूर
उमर ३० बरस पेशा काश्तकारी ने कहा कि मैं मंगल के
दिन गढ़ी बुधाना के बाज़ार में बैल खरीदने गया था सूरज
को लौट आया और यह मुद्दई वगैरह के दिन की बातचीत
बताते हैं हम तो उस दिन घर पर ही न थे मारा किसने हम
कुछ नहीं जानते हैं बयान तरजुमा बरदार न मदीन
मसाह है मुद्दआअलेह को सुना दिया गया और उसका बीन
सही लिख्या है—

दस्तख़त प्रेमनाथ तहसीलदार

जवाब मुद्दआअलेह

कन्हई बेटा बलदी जात अहीर रहनेवाला ईसापूर
उमर ३५ बरस पेशा नम्बरदारी ने कहा कि एक मुकद्दमा
हमारा तहसील में बनाम मेहर्ई बेटा बाबू के पेश था उस
की पेशी के वास्ते ८ बजे मैं घर से चला और ९ बजे
मिरजागंज में पहुंचा और मेरे साथ बख़्तावर बल्दू
व निहालचंद पटवारी भी थे रामप्रसाद साहु के
मकान में ठहरे फिर कचहरी में आये शाम को घर आये
मारपीट का हाल हम नहीं जानते हैं न हमने सारा मुद्द-
आअलेह कुल बयान इसमें ठीक २ लिख्या है और उसको
सुना दिया गया— द० प्रेमनाथ तहसीलदार

जांच के पीछे हुकम हुआ कि मुद्दआअलैहुम हाज़िर से मुचलका २५) २५) रुपिया का लेकर अगली पेशी की तारीख़ की हिदायत दी जावे और अपने गवाहों को रू-आप हाज़िर लावें और सम्मन ज़ालिमसिंह के नाम जारी हो और मेड़ई गैर हाज़िर के नाम सम्मन वारंट गिरफ़्तारी जारी किया जावे मुद्दई जाकर निशानदेह मुक़द्दमा ई अगस्त को पेश होवे –

दस्तख़त पेमनाथ तहसीलदार

तारीख़ ७ अगस्त सन १८७४ ईसवी –

आज पेश हुआ कल तातील थी हुकम हुआ कि जो लोग हाज़िर हैं उनके इज़हार लिये जावें –

पेमनाथ तहसीलदार

जवाब मुद्दआअलैह –

ज़ालिमसिंह बेटा देवीसिंह ज़ात अहीर रहने वाला ईसा-पुर उमर २० बरस पेशा खेती ने कहा कि हमने नहीं मारा न हम जानते हैं कि कहां लड़ी हुआ न हम वहां थे के दिन गोपुर जाते थे न सुखलाल को मुद्दई को देखा न हमने और किसी को मारते देखा था भवानी बेटा गंगा वहीं राला लाला ग्वाह हैं तमाम वारंट गिरफ़्तारी आदमी का कसमें ठीक व लिखा है और उसको सुना दिया गया।

द० पेमनाथ तहसीलदार

जवाब मुद्दआअलैह –

मेड़ई बेटा नान्हू ज़ात अहीर रहने वाला ईसापुर और लखनऊ का भी उमर ३० बरस पेशा खेती ने कहा कि हमको कुछ हाल मालूम नहीं है मही आप से ...

में थे हमने किसी को नहीं मारा है। भवानी बेटा नामालूम और साहिबदीन गवाह हैं तमाम बयान मुद्दई का इस में ठीक ठीक लिखा है और उसको सुना दिया गया—

दस्तखत प्रेमनाथ नायब तहसीलदार

जांच के पीछे मुद्दआ अलैह ने लाला लछमन प्रसाद को अपना मुख्तार मुकर्रर करके मुख्तारनामा दाखिल किया जो कि बयान मुद्दई के गवाहों का सामने इन मुद्दआ-अलैहुम के जांच नहीं हुआ है और मुद्दआ अलैहुम के सब गवाहों में से कोई हाजिर है और कोई नहीं और बाज़ गवाह लश्कर जी के रहने वाले हैं जिनके नाम सम्मन जारी होना चाहिये सो हुक्म हुआ कि मुकद्दमा २४ को पेश होवे सम्मन गवाहों के नाम जिनके नाम मुद्दआ अलैहुम जारी करने पर लिखी हुई तारीख मुकर्रर करके जारी हों और मुद्दई को समझा दिया जावे कि अपने गवाह भी उसी दिन हाजिर लावें ७ अगस्त सन् १८७५ ईसवी और मुचलका २५) २५) रुपिया का बाबत इन दोनों मुद्दआ अलैहुम के भी ले लिया जावे—

दस्तखत पंडित प्रेमनाथ तहसीलदार

तारीख २४ महीना अगस्त सन् १८७५ ईसवी—

आज पेश हुआ मुद्दई और मुद्दआ अलैह दोनों हाजिर आये और दोनों के गवाह भी मौजूद हुक्म हुआ कि बयान लिये जावें—

दस्तखत प्रेमनाथ तहसीलदार

इसके पीछे मुद्दआ अलैहुम ने पंडित प्राननाथ वकील को भी अपना मुख्तार मुकर्रर किया और कहा कि

गवाह मुद्दई के मौजूद हैं उन का इज़हार उन मुद्दआ अलैहुम
के सामने उनके वकीलों के जिन्होंने नहीं सुना था
सुनाया गया उन्होंने दरख़्वास्त की कि हम कुछ
सवाल करेंगे सो वह सवाल नीचे सिरे से जारी मंज़ूर करें—

दस्तख़त पेमनाथ तहसीलदार

पूरा बयान गंगू गवाह मुद्दई सवाल अदालत की तरफ़ से
आप पहिचानो कि वह कौन मुद्दआ अलैह—
जवाब—गवाह ने ज़ालिमसिंह की तरफ़ इशारा करके
बतलाया कि यही आदमी था—सवाल अदालत की
तरफ़ से—कि तुम ने पहले चार आदमी लिखाये हैं और
मुद्दई का दावा पांच आदमियों पर है तो चार थे या पांच
थे और जो चार थे तो इन पांचों में से पहिचान करके
बतलाओ कि कौन कौन था और कौन कौन नहीं था—
जवाब—हमने पहले भी चार पांच आदमी लिखाये
हैं इन पांचों में से जो इस वक़्त खड़े हैं चार आदमियों
के बाबत बतलाया कि पहले से मारपीट में शरीक थे—
ज़ालिम गुरबख़्श मेंडई तिलक और कनपई
पांचों आदमियों के बाबत बतलाया कि यह पीछे से
दौड़ता आता था—सवाल कनपई ने भी मारा था—
जवाब—हां मारा था—सवाल मुद्दआ अलैहुम के
वकील से—कि मारपीट के वक़्त तुम पहले से वहां
मौजूद थे—या पीछे को पहुंचे और यह मारपीट देखी—
जवाब—मैं राह राह जाता था और यह मारपीट रहे थे
पहले से वहां मौजूद न था मगर मैं वहां खड़ा नहीं रहा
मैंने कुछ नहीं कहा तीन कसी के फ़ासले से देखा कि

था इस स्टेशन से आगे कुछ बाईं तरफ़ को राह में यह
वारदात हुई थी और किसी को मैं ने वहां नहीं देखा
अन्दाज़न दो घड़ी दिन चढ़ा था - सवाल - वकील
से कि तुम ने अव्वल इज़हार पर दारोग़ा डाके जो बा
किया था और वह मुक़द्दमा न करने की वजह से
ख़ारिज हुआ उस में यह मुद्दई तुम्हारा गवाह था
जवाब - मैं ने आप ही दावा किया था उस में मुद्दई को
गवाह दिया था मगर थाने के मुनशी ने उस की गवाही
नामंज़ूर की और चालान मुक़द्दमा का नहीं किया
मेड़ई के हाथ में बांधी थी और ज़ालिम के हाथ में
लाठी थी और सब ख़ाली हाथ थे गवाह ने सुन कर
कहा ठीक है -

दस्तख़त प्रेमनाथ तहसीलदार

मुद्दई के बैरागी गवाह का पूरा बयान बनाम की राह पर -
सवाल - वकील से मुद्दा अलैहुम कि जिस वक़्त
तुम्हारे सामने मुद्दई को मुद्दा अलैहुम मारते थे
उस वक़्त गंगू वहां पर था - जवाब - हां राह राह जाता
था - सवाल उसी से - के आदमी मारते थे - जवाब -
पांच आदमी मारते थे - हम सड़क पर खड़े रहे हम से
गंगू से साहिब सलामत हुई थी - सवाल रस्सी या
लाठी किसी के हाथ में थी या नहीं - जवाब - रस्सी
वग़ैरा तो हम ने दूर होने की वजह से नहीं देखा मगर
एक आदमी के हाथ में लाठी थी अन्दाज़न आधा
घंटा मैं खड़ा रहा मगर कोई घड़ी घंटा तो वहां पास
न था - सवाल उस से पहले से मार हो रही थी

गा तुम्हारे सामने मार शुरू हुई - जवाब जब हम गोमती की सड़क पर पहुंचे तब देखा कि वहां पर मार पीट हो रही है - पहले मैं इसी तरफ़ से जाता था और और गंगू उसी तरफ़ से आता था फिर जब सीता राम लड़ाई रफ़ा होजाने के पीछे आन पर जाने की नीयत से थाने की तरफ़ लौटा तो हम भी इस राह चले गये फिर गंगू से हमसे मुलाक़ात हुई क्योंकि वह इस पार था उधर उधर वह भी आया। गवाह ने सुन कर कहा कि ठीक है -

द० पेमनाथ तहसीलदार

ज़ालिम मुद्दआअलैह नम्बर १ के गवाह का बयान धरम की राह पर -

हीरा लाल बेटा सीतल ज़ात अहीर रहने वाला ईसा-पुर उमर ३० बरस पेशा खेती ने कहा कि हम और ज़ालिम और भवानी तीनों आदमी का नौखलान में बीच के दिन सुबह को सूरज उगने गये थे - और दो पहर को लौट आये दो घड़ी दो पहर पर और गई होगी हम ने मार पीट का हाल कुछ नहीं सुना सूरज निकलने के पहले गया था हम से मुद्दआअलैह से कुछ नातेदारी नहीं है हम ने कुछ सुना ही नहीं गवाह ने सुन कर कहा कि ठीक है -

दस्तख़त पेमनाथ तहसीलदार

बयान गवाह मुद्दआअलैह नम्बर २

ज़ालिम सिंह धरम की राह पर

भवानी बेटा गंगा ज़ात अहीर रहने वाला ईसापुर

उमर ३० बरस पेशा खेती ने कहा कि बीपै के दिन गवाह
हम हम और हीरालाल जालिम सिंध का खेत
जोतने गये थे और दोपहर पर दोवणे आदि थे जाव
से जोतने लगे तब से जबतक लोट आये हमारे पास
से जालिम जुदा नहीं हुआ और वह जरूर नहीं गया है
सवाल-जब थाना का सिपाही देह में आया तब वहीं जालिम
ने कहा था कि वह हरहा चराता है बुला लाओ और
एक आदमी बुलाने गया था तुम कमीखानह में खिलाफ
लिखाते हो कि वह हरहा नहीं चराता है - जवाब- तुम
गलत कहते हो कि वह हरहा नहीं चराता है जो अमीर
हो तो हम गुनहगार गवाह ने सुनकर कहा कि ठीक है-

दस्तखत पेमनाथ तहसीलदार

बीरान गवाह मुद्दआलह ने नम्बर २
कनपुर्द देवरम की राहपर

साहिबदीन बेटा सुकुल जात अहीर रहने वाला लखनऊ
उमर ३५ बरस पेशा मजदूरी ने कहा कि एक महीने से
मेड्डू लखनऊ में रहता है और अपने घर की नगमसात
वगैरः करता है और उसकी गांव में रहती है बाप
उसका गांव में नहीं रहता है वह लखनऊ में रहता है
और हम लड़ाई भिड़ाई का हाल नहीं जानते हैं
गवाह ने सुनकर कहा कि ठीक है-

दस्तखत पेमनाथ तहसीलदार

बीरान मुद्दआलह नम्बर दो मेड्डू के गवाह का
मवानी बेटा हरी जात अहीर रहने वाला लखनऊ
उमर ४० बरस पेशा बागवानी ने कहा कि साहिब आदि

के रह गये थे तब से हम लखनऊ में मेड़ई मुद्दआलैह को देखते हैं गुड़िये के दिन एक दिन गांव में आये थे जब रूबकारी हुई थी लड़ाई का हाल हम नहीं जानते हैं गवाह ने सुनकर कहा कि ठीक है—

दस्तख़त पेमनाथ तहसीलदार

कन्हई मुद्दआलैह नम्बर ३ के गवाह का इज़हार धरम की राह पर—

बख़तावर बेटा मुरली जात अहीर रहनेवाला ईसापुर उमर ४५ बरस पेशा ज़मींदारी ने बयान किया कि हमारा मुक़द्दमा तहसील में २४ तारीख़ को पेश था हम आठ बजे दिन को गये जिस वक़्त लखनऊ से हरदोई को रेल जाती है— बदलू व कन्हई व निहालचंद पटवारी के समेत मलिहाबाद तहसील को आते थे हमने मार कूट कुछ नहीं देखा हमने सीताराम को राह में देखा न गुमटी के वहां कोई था न कुछ हाल सुना और हम सुबह के वक़्त अपने घर बैठे थे देखा कि तिलक कपड़ा और रुपिया लिये हुये जाते थे पूछा कि कहां जाते हो जवाब दिया कि बैल ख़रीदने जाते हैं और दिन मंगल का था पांचवें दिन लौट आया गवाह ने सुनकर कहा कि ठीक है—

दस्तख़त पेमनाथ तहसीलदार

बयान गवाह मुद्दआलैह नम्बर ३ कन्हई धरम की राह पर—

रामप्रसाद बेटा फ़तेचंद बनियां रहनेवाला मिरज़ागंज

उमर ४५ बरस पेशा महाजनी कहा कि बख़्तावर और बहलू और कन्हई बीफ़ै के दिन नौ दस बजे हमारे यहां आये और छुन्नी और लाठी धरकर पानी पीकर और तहसील में जाने को हमसे कहा मिरज़ागंज से ईसानगर सवा कोस होगा कुछ हाल लड़ाई बीगा का हम को नहीं मालूम है गवाह ने सुनकर कहा कि ठीक है—

दस्तख़त प्रेमनाथ तहसीलदार

बयान गवाह मुद्दआलैह नम्बर ४ गुरबख़्श बेराम की तहरीर—

हिदायत ख़ां बेटा छेदी ख़ां ज़ात पठान रहनेवाला सुंदरवा उमर ४५ बरस पेशा खेती ने कहा कि गुरबख़्श और हम बीफ़े के दिन अपना अपना खेत कि बराबर है निराते थे सुबह से शाम तक मार कुटाई का हाल हमने कुछ नहीं सुना थोड़ी देर के वास्ते भी वह हमारे पास से जुदा नहीं हुए थे गवाह ने सुनकर कहा कि ठीक है—

दस्तख़त प्रेमनाथ तहसीलदार

दूसरा गवाह मुद्दआलैह नम्बर ५ तिलक बेराम की तहरीर—

रामदीन बेटा हींगा ज़ात अहीर रहनेवाला ईसापुर उमर ३० बरस पेशा खेती ने कहा कि हम गढ़ी के बाज़ार को मंगल के दिन भूसा बेचने गये थे तिलक हमारे साथ गया था पांचवें दिन लौट आये हम को कुछ हाल लड़ाई का नहीं मालूम है और तिलक बैल लेने गया था गवाह ने सुनकर

कहा कि ठीक है—

इस्तग़ासा पेमनाथ तहसीलदार

तारीख़ २४ अगस्त सन् १८७५ ईसवी—

मुद्दई ने बयान किया कि मैं दरदू लिये जाता था गोमती के वहां पर रहता ज़ालिम हरहा चराता था उसके एक हरहा ने मेरा कपड़ा चबा लिया मैंने पूछा कि यह किसका है पर उसने गाली दी और फिर सब मुद्दआ अलैहुम ने जमा होकर मुझे लात घूंसों से ख़ूब मारा मुद्दआ अलैहुम पांच आदमी थे सब ने मार पीट से बिलकुल इनकार किया एक गुनबख़्श कहता है कि मैं सन्धोना गया था दूसरा तिलक कहता है कि मैं बाज़ार गढ़ी और थाने में गया था तीसरा करनहई कहता है कि मैं मिरज़ागंज का चेहली तहसील में आया था चौथा भेड़ई कहता है कि हम लखनऊ में अरसा से रहते हैं पांचवां ज़ालिम कहता है कि हम कुछ नहीं जानते हैं न हमने मारा है जैसे मुद्दई कहता है उसी तरह पर उसके सब गवाह हलफ़ पर बयान करते हैं और मुद्दआ अलैहुम के गवाह उनके मुवाफ़िक़ नहीं पाये जाते तो मुद्दई ज़रूर मारा गया है पहले तो उसका कपड़ा साफ़ देखने से चबाया हुआ मालूम होता है जो बुनियाद फ़साद है दूसरे मुद्दई ग़रीब आदमी है क़ौम का बनिया रोज़गार पेशा है जिस को कोई फ़ाइदा न था कि वह बेसबब नालिश करके हाज़िर रहना अदालत के दरवाज़ा पर और खैंचा खैंची बेफ़ाइदा गवारा करता तीसरे मुद्दआ अलैहुम मअ गवाहों के

ज़मींदार और नम्बरदार हैं और ज़ोर रखते हैं यक़ीन के
लायक़ है कि एक रोज़ ज़रा बात पर मुद्दई को बेकस जान
कर मारा हो मुद्दआअलैहुम ने पहले नामों के बदली और
एक जगह पर हाज़िर होने में उज़्र [illegible] को
दोनों आदमियों ने मुक़द्दमा की पैरवी के लिये वकील
किये वकीलों ने क़ानून की राह पर गवाहों से बहुत तरह के
सवाल किये लेकिन अदालत के नज़दीक मार पीट साबित
है और अदालत अच्छी तरह से जानती है कि मुद्दई
ज़रूर मारा गया है क्या अजब है कि यह भी जिसका मौजूद
होना लखनऊ में लिखा गया है शामिल हो — सो हुक्म
हुआ कि मेंडई मुक़द्दमा से बरी किया जावे रघुवरप्रथ
तिलक कन्हई ज़ालिम पर दो दो रुपिया जुरमाना किया जावे
नाज़िर वसूल करे जो नहीं तो वारंट वसूल पुलिस के नाम
जारी होवे जो वसूल न हो तो पंद्रह पंद्रह दिन कठिन
क़ैद रक्खे जावें और इसमें से ३) रुपिया बाबत ख़र्चा
मुक़द्दमा मुद्दई को मुक़र्रर वक़्त पर मिलेगा मुक़द्दमा
तारीख़ के पीछे दाख़िल दफ़्तर होवे —
तारीख़ २४ अगस्त सन् १८७५ ईसवी —

दस्तख़त हाकिम

तारीख			पादशाही रसूल जुरमाना		कैफियत
			तारीख	रसूल	
१४ ज्यानासा- सन्	गुलबरग	३)	१४ ज्यानासा- सातसन् ...	३)	
〃	...	३)		३)	
〃	कनोई	३)		३)	...पंडित
〃	तिलक	३)		३)	...दाग
		६)	...	६)	

... ...

...

...

𑂮𑂧𑂹𑂧𑂢 𑂧𑂳𑂠𑂹𑂠𑂃𑂪𑂵𑂯 𑂍𑂵 𑂢𑂰𑂧 𑂣𑂩 —

𑂠𑂤𑂺𑂰 १५२

𑂊𑂍𑂹𑂗 १० 𑂮𑂢𑂹 १८७२ 𑂆𑂮𑂫𑂲

𑂮𑂲𑂞𑂰𑂩𑂰𑂧 𑂥𑂵𑂗𑂰 𑂔𑂶𑂍𑂱𑂬𑂳𑂢 𑂍𑂺𑂸𑂧 𑂥𑂢𑂱𑂨𑂰𑂁 𑂩𑂯𑂢𑂵𑂫𑂰𑂪𑂰 𑂧𑂳𑂢𑂹𑂬𑂲𑂏𑂁𑂔
𑂧𑂳𑂠𑂹𑂠𑂆

𑂥𑂢𑂰𑂧 𑂃𑂞𑂥𑂪𑂮𑂱𑂁𑂐

𑂃𑂞𑂥𑂪𑂮𑂱𑂁𑂐 𑂥𑂵𑂗𑂰 𑂪𑂰𑂪𑂰 𑂍𑂺𑂸𑂧 𑂃𑂯𑂲𑂩 𑂩𑂯𑂢𑂵𑂫𑂰𑂪𑂰 𑂆𑂮𑂰𑂣𑂳𑂩
𑂧𑂳𑂠𑂹𑂠𑂃𑂪𑂵𑂯𑂳𑂧

𑂧𑂳𑂫𑂰𑂤𑂺𑂱𑂍𑂺 𑂠𑂤𑂺𑂰 ३५२ 𑂌𑂩 ३२३ 𑂧𑂔𑂧𑂴𑂃 𑂞𑂰𑂔𑂺𑂲𑂩𑂰𑂞 𑂯𑂱𑂁𑂠 𑂔𑂷 𑂍𑂱 𑂯𑂰𑂔𑂺𑂱𑂩 𑂄𑂢𑂰 𑂞𑂳𑂧𑂹𑂯𑂰𑂩𑂰 𑂫𑂰𑂮𑂹𑂞𑂵 𑂔𑂫𑂰𑂥𑂠𑂱𑂯𑂲 𑂢𑂰𑂪𑂱𑂬 𑂍𑂵 𑂍𑂱 𑂔𑂷 𑂞𑂳𑂧𑂢𑂵 २५ 𑂔𑂳𑂪𑂰𑂆 𑂮𑂢𑂹 १८७५ 𑂆𑂮𑂫𑂲 𑂍𑂷 𑂧𑂰𑂩𑂣𑂲𑂗 𑂍𑂲 𑂯𑂶 𑂍𑂱 𑂔𑂱𑂮 𑂔𑂳𑂩𑂧 𑂍𑂲 𑂞𑂰𑂩𑂲𑂤𑂺 𑂠𑂤𑂺𑂰 ३५२ 𑂌𑂩 ३२३ 𑂞𑂰𑂔𑂺𑂲𑂩𑂰𑂞 𑂯𑂱𑂁𑂠 𑂧𑂵𑂁 𑂪𑂱𑂎𑂲 𑂯𑂶 𑂔𑂺𑂩𑂴𑂩 𑂯𑂳𑂍𑂧 𑂠𑂱𑂨𑂰 𑂔𑂰𑂞𑂰 𑂯𑂶 𑂍𑂱 𑂞𑂳𑂧 𑂞𑂰𑂩𑂲𑂎𑂺 ३ 𑂔𑂳𑂪𑂰𑂆 𑂮𑂢𑂹 १८७५ 𑂆𑂮𑂫𑂲 𑂍𑂷 —
𑂧𑂳𑂍𑂺𑂰𑂧 𑂞𑂯𑂮𑂲𑂪 𑂧𑂪𑂱𑂯𑂰𑂥𑂰𑂠 𑂧𑂵𑂁 — 𑂯𑂧𑂰𑂩𑂵 𑂅𑂔𑂪𑂰𑂮 𑂧𑂵𑂁 𑂯𑂰𑂔𑂺𑂱𑂩 𑂯𑂷 𑂞𑂰𑂍𑂲𑂠 𑂔𑂰𑂢𑂷 —

𑂠𑂮𑂹𑂞𑂎𑂺𑂞	𑂣𑂁𑂙𑂱𑂞 𑂣𑂵𑂧𑂢𑂰𑂟
𑂋𑂯𑂠𑂰	𑂞𑂯𑂮𑂲𑂪𑂠𑂰𑂩 𑂮𑂰𑂯𑂱𑂥
𑂅𑂎𑂺𑂹𑂞𑂱𑂨𑂰𑂩𑂰𑂞	𑂧𑂔𑂱𑂮𑂹𑂗𑂹𑂩𑂵𑂗 𑂠𑂩𑂔𑂰 𑂠𑂴𑂮𑂩𑂵
𑂧𑂳𑂍𑂺𑂰𑂧	𑂞𑂯𑂮𑂲𑂪 𑂧𑂪𑂱𑂯𑂰𑂥𑂰𑂠
𑂞𑂰𑂩𑂲𑂎𑂺	२४ 𑂔𑂳𑂪𑂰𑂆 𑂮𑂢𑂹 १८७५ 𑂆𑂮𑂫𑂲

(जो कागज़ की दूसरी तरफ़
लिखा जाता है)

जनावन्नाली

मारफ़त हेवीडीन कानिसटेबिल के तामील करके रसीद
हज़ूर में भेजता हूं तारीख़ २६ जूलाई सन १८७५ ईसवी-

२ सम्मन बनाम मुद्दआअलेह-
कन्हैई बेटा नामालूम
क़ौम अहीर रहनेवाला
ईसापूर मुद्दआअलेह-

३ सम्मन बनाम मुद्दआअलेह-
तिलक बेटा नामालूम क़ौम
अहीर रहनेवाला ईसा-
पूर मुद्दआअलेह-

४ सम्मन बनाम मुद्दआअलेह-
गुरबख़्श बेटा नामालूम
क़ौम अहीर रहनेवाला
ईसापूर मुद्दआअलेह

५ सम्मन बनाम मुद्दआअलेह-
भेड़ई बेटा नामालूम क़ौम
अहीर रहनेवाला ईसापूर
मुद्दआअलेह-

६ सम्मन बनाम मुद्दआअलेह-
आतावलसिंघ बेटा लाला

ख़ोम म्हाही१ रहने वाला
ईसापूर मुद्दआल्लेह -

७ सम्मन बनाम मुद्दआल्लेह

ग़ालिमसिंघबेटानामालूम
ख़ोम म्हाही१ रहनेवाला
ईसापूर मुद्दआल्लेह

मुचलका वासते हाज़िरी मुद्दआल्लेह -
मैं कि तिलक बेटा भवानी म्हाही१ रहनेवाला ईसापूर का हूं -
इक़रार करता हूं कि मुक़द्दमा सीताराम मुद्दई किल्दार तहसील मलिहाबाद में २६ अगस्त सन् १८७५
ईसवी को वक़्त १० दस बजे दिन को हाज़िर होकर उस
वक़्त और उसी कचेहरी में मुक़द्दमा मज़कूर दफ़ा
रूरह और रूपए का हिसाब लेकेमैं निसबत मुद्दई सीता
राम के हाज़िर तहसील हूंगा जो हाज़िर न हूं तो रुपए और
जो हाज़िरी की सूरत में इक़रार करता हूं कि रुपए वतौर
सरकार में दाखिल करूं - लिखा तारीख़ २०पूलाई सन्
१८७५ ईसवी -

दसख़त तिलक म्हाही१ -

गवाही भवानीदीन गवाही जगन्नाथ कायस्थ

३ मुचलका वासते हाज़िरी मुद्दआल्लेह गुनवन्तसिंघ
बेटा लाला ख़ोम म्हाही१ रहनेवाला ईसापूर -

३ मुचलका वासते हाज़िरी मुद्दआल्लेह को पेश
बेटा बलदीसिंघ म्हाही१ रहनेवाला ईसापूर -

૪ મુચલકા વાસતે હાજિની મુદદઆઅલેહ ગાલિમસિંધ વેટા દેવી કૌમ આહીર રહનેવાલા ઈસાપૂર–

૫ મુચલકા વાસતે હાજિની મુદદઆઅલેહ મેડઈ વેટા નાનકૂ કૌમ આહીર રહનેવાલા ઈસાપૂર–

મુદદઈ

સીતારામ વેટા ઝૌકિશુન	બુલાયા ગિયા હે કિ નામીલ
કૌમ વનિયા રહનેવાલા	સમમન કી આતવલસિંધ
મુનશીગંજ પરગાના અૌર	કે નામ ચાહિયે મેરા નામ
તહસીલ મલિહાવાદ જિલા	સીતારામ હે સમમન જૌ ઇ
લખનઊ	લકી જરૂર ઉમેદવાર હૂં કિ
મુદદઆઅલેહ–	યેહ સમમન આતવલ કો
આતવલસિંધ વેટા લાલા	દિયા જાવે–
કૌમ આહીર રહનેવાલા મૌજા	
ઈસાપૂર પરગાના મલિહાવાદ	

ફૂલલાલ માનધીટ

ગરીબપરવર સલામત ‌ જનાબ આલી ઊપર લિખે હુયે મુકદદમા મેં સમમન આતવલસિંધ કૌમ આહીર રહનેવાલા ઈસાપૂર પરગાના મલિહાવાદ જારી કિયા હે મગર સિપાહી મુઝ કો વિલા વજહ દેખા દિયા અૌર મેરા નામ સીતારામ હે મુઝ સવાલ દેને વાલે કો સમમન ચાહિયે જવ કિ મૈં ને દરિયાફત કિયા સમમન આતવલસિંધ કા હે તો મુઝસે ક્યા વાસતા ઇસ લિયે ઉમેદવાર હૂં કિ સમમન મુઝસે વાપસ હોકર માનફત સિપાહી નામીલ આતવલ

સિંધ કે નામ હો જાવે ઔર મેરા નામ સીતારામ હૈ—

વાજિબ થા અરજ કિયા

વકીલ મુન્નાલાલતાપ્રસાદ

અરજી લિખને વાલા

અરજી સીતારામ મહંત
સાખી સોનાઈ સાધુ
પરગના મલિહાબાદ
મહીના જુલાઈ
સન ૧૮૭૫
ઈસ્વી

વારંટ ગિરફતારી—

ઇજલાસ પંડિત પ્રેમનાથ સાહિબ તહસીલ-
દાર મજિસ્ટ્રેટ દરજા દોમ તહસીલ
મલિહાબાદ જિલા લખનઊ—

અફસર પુલિસ થાના મલિહાબાદ

જો કિ મેડૂઈ બેટા નામાલૂમ કૌમ અહીર રહને વાલા ઈસા
પૂર થાના મલિહાબાદ ઔર મારપીટ જુર્મ દફા ૩૨૩ ઔર
૩૫૨ તાજીરાત હિંદ જવાબ માંગા જાતા હૈ ઔર જુર્મ
કા બીના દફા ૩૨૩ ઔર ૩૫૨ તાજીરાત હિંદ મેં લિખ્યા હૈ
ઇસ વાસતે તુમ કો હુકમ દિયા જાતા હૈ કિ મુદ્દઆ અલૈહ
મેડૂઈ કો ગિરફતાર કરકે હમારે સામને હાજિર લાઓ
ઇસ બાત મેં તાકીદ જાનો—

હુકમ

જો મુદ્દઆ અલૈહ મેડૂઈ ખુદ મુચલકા ઔર જમાનત
૫૦) રૂપિયા કી દાખિલ કરે ઔર જમાનત મોતબર
૫૦) રૂપિયા— કી તારીખ ૬ અગસ્ત સન ૧૮૭૫
ઈસવી કો હમારે પાસ હાજિર હોને કે વાસતે દેવૈ તો
ઇસકો છોડ દેના વાસતે હૈ- લિખ્યા ૩૦ જુલાઈ સન ૧૮૭૫ ઈ૦

(जो काग़ज़ की दूसरी तरफ़ लिखा जाता है)

पूरवसिंघ और मरदानी परसाद —

कानिस्टेबिल तामील इस वारंट की करै —

४ अगस्त सन् १८७४ ईसवी

दसतख़त हरदयाल

जनाब आली —

मारफ़त पूरवसिंघ और मरदानी परसाद कानिस्टेबिल के इस वारंट की तामील कराई गई तो लौटकर बयान किया कि मौज़ा ईसापुर में इस मुद्दालैह को जो इस वारंट में लिखा है तलाश किया तो नहीं मिला फ़ौजा उसकी घर में मौजूद पाई गई यह कहती है कि आठ दिन से घर में नहीं आया है कहीं को चला गया है इस वास्ते इस वारंट को इस रपोट के साथ बिला तामील रवाना तहसील मलिहाबाद किया —

तारीख़ ६ अगस्त सन् १८७४ ईसवी —

दसतख़त हरदयाल

सीताराम रहनेवाला मलिहाबाद — मुद्दई

बनाम

१ कंधई बेटा बलदी २ गुरबख़श और तिलक और ३ कंधई और ४ ज़ालिम रहनेवाले मलिहाबाद

मुद्दआलेहुम

इज़हार मारपीट

मैं कि कन्हई बेटा बलदी ज़मींदार मौज़ा ईसापुर

पआना और तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ
का हूं जो कि मैंने अपने लिये हुये मुक़द्दमा में पंडित प
गननाथ साहिब वकील अदालत को वकील अपना
मुक़र्रर करके इक़रार करता हूं और लिखे देता हूं
कि जो कुछ पंडित साहिब मुक़द्दमा में सवाल और
जवाब और दौड़ धूप करैं वह सब मुझ को ख़ास अपने
किये हुये की तरह से क़बूल व मनज़ूर होगा इस वासते
यह वकालत नामा लिख दिया कि सनद हो—
तारीख़ १२ अगस्त सन १८७५ ईसवी—

दसतख़त   गवाही सरूपपरसाद वैद
                              गंगापरसाद बक़लम ख़ुद

गवाही अल्लाबख़्श
ज़मींदार मलिहाबाद
बक़लम ख़ुद

(जो कारवाई की इस तरफ़ लिखा जाता है)

वकालत नामा मंज़ूर है

तारीख़ २२ अगस्त सन १८७५ ईसवी—

इति